CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ

कर्तव्य बोध

(नित्य कर्म का संक्षिप्त वर्णन)

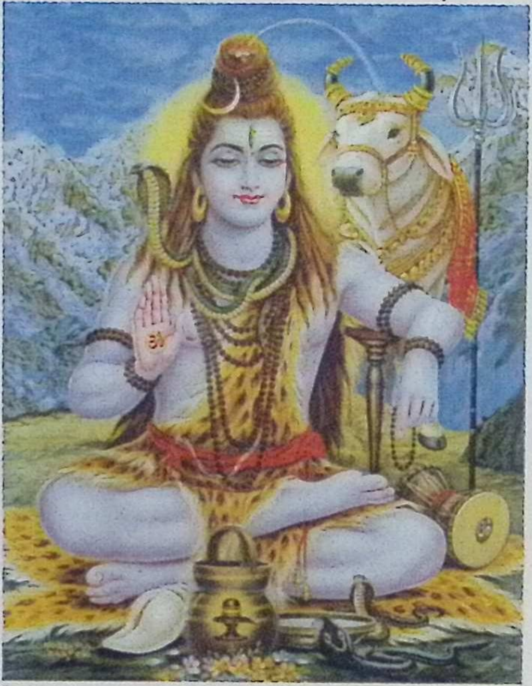

लेखक :- म. मं. स्वामी श्री दयानन्द वेदपाठी

वेदाश्रम चांदोद (गुजरात)
विश्व भारती वेदाश्रम, मानस मन्दिर, नई दिल्ली.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः

पूज्य स्वामी दयानन्द वेदपाठी जी महाराज

के

धार्मिक व आध्यात्मिक प्रवचनों में प्रतिदिन बोली जानेवाली-

प्रभु प्रार्थना

ऐसी मति दो भगवन् ? तब मोक्षधाम पाऊँ ।
देहात्म ज्ञान बुद्धि, मनसे तुम्हें हि ध्याऊँ ।। टे ।।

नहि धर्म-कर्म निष्ठा, योगादि ज्ञान मुझ में ।
प्रभु दिव्य भक्ति दे दो, तब मोक्षधाम पाऊँ ।। १ ।।

नहि तेज वायु भूमि, आकाश नीर भुझ में ।
आनन्द रूप बनके, तब मोक्षधाम पाऊँ ।। २ ।।

तुम नित्य शुद्ध व्यापक, अविनाशि आश पूरक ।
आशा यही है मेरी, तब मोक्षधाम पाऊँ ।। ३ ।।

नहिं ज्ञान तुल्य कोई, वस्तु पवित्र जग में ।
वेदों का ज्ञान पा के, तब मोक्षधाम पाऊँ ।। ४ ।।

आनन्द मूल जिलका, गुण पत्र तत्त्व शाखा ।
वेदान्त पुष्प ले के, तब मोक्षधाम पाऊँ ।। ५ ।।

"दयानन्द" मोक्ष फलके, तरु को न त्याग देना ।
हरि पूर्ण ब्रह्म भजके, तब मोक्षधाम पाऊँ ।। ६ ।।

रचयिता - स्वामी दयानन्द वेदपाठी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

कर्तव्य बोध

(नित्य कर्म का संक्षिप्त वर्णन)

जिसमें -

प्रातः काल उठकर रात्रि में शयन करने तक पूरे दिन, वर्ष एवं जीवन भर करने योग्य दैनिक कर्म, स्नान, सन्ध्या, जप, पञ्चायतन देव पूजन, होम-हवन, वैश्वदेव, पञ्चमहायज्ञ सब देवों की आरती, स्तुति-पाठ प्रार्थनाएँ आदि नित्य कर्मों का संक्षिप्त विवेचन है ।

लेखक- सम्पादक -

वेदाचार्य अनन्तश्री स्वामी दयानन्द वेदपाठी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेखक - सम्पादक
महामण्डलेश्वर 108 श्री स्वामी दयानन्द वेदपाठीजी महाराज
वेदाश्रम चांदोद (गुजरात)

प्रकाशक :
वेदाश्रम चांदोद (गुजरात)

प्रथम-आवृत्ति - 2000 प्रत
वसन्त पञ्चमी बुधवार सम्वत् 2031 दि. 18 जनवरी 1983
द्वितीय आवृत्ति 2000 प्रत
संशोधित परिवर्धित द्वितीय आवृत्ति
विजया दशमी
आश्विन शुक्ल 10 शुक्रवार दिनांक 26/10 /2001

न्योछावर : 50/- रुपये

मिलने का पता : वेदाश्रम चांदोद
दीपक निवास - किल्ला पारडी,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वितीय आवृत्तिकी भूमिका

मङ्गलाचरण

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम् ।
पूजा ते विविधोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ॥
संचारस्तु पदोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो ! तवाराधनम् ॥

अर्थ-हे शम्भो ! हे महादेव ! मेरी आत्मा आप हैं, यानी आपसे मैं पृथक नहीं हूँ विशुद्ध-शान्त बुद्धि गिरिजा पार्वती देवी हैं । मेरे प्राण साथमें रहने वाले नन्दी आदि गण हैं । यह शरीर शिव-मन्दिर है । विविध शब्दादि विषयोंका सेवन करना आपकी पावन पूजा है । मेरी निद्रा ही समाधि अवस्था है । पाँवोंसे घूमना-फिरना आपकी प्रदक्षिणा है । और तमाम वाणियाँ आपको प्रसन्न करने वाले सुन्दर स्तोत्र हैं । इस प्रकार मैं जो भी कर्म करता हूँ यह सब आप शुद्ध ब्रह्मरुवरुप सदा शिव परमात्माकी एक मात्र आराधना - उपासना ही है ।

प्रिय पाठकवृन्द ! आप प्रेय तथा श्रेयके पात्र हैं। धन्य हैं; नित्यकर्म भक्ति - उपासना एवं तत्त्वज्ञान के क्रम समुच्चय वाला यह लघुग्रन्थ मैंने सम्वत् २०३९ में लिखा था । विश्वाधीश-विश्वेश्वर भगवान शिवकी कृपा से उसी समय नई दिल्ली के उपनगर करोलबाग में हमारे " विश्वभारती वेदाश्रम ट्रस्ट भवन" में मानस मन्दिर का नव निर्माण हुआ । उसमें विशाल पञ्चदेव पञ्चमहायज्ञ एवं प्रतिष्ठायज्ञ के साथ भक्ति-वेदान्त सम्मेलन - भण्डारा तथा विशाल शोभायात्रा के साथ अपार जन समूह के सहयोगसे मूर्धन्य वेदाचार्य विद्वानों के द्वारा वसन्त पंचमी सोमवार दिनांक ९-२-८१ के शुभ मुहूर्त में मन्दिर में भव्य एवं दिव्य देव - मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा हुई । उसके बाद दिल्ली के प्रेमी भक्तों के प्रेमाग्रह से मूर्तियों के अर्चन - पूजन,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आरती, स्तुति, पाठ-प्रार्थना आदि से सम्बन्धित यह ''कर्तव्य बोध'' नामक पुस्तक भगवान शिव के कृपा प्रसाद से नर्मदातट चांदोद वेदाश्रम के पावन एवं शान्त वातावरण में लिखी गई। इसकी प्रथम आवृत्ति का प्रकाशन कार्य नई दिल्ली में अपने मन्दिर के प्रेमी भक्तों द्वारा १९ जनवरी सन १९८३ में हुआ था। पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। इसके द्वितीय प्रकाशन के लिये भक्तों का बहुत ही आग्रह रहा है। वर्षों से पुस्तक अप्राप्य थी। भक्तों के विशेष आग्रह पर ही ''कर्तव्य बोध'' की यह द्वितीय आवृत्ति आपके हाथों में समर्पित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है।

इस पुस्तक के प्रकाशन का सारा व्यय वेदाश्रम चांदोद से स्वामी भक्ति पुरीजी ने किया है एतदर्थ इन्हें हार्दिक शुभाशीर्वाद है ये ऐसे ऐसे ग्रंथों के प्रकाशन आदिका शुभ कार्य करते ही रहें। यह शुभ कामना है। इस पुस्तक की छपाइ सफाई एवँ शुद्धता के लिये तथा छपवाने की व्यवस्था एवम् शुद्धि प्रूफ आदि कार्य के लिये हमारे प्रिय श्री राजुभाई नवीनभाई जोशी बड़ौदा वालोंको हम शुभाशीर्वाद दिये बिना नहीं रह सकते। क्योंकि इनके प्रयास के बिना पुस्तक का छपना असंभव था मंगलमय शिव परमात्मा इन्हें धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगतिशील करें। सुखी एवं समुद्ध करें। सभी सहयोगी भक्तों के लिये शुभ कामना है।

स्वच्छ एवं शुद्ध छपाई हो इसका पूरा ध्यान रखने पर भी कोई अशुद्धि रह गई हो तो विवेकी पाठक शुद्ध करके पढें एवं स्वकर्तव्यपालन पूर्वक स्वधर्म कर्मानुष्ठान के द्वारा आत्मानन्द प्राप्त करें। यही प्रार्थना है।

विज्ञेषु किं बहुना।

विजया दशमी — स्वामी दयानन्द वेदपाठी

दि. २८/१०/२००१ — वेदाश्रम - चांदोद (गुजरात)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम आवृत्ति

सम्पादकीय

श्री रामचरण - द्वन्द्वमद्वन्द्वानन्द - साधनम् ।
नमामि यद्रजोयोगात् पाषाणोऽपि सुखं गतः ॥

मानवीय ध्येय, लक्ष्य विशेष-परम आनन्द की अनुभूति है इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिए मानव अनादिकाल से प्रयत्नशील है सृष्टि के आरम्भ से प्रवृत्ति-धर्म तथा निवृत्ति-धर्म इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए चला आ रहा है इन दोनों का संचालन ऋषि-महर्षियों ने किया है । तपःपूत महर्षियों ने कर्म एवं ज्ञान का क्रम-समन्वय करके बल एवं ओज का सम्पादन करके राष्ट्र का निर्माण किया । विश्व-कल्याण की कामना से महात्माओं ने त्यागपूर्वक आत्मरक्षा का दायित्व स्वीकार करके 'परोपकाराय सतां विभूतयः' का आदर्श स्थापित किया । 'सन्त विटप सरिता गिरि धरनी । पर हित हेतु सबन्हि की करनी के अनुसार विद्वान् पंण्डितों एवं महान् ज्ञानी आचार्यों तथा महापुरुषों, महात्माओं ने अनेक शास्त्र-उपशास्त्रों का निर्माण किया । व्यवहार तथा परमार्थ का ज्ञान समाज को कराया । आज भी यह कार्य वर्तमान के महापुरुष कर ही रहे हैं । प्राचीन ग्रन्थों से सभी धर्म कर्मों का ज्ञान समुचित रूप से प्राप्त होता है, ध्येय की सिद्धि भी होती है । तथापि वह बहुज्ञ व्यक्तियों द्वारा अतिपरिश्रम करने पर सिद्ध हो सकता है । हम लोगों के प्रार्थना करने पर सामान्य लोगों के हितार्थ 'श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ वेदाचार्य अनन्तश्री स्वामी दयानन्द जी महाराज' ने बड़े परिश्रम से अति सरल भाषा में सर्व बोधगम्य 'कर्तव्य बोध' ग्रन्थ लिखकर समाज का बड़ा उपकार किया है, जो सर्वजनोपयोगी है । ऐहिक, पारलौकिक एवं पारमार्थिक लक्ष्य की सिद्धि के लिए शास्त्रसम्मत यह ग्रन्थ-रत्न जनता को उपहार देकर हम संतुष्ट हो रहे हैं । पूज्य स्वामी जी ने इस ग्रन्थ का सम्पादन कार्य मुझे सौंपकर मुझे गौरव प्रदान किया है, मैं आपका आभारी हूँ । ऐसी सेवा का कार्य हमेशा प्रदान करते रहें , यही श्री चरणों में प्रार्थना है ।

- गणेश द्विवेदी शास्त्री
नई दिल्ली

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

जीवन सफल बनाओ

लेखक - श्री महन्त स्वामीभक्ति पुरीजी

तस्मै श्री गुरवे नमः

ॐ नमः प्रणवार्थाय शुद्धज्ञानैकमूर्तये ।
निर्मलाय प्रशान्ताय दक्षिणामूर्तये नमः ॥

अर्थ - प्रणव ओंकार के वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थरूप शुद्ध ज्ञानस्वरूप, निर्मल, प्रशान्त, निर्विकार तथा जिज्ञासुओं को तत्त्वज्ञानका उपदेश करने में तत्पर दक्षिणामूर्ति भगवान श्री शिवको नमस्कार हो ।

बन्धुओ ! मानव जीवनका ध्येय-ज्ञेय-प्राप्तव्यपद एकमात्र सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म ही है । उपनिषदों में ब्रह्मको भूमा कहा है जो सुख रूप है इससे भिन्न सब अल्प-दुःख एवं मर्त्य है, विनाशि है । अतएव मिथ्या संसार के विषय-पदार्थ- प्राणियों की आसक्ति का परित्याग करके नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वभाव सच्चिदानन्द परिपूर्ण ब्रह्मकी प्राप्ति के लिये ही प्रयत्न-पुरुषार्थ करना चाहिये । मानवके मन में मल-विक्षेप एवं आवरण ये तीन दोष रहते हैं इनके रहते मानव को सुख शान्ति जीवन्मुक्ति एवं विदेह कैवल्य प्राप्त नहीं हो सकता अतएव चारों वेद इन तीनों दोषों के परिहार के लिये निष्काम कर्म -योगाभ्यास भगवद्भक्ति एवं आत्मज्ञानका उपदेश करते हैं । पहले कर्म के द्वारा मनके मैल को धोडालने का उपदेश देकर योगनिष्ठा ध्यानी भक्ति के द्वारा मनकी चंचलताकी निवृत्ति करके सन्त-सद्गुरु महापुरुषों से आत्मज्ञान सम्पादन करके पहले जीवन्मुक्ति प्राप्तकरें, बाद में विदेह कैवल्य प्राप्त करके जीवन सफल बनावें ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
भूमिका	०१	यज्ञोपवीत	५८
गुरु महिमा	१२	यज्ञोपवीत धारण	५९
किंचित् परिचय	१४	माला-दीप मंत्र	६०
सेतु-साम-गानम्	१८	जप के प्रकार-सन्ध्या	६१
मंगलाचरणम्	२१	सन्ध्या का अर्थ	६२
आवश्यक निवेदन	२६	सूतक में सन्ध्या	७६
गुरु वन्दना	२७	सन्ध्या न करने से दोष	७७
पंचदेव स्थापना प्रकार कोष्टक	२८	पंचायतन देव पूजा	७८
देव मूर्ति	३१	स्वस्ति वाचन	७९
किस देव को क्या चढ़ायें	३१	संकल्प	८०
किस देव को क्या न चढ़ायें	३२	कलश-स्थापन	८२
विशेष आध्यात्मिक पुष्प	३३	दीप, शंख, घण्टा पूजन	८२
कुशा-तुलसी	३६	गणपति स्मरण	८३
मौन-पादुका त्याग शिवदर्शन	३७	श्री गणपति ध्यानम्	८४
शान्ति पाठ	३८	श्री देवी, विष्णुध्यानम्	८५
आचार्य परम्परा	४३	श्री सूर्यध्यानम्	८६
अनध्याय मंगलपाठ	४५	शिव ध्यानम्	८६
नित्य कर्म	४६	पंचायतन देव आवाहनम्	८७
प्रातः स्मरण स्तोत्रम्	५०	मन्त्र-पुष्पाञ्जलि	१००
मलमूत्र त्याग,	५१	आरती रहस्य	१०३
दन्त धावन	५२	आरती शिव आरती	१०५
तेल की मालिश	५३	श्री विश्वनाथ जी की आरती	१०६
संकल्प का विधान	५३	ओंमकार रूप शिव आरती	१०८
घर में नित्य स्नान विधि	५३	विश्वेश्वर शिव आरती	११०
तीर्थ में स्नान विधि	५५	शिव स्तुति	१११
स्नानाङ्ग तर्पण	५५	गणेश जी की आरती	११४
आसन	५६	गणेशाथर्वशीर्षम्	११५
शिखा, तिलक, भस्म	५७	ब्रह्म स्वरुप गणेश जी को नमस्कार	११६

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय	पृष्ठ
श्री अम्बा दुर्गा जी की आरती	११७
अम्बा भवानी की स्तुति	११८
नव दुर्गा	१२०
महाकाली पूजन, महालक्ष्मी पूजन	१२३
श्री सूक्त	१२४
श्री सरस्वती जी की आरती	१२६
महासरस्वती, कुमारी पूजन	१२७
कुमारी आरती, पुस्तक पूजन	१२८
जगदीश्वर की आरती	१२९
सत्यनारायण भगवान की आरती	१३०
युगल किशोर आरती	१३१
रामचन्द्र की आरती	१३१
हरिहर को भज	१३२
रामरक्षा स्तोत्रम्	१३३
राम स्तुति	१४४
रामावतार	१४४
हनुमान चालीसा	१४६
हनुमान आरती	१४८
हनुमान स्तवन	१४८
गोविन्द दामोदर स्तोत्रम्	१५०
श्री कृष्णा व श्री सूर्य को नमस्कार	१५१
द्वादश नमस्कार	१५२
गुरुदेव की आरती	१५३
वासुदेव वन्दन	१५३
विद्यातीर्थ महादेव / दत्तात्रेय को नमस्कार	१५५
पीपल, पूजन, तुलसीवन्दन	१५५
गो पूजन	१५६
गंगा पूजन, शंख जल से मार्जन	१५७

विषय	पृष्ठ
नैवेद्य, ब्राह्मण प्रार्थना	१५८
दीपावली पूजन	१५९
कुबेर-शीतला पूजन	१६०
नवग्रह पूजन	१६१
पंच महायज्ञ	१६५
बलि वैश्वदेव	१६५
हवन विधि	१६८
स्तुति प्रार्थना	१८४
भोजन	१८८
कुछ बोध वचन	१९१
सत्य सनातन धर्म	१९२
सज्जनो का स्वभाव	१९४
शयन	१९५
अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्	१९६
अथ तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम्	१९८
कर्म	२०१
पार्थिव-लिङ्ग पूजन	२०३
शिव पंचाक्षर स्तोत्रम्	२०५
श्री नर्मदाष्टकम्	२०७
श्री शिव महिम्नः स्तोत्रम्	२११
श्री शिव नामावली	२४१
शिव नाम संकीर्तन	२४२
श्री शिव मानस पूजा	२४२
नाम संकीर्तनम्	२४४
राम कृष्ण शिव वन्दनम्	२४४
श्री जगदम्बा कीर्तन अन्नपूर्णा स्तुति	२४६
स्वामी भक्तिपुरी जी के विचार	२४७
गीता सुधारस पान	२४८
नित्य प्रार्थना	२५२

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

भूमिका

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः ।
श्री वेदपुरुषाय नमः श्री गुरवे नमः ॥

हरिःओम् तत्सत् शिवः सर्वं सर्वत्र । शुभं भूयात् ॥
श्री शंकरः शं करोतु ॥

दुःख बहुल इस संसार में सुख कहाँ है ? क्या कोई प्राणी सम्पूर्ण सुख का अनुभव करता है ? 'मुझे पूणे सुख प्राप्त हो एक रत्ती मात्र भी दुःख मुझे प्राप्त न हो' ऐसी इच्छा या आशा प्राणी मात्र को होती है परन्तु इस विश्व में देखा इससे विपरीत ही जाता है । इच्छित सुख न जाने कहाँ जाकर छिप जाता है और अन इच्छित दुःख न जाने कहाँ से आ पहुँचता है । संसार के सभी मानव अत्यन्त उत्साह के साथ दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति तथा निरतिशय सुख की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील देखे जाते हैं परन्तु यह प्रयत्न भी विफल यानी विपरीत फल ही देता हुआ दीखता है । प्राणियों के दुःखों का अभाव और सुख का लाभ होता नहीं दीखता । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ लोग विदेश गमन करते हैं कुछ लोग व्यापार, नौकरी या अन्य उद्योग, मजदूरी, कारीगरी या नेतागीरी आदि करते हैं परन्तु फिर भी दुःख उनका पीछा नहीं छोड़ता और सुख उनके सामने तक नहीं देखता । लोग समझते हैं कि धन सुख को देने वाला है दुःख का नाश करने वाला है परन्तु इस दुनियाँ में कितने धनवान् सुखी हैं ? देखिए नीतिकार क्या कहते हैं ।

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे ।
नाशे दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थान्कष्ट-संश्रयात् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धन के कमाने में दु:ख होता है तथा कमाये हुए धन की रक्षा में भी दु:ख होता है धन के नाश में दु:ख, खर्च होने में दु:ख, इस प्रकार धन दु:ख का आश्रय यानी दु:ख स्थान वाला है। धन है तो भी दु:ख और नहीं है तो भी दु:ख। निर्धन मनुष्य अन्न-वस्त्र से मुहुँताज रहते हैं उन्हें उचित खान-पान एवं रहन-सहन या मान-पान उपलब्ध नहीं होता। नित्य पीड़ित रहते हैं। अविश्वसनीय एवं उपेक्षित रहते हैं। इसके विपरीत धनवान् मानव को अच्छा खान-पान, मान मिलता है परन्तु वह रोगी है। चोर, डाकुओं से पीड़ित है, राजदंड या बाह्य अथवा आंतरिक शत्रूओं से आतंकित है। धनी हो या निर्धन सबके जीवन में क्षुधा, तृष्णा, रोग, जरा, काम, क्रोध, शोक, मोह आदि दोष किसी न किसी अंश में होते ही हैं तथा इन दोषों के साथ मृत्यु का ताण्डवनृत्य भी तो सबके जीवन को अन्धकारमय बनाता ही है अत: मानव जो धन के पीछे अनेक अन्यायपूर्ण कार्य करता है हिंसा चोरी, डकैती करता है तथा लांचरुश्वत (रिश्वत) आदि लेता है भ्रष्ट आचरण करता है तो क्या उसे उस अनीति से कमाये हुए धन से सुख प्राप्त होता है ? आज संसार का मानव धन के लोभ के कारण दानव बना हुआ है। पुराणों में हिरण्याक्ष की कथा आती है वर्तमान का मानव 'हिरण्याक्ष' ही है 'हिरण्य' यानी सोना-अक्ष यानी नेत्र अर्थात् जिसको सर्वत्र सुवर्ण ही दीखता हो जो सुवर्ण को खोजकर उसे पाना चाहता हो न्याय से, अन्याय से, चोरी से, रिश्वत से या किसी भी प्रकार के भ्रष्ट आचरण से सुवर्ण मिले, धन मिले ऐसा कार्य करने में जिसको संकोच न हो उसे 'हिरण्याक्ष' कहते हैं। ऐसे हिरण्याक्षों को क्या कभी सुख मिला है ? यदि नहीं, तो फिर क्या आगे कभी सुख मिल सकता है ? धन के पीछे कितनी मार काट हुई ? कितनों को जहर दिया गया ? फिर भी यह धन किसी का हुआ ? इसने किसी को सुख दिया ? इसका उत्तर होगा 'नहीं'। तो फिर सिद्ध हो गया कि 'जो लोग धन कमाकर धन के प्रभाव से सब दु:ख हटाकर पूर्ण सुख पाना चाहते हैं वे भ्रान्त हैं।

कुछ लोग माता-पिता, पुत्र-पत्नी, एवं भाई इष्ट-मित्र सगे सम्बन्धियों के द्वारा अपना समस्त दु:ख दूर करके पूर्णतया सुखी होना चाहते हैं, यह भी भ्रान्ति एवं अति दु:खद है। 'प्राचीन काल में पारिवारिक जीवन में कुछ आश्वासन-शान्ति एवं विषय जन्य सुख की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक झलक मिलती थी परन्तु वर्तमान में पारिवारिक जीवन व्यतीत करने की परम्परा नष्ट प्रायः हो गई प्रत्येक घर में राजकारण घुस गया है अतः पारिवारिक स्नेहसौजन्य समाप्त हो गया है । पुत्र-पत्नी आदि के साथ या पिता-पुत्र या भाई-भाई के साथ विसंवाद यानी विवाद, द्वेष, कलह आदि हो रहा है तथा अन्य मनुष्यों के साथ या सम्बन्धियों के साथ स्पर्धा-असूया आदि के कारण सुख न मिलकर दुःख ही प्राप्त हो रहा है तथा अन्य मनुष्यों के साथ या सम्बन्धियों के साथ स्पर्धा-असूया आदि के कारण सुख न मिलकर दुःख ही प्राप्त हो रहा है । सबके शिर पर धन व पद का मद चढ़ा हुआ है पक्षापक्ष का झगड़ा दिन दूना व रात चौगुना बढ़ रहा है अब बताइए ऐसी विपत्तियों से घिरे हुए अति घोर फूट रूपी दुःख दावाग्नि में जलने वाले मानवों को शान्ति और सुख कहाँ ? अतः शास्त्रों का यह सिद्धान्त है कि 'इस शोक-संताप से पीड़ित मानव को स्वर्ग-मृत्यु तथा पाताल इन तीनों लोकों का साम्राज्य एक साथ में मिल जाय तब भी इसके शोक, मोह एवं दुःख की निवृत्ति तथा परम आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती । मानव भौतिक भोगों से जैसे-जैसे अपने दुःख द्वन्दों को हटाकर सुख पाना चाहता है वैसे-वैसे मानो इसके प्रयत्न की हंसी उड़ाकर इसे अधिक-अधिक दुःखी किया जा रहा है कोई रोगी हो रहा है कोई दरिद्र तथा कोई तो अपने शरीर से ही अन्धा काना, कुब्जा-बधिर आदि हो रहा है वह शरीर से भी दुःखी है तथा समाज से भी । अब इसके दुःख का कोई पारावार नहीं है, चले थे सुख पाने, डूब गये दुःख-दरिया में । अतः यह सिद्ध हुआ कि **'नाल्पे-सुखमस्ति (छां. ७,२३-१)** अल्प में सुख नहीं है । **'अतोऽन्यदार्तम्' (बृ. ३-७-२३)** इस परमात्मा से भिन्न अन्य सब कुछ दुःख से संयुक्त है तात्पर्य यह है कि 'संसार है 'अल्प' उत्पत्ति विनाशशील अनित्य।' अतः प्राणी, मानव संसार में संसार के अनित्य प्राणी पदार्थों में सुख खोजता है कहाँ से मिले । सुख रूप तो परमात्मा है । श्रुति कहती है कि 'यो वै भूमा तत्सुखम् ।' जो भूमा है वह निश्चय ही सुख रूप है । 'रसो वै सः' वह सार रूप परमात्मा आनन्दमय है । परमात्मा अनन्त, नित्य, सत्य, चित् एवं आनन्दस्वरूप है, परिपूर्ण, शान्त एवं अखण्ड है । अतः सबकी कामना (इच्छा) का विषय सुखस्वरुप परमात्मा ही है । प्रमाण मूर्धन्य अति धन्य भगवान् वेद ब्रह्म,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आत्मा, इन्द्र परमात्मा को ही आनन्द स्वरूप प्रतिपादन करता है तथा सब लोग सुख की इच्छा यानी परमात्मा की ही प्राप्ति की इच्छा करते हैं ऐसा निरूपण करता है ।

ओम् इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम् ।
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते ॥
(ऋग्वेद संहिता १४, ४, ३, २५, ८)

शबदार्थ - 'परे' धनादिसे जो श्रेष्ठ हैं वे अथवा उत्तम दैवी सम्पत्ति सम्पन्न जो सात्विक सदाचारी हैं वे तथा 'अवरे' जो अधम-निकृष्ट धनादिहीन दरिद्र तामसी दुराचार परायण जो मनुष्य हैं वे तथा जो 'मध्यमासः' मध्यम साधारण स्थिति वाले लोग जो रजोगुणी हैं वे सबके सब 'इन्द्रम्' सुख स्वभाव परमात्मा का ही 'हवन्ते' आह्वान करते हैं यानी दुःख निवृति पूर्वक अखण्ड आनन्दानुभूति के लिए परमात्मा को ही बुलाते हैं । 'पर' आदि विशेषणों से विशिष्ट सभी मनुष्यों की अच्छी या बुरी सभी प्रवृत्तियों का लक्ष्य निरतिशय-अखण्ड-सुख ही है और वह सुख साक्षात् या परम्परा से ब्रह्म ही है अतः सब स्वभाव से ब्रह्म को ही चाहते हैं । कहा भी है कि '**सुखार्थाः सर्व भूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः**' सब प्राणियों की सम्पूर्ण प्रवृत्तियाँ सुख के लिए ही होती हैं । '**अवसितासः**' निविष्ट यानी बैठे हुए निवृत्ति परायण-समाधिनिष्ठ योगी-या ज्ञानीजन भी परमात्मा का ही आह्वान करते है अर्थात् जैसे प्रवृत्तिका लक्ष्य परमात्मा है वैसे ही निवृत्तिका लक्ष्य भी परमात्मा ही है । '**अवसितासः**' का भाव यह है कि जिनके लौकिक-कर्तव्य-कार्य समाप्त हो गए हैं ऐसे संन्यास धर्म सम्पन्न, सर्व स्त्री-पुत्र धनादि परिग्रहों के त्यागी, परमहंस परिव्राजक महात्मा भी परमात्मा को ही चाहते हैं क्योंकि उनका संन्यास पूर्वक योगाभ्यास तत्त्व चिन्तन या समाधि स्थिति सुख के लिए ही है '**तपांसि सर्वाणि-यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति**' इत्यादि श्रुतियों में तप-ब्रह्मचर्य आदि अनेक कठिन साधनों का फल ब्रह्म प्राप्ति ही बताया है । इसके अतिरिक्त जो '**क्षियन्तः**' घर में निवास करते हैं वे भी परमात्मा को ही चाहते हैं । 'क्षि निवासे' 'क्षि' धातु निवास के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थ में है इसका अर्थ है वे गृहस्थ भी स्त्री पुत्र आदि इष्ट पदार्थों के द्वारा उस आनन्द निधि इन्द्र को ही चाहते हैं । मंत्र में जितने 'इन्द्र' शब्द आये हैं सब का अर्थ ऐश्वर्यवान् आनन्द स्वरूप परमात्मा है । 'उत' और युध्यमानाः - युद्ध करने वाले योद्धा लोग भी विजय के लिए परमात्मा को ही बुलाते हैं, विजय का उद्देश्य सुख प्राप्त करना है तथा 'वाजयन्तः' वाज, अन्न की इच्छा करने वाले क्षुधार्त 'नरः' नेता मनुष्य भी परमात्मा को ही बुलाते हैं क्योंकि अन्न की इच्छा भी सुख के लिए है । अथवा 'वाजयन्तो' अन्न-जल-वस्त्र भूमि आदि का दान करने वाले भी उसी का आह्वान करते हैं क्योंकि दान भी परलोक के सुख के लिए ही किया जाता है । तथा 'नरः' यानी सन्मार्ग में प्रवृत्त कराने वाले आचार्य सदुपदेशक, सद्‌गुरु जो सर्वभूतों के हित में प्रीति करने वाले समबुद्धि सम्पन्न हैं वे भी सर्वत्र सुख के उद्देश्य से ही प्रवृत्त होते हैं । इस मंत्र से यहाँ यह उपदेश ग्रहण करना है कि 'सभी मनुष्यों की कामना का विषय, परमप्रेमास्पद, परमनन्द, निधि इन्द्र पद का वाच्यार्थ सर्वज्ञ सर्व शक्ति सम्पन्न परमात्मा है अतः कामुक पुरुष जैसे कामिनी का चिन्तन करता है वैसे ही परमात्मामें अनन्य प्रेम सम्पादन करके निरन्तर उसी का चिन्तन करे, भजन ध्यान करे । परमात्मा से भिन्न क्षण-भंगुर धन, जन, देहादि मिथ्या पदार्थों के मोह का परित्याग कर उनसे उदासीन होकर उस सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा की उपासना करे ।

वेदान्त शास्त्र में विवेकादि साधन चतुष्टय सम्पत्ति से सम्पन्न साधक सद्‌गुरु से तत्त्व श्रवण करके मनन एवं निदिध्यासन पूर्वक **'तत्त्वमसि'** आदि महावाक्यों का शोधन करे, तब ब्रह्मात्मैकत्व विज्ञान उत्पन्न होता है उसी से उत्तम अधिकारी को जन्मादि दुःख की निवृत्तिपूर्वक अखण्ड आनन्द की प्राप्ति रूप मोक्षपद प्राप्त होता है । ऐसा कहा है । पिता के ऋण को चुकाने वाले तो पुत्र आदि भी हो सकते हैं परन्तु संसार रूप बन्धन में से छुड़ाने वाला अपने से भिन्न दूसरा कोई नहीं है । जैसे शिर पर रखे हुए भार को दूसरे लोग उतार सकते हैं परन्तु भूख आदि दुःख को अपने भोजन किए बिना कैसे मिटाया जा सकता है । जो रोगी स्वयं पथ्य-पालन पूर्वक औषधि का सेवन करता है उसी का रोग मिटता हुआ देखा जाता है परन्तु अन्य के औषधि सेवन से अन्य का रोग

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं मिटता । द्वितीया के चन्द्रमा को देखने के लिए अपने ही नेत्र की आवश्यकता है दूसरे की आँख अपने काम में नहीं आती । ठीक वेदान्त का यह सिद्धान्त है कि आनन्द स्वरूप आत्मा का अनुभव साधक को स्वंय करना चाहिए । अपने उद्धार का प्रयत्न अपने आप करना है तथा ब्रह्म और आत्मा के एकत्व का अपरोक्ष ज्ञान स्वयं प्राप्त करना चाहिए । जिससे बन्धन की निवृत्ति के साथ जीवन्मुक्ति का आन्द प्राप्त हो सके तथा विदेह कैवल्य हो जाय । परन्तु जो साधक विवेकादि से सम्पन होते हुए भी तत्त्व श्रवण आदि पर भी बुद्धिमांन्ध आदि किसी प्रतिबन्धक के कारण आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते उन मध्यम साधकों के लिन भगवान् वेद तथा वेदान्त शास्त्र उपासना यानी भक्ति के द्वारा भी वे मुक्त हो सकते हैं ऐसा उपदेश देता है ।

इस पुस्तक में विशेष करके चित्त की शुद्धि का हेतुभूत कर्मकाण्ड एवं चित्त की स्थिरता का कारण उपासना का वर्णन है । वेदान्त शास्त्र में निर्गुण ब्रह्म की उपासना तथा सगुण भगवान् की अनेक विध उपासनाओं का विस्तृत वर्णन है ।

शास्त्र के द्वारा अपने इष्ट देव के स्वरूप का जैसा ज्ञान कराया जाय, श्रद्धाभक्ति से भरपूर मन के द्वारा वैसे अपने अभीष्ट मंत्र एवं देव प्रतिमा आदि का अवलम्बन लेकर अनन्य प्रेम से लौकिक किसी वस्तु के व्यवधान से रहित होकर चिन्तन करना ही उपासना है । और जब तक उस देव के स्वरूप में आत्म बुद्धि उत्पन्न न हो जाय तब तक उपासना करनी चाहिए । **'मनुष्योऽहं'** जैसें इस शरीर में 'मैं मनुष्य हूँ ।' ऐसा दृढ़ अभिमान है वैसा देव में आत्माभिमान **'शिवोऽहं, ब्रह्माहमस्मि'** इत्यादि देवात्मभाव की सिद्धि होने तक उपासना होनी चाहिए **'देवो भूत्वा देवानप्येति'** ।

इसी जन्म में साक्षात्कार हो उसे देवभाव तथा मृत्यु के बाद देवत्वापत्ति यानी देवाप्यय, अर्थात् देव स्वरूप में लीन होना उपासना का फल है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उपासना दो प्रकार की है । भेद बुद्धि से की जाने वाली 'प्रतीकोपासना' तथा अभेदबुद्धि से की जाने वाली **'अहंग्रह'** उपासना । अन्य वस्तु के (शालग्राम या नर्मदेश्वर शिवलिंग) के अन्य रूप (विष्णुरूप या शिवरूप) से ध्यान करने को प्रतीकोपासना कहते हैं । यह सम्पद् रूप और अध्यासरूप से दो प्रकार की है । आरोप्य प्रधान को सम्पत्रूप तथा आलम्बन प्रधान को अध्यासरूप कहा गया है । इष्टदेव भगवान् ही आरोप्य है । प्रतिमादि आलम्बन है । जब प्रतिमा आदि ही भगवान् है ऐसी भावना की जाती है तब उत्कृष्ट की निकृष्ट रूप से, व्यापक की परिच्छिन्न रूप से, चैतन्य की जड़ रूप से भावना की जाती है जो अध्यासरूप है इसे निकृष्ट जानना चाहिए । और जब भगवान ही प्रतिमादिक है ऐसी प्रतिमादि में जब भगवत्स्वरूप की भावना की जाती है, तब चैतन्य भावना से जड़त्व का विलय हो जाता है तब **'ब्रह्मदृष्टिरुत्कर्षात्'** (ब्र.सू. ४-१-५) इस न्याय से यह सम्पद्रूप उपासना श्रेष्ठ है । यहाँ यह विचार होता है कि "सर्व व्यापक, सर्वाधार भगवान् अति अल्प प्रतिमा आदि रूप नहीं हो सकता अपितु प्रतिमा आदि ही भगवत् स्वरूप है । परमात्मा विश्वरूप है । अत: जब सारा विश्व ही भगवान् का स्वरूप है तब प्रतिमादिक सहज ही ब्रह्मरूप से भावित होती है अत: निकृष्ट प्रतिमा आदि में सर्वोत्कृष्ट ब्रह्म दृष्टि की स्थापना से सम्पत् उपासना अध्यास से प्रशस्ततर है । प्रतीक में ईश्वर भावना करके जो ध्यान किया जाता है उसका फल सालोक्य मोक्ष है । तथा सम्पद् ध्यान का फल सामीप्य मोक्ष है ।

ध्येयानुसार ध्यान - ध्यान करने योग्य इष्टदेव का जैसा रूप हो, उसका उसी रूप में ध्यान किया जाय वह ध्येय के अनुसार ध्यान कहलाता है । शास्त्र ने जिस देव का जो रूप वर्णन किया है उसका उसी रूप से ध्यान करने का फल सारूप्य मोक्ष है । 'अहंग्रह उपासना भी सगुण ब्रह्मगोचर तथा निर्गुण ब्रह्मगोचर के भेद से दो प्रकार की है । पूर्वोक्त ध्येयानुसार ध्यान में जब साधक ध्येय के रूप में अहं बुद्धि करके ध्यान करता है तब वह सगुण ब्रह्मगोचर अहंग्रह उपासना हो जाती है इसमें अनन्त, सौन्दर्य माधुर्य गुणसारसर्वस्व, कर्पूरधवल, उज्ज्वलरत्नकान्तिकान्त, दिव्य अंग, अखिल लोकशरण्य, प्रशान्त वीतरागजनसेव्य, रमणीय चन्द्रकलावतंस श्री विश्वनाथ, उमारमण महादेव,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मदनकोटिसुन्दर अद्भुतचरित भगवान् रमारमण श्री विष्णु अथवा श्री राम अथवा श्री कृष्ण की अनवरत उपासना की जाय यानी ध्येयरूप श्री शिव मैं हूँ, विष्णू मैं हूँ, श्री राम मैं हूँ श्री कृष्ण में हूँ शिवोऽहं, रामोऽहं इत्यादि रूप से अभेद चिन्दन किया जाय यह सगुण ब्रह्मगोचर अहंग्रह उपासना है। इसका फल साधक को ध्येय के स्वरूप की प्राप्ति यानी सारूप्य मोक्ष है। इसका श्रुति में प्रतिपादन है देखिए -

"अथ खलु क्रतुमयः पुरुषो यथाक्रतुरस्मिंल्लोके भवति तथेतः प्रेत्य भवति। स क्रतुं कुर्वीत" (छां. ३-१४-१)

क्योंकि यह जीव (पुरुष) क्रतुमय यानी अध्यवसाय रूप है अध्यवसाय का अर्थ निश्चय होता है इसका जैसा निश्चय जीवन काल में होता है कि 'मैं' ब्रह्म हूँ वैसा ही इस देह के मरने पर अपने निश्चय के अनुसार सगुण ब्रह्म प्राप्ति रूप फल प्राप्त होता है। इसका प्रतिपादन श्रीमद्भगवद् गीता में भी किया गया है। यथा -

यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावित :॥ (गीता ८-६)

वह उपासक - जिस उपास्य के स्वरूप का आत्म रूप से चिन्तन करता हुआ देह का त्याग करता है वह सदा तद्रूप के भाव से भावित होने के कारण उसी रूप को प्राप्त होता है। अतः साधक को नित्य नियम से अपने इष्टदेव का अभेदभाव से भजन करते रहना चाहिए। **यह सगुण ब्रह्म गोचर प्रथम अहंग्रहोपासना है।**

दूसरी है निर्गुण ब्रह्म विषयक 'अहंग्रह' उपासना।

आनन्दादि विधेय तथा अस्थूलादि निषेध्य गुणों से लक्षित, वस्तुतः निर्गुण अखण्ड एकरस, पूर्ण अद्वितीय ब्रह्म ही आत्मा है 'वह मैं हूँ' इस प्रकार निरन्तर चिन्तन रूप निर्गुण ब्रह्म गोचर उपासना-अहंग्रह उपासना है। श्रुति की अनेक शाखाओं में उपास्य के जो अनेक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुणों का प्रतिपादन है, उन सब गुणों का एक स्थान में उपसंहार करके उपासना करनी चाहिये । वे गुण दो प्रकार के हैं 'विधेय' और 'निषेध्य' उनमें -

'आनन्दो ब्रह्म (तै, ३-६) विज्ञानमानन्दं ब्रह्म (बृ. ३-९-३४) नित्यः शुद्धो बुद्धः सत्यो मुक्तो निरञ्जनो विभूरद्वय आनन्दः परः प्रत्यगेकरस : (नृ. उ. ९)

ब्रह्म आनन्द है । विज्ञान तथा आनन्द ब्रह्म है । नित्य शुद्ध बुद्ध, सत्य, मुक्त, निर्लेप, व्यापक, अद्वितीय आनन्द, प्रत्यगात्मा पर ब्रह्म है इत्यादि विधेय गुण हैं इनका उपसंहार '**आनन्दादय**' (ब्र. सू. ३-३-११) सूत्र में किया गया है तथा -

'अस्थूलमनण्वह्लस्वं' (यो.शि. ३-१९) यत्तदद्रेश्यम-ग्राह्यम् अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम् (मुण्ड. १-६)

वह स्थूल नहीं है, सूक्ष्म नहीं है, ह्रस्व नहीं है, दीर्घ नहीं है, वह जो यह अदृश्य, अग्राह्य, अशब्द, अस्पर्श, अरूप है । वह अन्तः प्रज्ञ नहीं है बहिःप्रज्ञ नहीं है इत्यादि रूप से निषेध करते-करते अन्त में जो विद्यमान रहे और जो सबके निषेध का साक्षी हो वह ब्रह्म है । वह विधेय और निषेध गुणों से लक्षित जो ब्रह्म है वह में हूँ इस प्रकार चिन्तन करना निर्गुण ब्रह्म विषयक अहंग्रहोपासना है । निषेध्य गुणों का उपसंहार '**अक्षरधियां.** इस (ब्र. सू. ३-३-३३) सूत्र में व्यास जी ने किया है । यद्यपि आनन्दादि और अस्थूलादि गुणों का प्रवेश निगुण ब्रह्म में नहीं है तथापि वे गुण लक्ष्य कराने वाले होना संभव है अतः इन गुणों से लक्षित ब्रह्म उपास्य है । अतः श्रुति प्रतिपादित अखण्ड एकरस आत्मा मैं हूँ (सोऽहमस्मि) वह ब्रह्म मैं हूँ ऐसी उपासना करे । यह उपासना धीरे-धीरे ज्ञान रूप हो जाती है । अपएव दुःख की निवृत्ति पूर्वक परमानन्द प्राप्ति की हेतु बन जाती है। अतः सभी श्रेयस् साधकों को अपनी-अपनी योग्यता तथा अपने-अपने अधिकार के अनुसार शुभ कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए । भगवद्भक्ति करनी चाहिए एवं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आत्मज्ञान सम्पादन करना चाहिए ।

सच्चा कर्म, सच्ची उपासना एवं सच्चा ज्ञान वही है जो साधक के मन से संसार को निकाल दे, ईश्वर के साथ साधक की एकता अभिन्नता करा दे । अतः इसी उद्देश्य से कर्म-उपासना ज्ञान का क्रमसमुच्चय पूर्वक मानव जाति के हितार्थ यह ''कर्तव्य वोध'' नामक पुस्तक लिखी गई है । इसमें प्रातःकाल में सोकर उठते ही करने योग्य ईश्वर चिन्तन से लेकर स्नान, संध्या जप, होम, श्री पंचायतन देवपूजन, ध्यान, स्तुति, पाठ अनेक आरतियाँ एवं नित्य हवन विधि भोजन-भजन शयन विधि एवं बलिवैश्वदेव तथा पंचमहायज्ञों का समावेश किया है । अन्य कुछ आवश्यक विषयों का सन्निवेश परिशिष्ट में कर दिया गया है । यह ग्रन्थ आस्तिक जनता के लिए अमृत तुल्य आस्वादनीय होकर आह्लादप्रद होगा ऐसी मेरी पूर्ण आशा है । जो कर्मकाण्ड के धुरन्धर विद्वान हैं उनके लिए यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी नहीं है। परन्तु सामान्य पण्डितों के लिए तथा भक्त समाज के लिए अत्यन्त प्रेरक होकर आनन्दप्रद होगा । मंगलमय शिव परमात्मा सबको सन्मति दे, सन्मार्ग पर प्रगति करावे तथा सबका कल्याण करे ऐसी मेरी हार्दिक प्रार्थना है ।

भक्तों से निवेदन है कि वे 'वैराग्य शम, दमादि साधन सम्पत्ति प्राप्त करके वीतराग श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाकर कल्याणस्वरूप, आनन्द निधि सदा शिव परमात्मा का अन्वेषण करें । परमात्मा की प्रार्थना करें । यथा -

ओम् शिवो भूत्वा मह्यमग्ने ! अथो सीद शिवस्त्वम् ।
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहासदः ।।

(शु. यजुर्वेद १२-१७)

हे विश्वप्रेरक ! ज्ञानस्वरूप अन्तर्यामिन् परमात्मन् ! आप कल्याण रूप पूर्ण आनन्द निधि एवं सबका कल्याण करने वाले आनन्द प्रद हो अतः हे शिव ! आप सुखमय होकर मेरे हृदय में प्रकट होकर स्थिर हो जाइए । हे प्रभो ? मैं आपके स्वरूप का प्रत्यक्ष अनुभव

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करूं ऐसा अनुग्रह कीजिए । सबके लिए सम्पूर्ण दिशाएँ शान्त एवं निरुपद्रव बनाकर अपने पारमार्थिक ब्रह्म चैतन्य रूप से प्रकट हो जाइये । इस प्रकार वेद बोधित, महान् ऋषियों के द्वारा अति श्रद्धा पूर्वक सेवित अति प्रशस्त कल्याण मार्ग-कर्म-उपासना-ज्ञान मार्ग में स्वतन्त्रता से चलते हुए मानव प्रसन्न पुष्ट एवं आनन्दित होते हैं, उनके सम्पूर्ण विघ्न, दोष एवं संताप आदि दूर भाग जाते हैं तथा उनका जो अभीष्ट उत्कृष्ट प्रयोजन है उसे प्राप्त कर लेते हैं । अतः ऐसे साधकों का जीवन मधुर ब्रह्मानन्द रसमय होता है ।

ॐ शिवः सर्वं सर्वत्र शुभं भूयात् ।

स्वामी दयानन्द वेदपाठी
वेदाश्रम चांदोद (गुजरात)
विजया दशामी
आश्विन शुक्ल १० शुक्रवार दिनांक २६/१०/२००१

मनुष्य को चाहिए कि वह विवेकहीन, अज्ञानी और दुर्जनों से प्रेम करने वाले मनुष्य का दूर से ही परित्याग करके साधु महात्माओं की सेवा करे । सज्जनों के सम्पर्क में रहने से विवेक की उत्पत्ति होती है । यह विवेक एक वृक्ष के समान है और भोग तथा मोक्ष उसके फल कहे गये हैं ।

मोक्ष द्वार पर निवास करने वाले चार द्वारपाल हैं, वे हैं 'शम, विचार, संतोष तथा साधु संगम' मनुष्य को इन चारों का ही प्रयत्न पूर्वक सेवन करना चाहिये इससे ये मोक्षरूपी राजमहल के द्वार को खोल देते हैं जिससे मानव अनायास ही मुक्त हो जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुरु महिमा

लेखिका - श्रीमती विमला देवी केंथ

वेद - उपनिषद्, गीता, रामायण, धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि में सर्वत्र गुरु माहात्म्य लिखा है गुरु कृपा के बिना ज्ञान नहीं होता, गुरु कृपा के बिना जीवन का उद्धार नहीं होता अतः गुरु गीता में भगवान् शंकर जी पार्वती जी को कहते हैं कि -

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥

ध्यान का मूल गुरु की मूर्ति है अतः गुरु मूर्ति का ध्यान करे, पूजा का मूल यानी आधार गुरु के चरण कमल हैं गुरु पादपद्मों की पूजा करे । मंत्र का मूल गुरु-वचन है मतलब यह कि गुरु जी ने शिष्य को जो भी वचन कह दिया वही मंत्र है तथा मोक्ष का मूल गुरु कृपा है यानी गुरु कृपा से शिष्य का मोक्ष होता है । ब्रह्मा, विष्णु, महादेवात्मक यह सम्पूर्ण जगत गुरु ही है, गुरु ही ब्रह्म है गुरु से बढ़कर अन्य कोई तत्त्व श्रेष्ठ नहीं है अतः गुरुदेव का अच्छी तरह पूजन करना चाहिए ।

जो गुरु की सेवा से रहित हैं वे कभी मुक्त नहीं हो सकते । देव, गन्धर्व, पितर, यक्ष किन्नर ऋषि एवं सभी सिद्ध भी जो गुरु सेवा से विमुख हैं वे कभी मुक्त नहीं हो सकते ।

गुरु की पूजा, ध्यान एवं सेवा करने से स्वयमेव तत्त्वज्ञान प्रकट हो जाता है । गुरु के बताये हुए मार्ग से मन को शुद्ध कर ले फिर अखण्ड ब्रह्म सत्ता का सर्वत्र दर्शन करे, तद्रूप हो जाय । गुरु को 'हुंकार' तथा 'त्वं' कार के द्वारा अपमानित करने पर वन में ब्रह्मराक्षस होना पड़ता है । सात समुद्र पर्यन्त पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं वे सब गुरु चरणों में स्थित हैं अतः गुरुचरणामृत सब तीर्थों का तीर्थ है शिष्य के तन मन को पवित्र करने वाला है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमेश्वर तथा गुरु में श्रद्धाभक्ति रखने वाले शिष्य के प्रति किए गए उपदेश की सफलता होती है। देखिए -

यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥

(श्वेत. उप.)

जिसकी परमेश्वर में अत्यन्त भक्ति है और जैसी परमेश्वर में है वैसी ही गुरु में भी है उस महात्मा के प्रति कहने पर ही तत्त्वों का प्रकाश होता है यानी तत्त्वज्ञान होता है।

यज्ञ, व्रत, तप, दान, जप, तीर्थाटन आदि कर्म गुरु कृपा से ही सफल होते हैं तथा गुरु सेवा से विमुख मानव इन कर्मों के करने पर भी फल नहीं पाता अतः मानव को गुरु भक्ति गुरु सेवा के द्वारा जीवन को विशुद्ध ज्ञानमय बना कर मुक्त होना चाहिए।

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु देव की, गोविन्द दियो बताय॥

॥ ओम् शम् ॥

नर्मदे हर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महामंण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी श्री दयानंद वेदपाठीजी महाराज का

किंचित् परिचय

ओम तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥
(अर्थव वेद)

वेदाश्रम चांदोद के अधिष्ठाता विश्वभारती वेदाश्रम ट्रस्ट - मानस मंदिर नई दिल्ली के संस्थापक - अध्यक्ष, विश्वभारती गीता रामायण संस्थान के संस्थापक तथा भारत भर में अनेक सत्संग मण्डलों के संस्थापक, उद्घाटक एवं अनेक वेदान्त सम्मेलनों के अध्यक्ष - प्रमुख वक्ता श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज वेदपाठी मेरे प्रिय गुरु भाई एवं ब्राह्मणकुलोत्पन्न हैं । वैराग्य सम्पन्न होने के कारण छोटी उम्र में ही घर का त्याग करके आपने संन्यास ग्रहण कर लिया था । दशनाम संन्यासी श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी के आचार्य गुरु श्री महामण्डलेश्वर श्री स्वामी जयेन्द्र पुरी जी महाराज की परम्परामें दीक्षित श्री गुरु कपिल महामुनि जी के परम उपासक, श्री पंचायती अखाड़ा महा निर्वाणी-काशी, प्रयाग-हरिद्वार रमता पंच के श्री महन्त नन्हू पुरी जी महाराज सिद्ध गुरु जी से दीक्षित होकर प्रथम तो आपने भारत भ्रमण किया, पवित्र तीर्थ धामों की यात्रा की, इसी यात्रा प्रसंग में आपने गुरु महाराज श्री कपिलमुनि जी का दर्शन किया और उन्हीं की प्रेरण से आत्म शान्ति प्राप्त की, तत्त्वज्ञान की खोज की, अनेक सन्त-महन्त-महात्माओं का सत्संग किया । कुछ काल तक काशी जी में निवास करने के बाद अपने पूज्य गुरुदेव के आदेश से प्रयाग में जाकर ब्रह्मचर्य पूर्वक तपोमय जीवन व्यतीत करते हुए वेद, वेदान्त, व्याकरण, एवं धर्मशास्त्र आदि का अध्ययन करके थोड़े ही समय में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त किया ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर भगवान् विश्वनाथ की प्रेरणा से यात्रार्थ नेपाल गए वहाँ कुछ दैवी संकेत मिले, अनुकूल प्रतिकूल अनेक अनुभव हुए। वैराग्यवान् तो थे ही: वहाँ से ही निश्चय कर लिया कि जिसने गृह परिवार का त्याग कर दिया, मनको परमात्मा में लगा दिया, उसके लिए फिर यह मठ-मढ़ी एवं अखाड़ा-दरबारा का क्या सम्बन्ध ? क्या बन्धन ? नेपाल से बिहार के तीर्थों का व स्थानों का भ्रमण करते हुए काशी होकर पुन: प्रयाग आ गए वहाँ दो चार दिन रहकर अखाड़े का एवं वहाँ के स्थानो का तथा गुरु जी के उत्तराधिकार का मोह छोड़ कर विरक्त हो सोटे लंगोटे से निकल गये।

गुरु जी ने रहने का बहुत आग्रह किया कोई पद देकर बाँधना चाहा परन्तु पिंजड़े से छूटा हुआ सिंह किसके बन्धन में आ सकता है ? विरक्त हुआ संन्यासी माया मोह में कैसे पड़ सकता है ?। छह वर्ष तक गुरु महाराज की छत्र-छाया में रह कर अब सन् १९४४ में सर्व संगों का परित्याग करके सहिष्णु होकर पुन: भारत भ्रमण आरम्भ कर दिया। जहाँ जाते वेदपाठ करते, लोगों को धर्म की शिक्षा देते शुभकार्य यज्ञ, दान, तप आदि स्वयं करते दूसरों को प्रेरणा देते। अब तो आप एक महान् आदर्श धर्मोपदेशक हो गये आपके प्रवचनों में सैकड़ों व हजारों की संख्या में श्रोतागण उपस्थित होते, आपने

स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥

इस श्रुतिमंत्र को अपना लिया जहाँ जाते, वहाँ वेद-उपनिषद् गीता आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराते तथा धर्मशास्त्रों पर प्रवचन करते। अनेक स्थानों में आपको सम्मान पत्र दिए गए। आपकी प्रेरणा से अनेक स्थानों में सत्संग मण्डल वने, सत्संग भवन बने। पाठशाला, यज्ञशाला,गौशालाएँ तथा मंदिर एवं अन्न क्षेत्र, जलाशय आदि बने, भक्तों व महात्माओं ने आपको अपना मठ-मंदिर बनवाने की प्रार्थना की, इसको आपने ठुकरा दिया और कहा कि 'परोपकार करना ही साधुओं का कर्तव्य है परिग्रह नहीं' इसी अवसर पर अनेक गण्यमान्य विद्वानों ने दण्डी महात्माओं ने सन् १९५४ से १९६० तक कई बार शंकाराचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के लिए आमन्त्रित किया, आग्रह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया । परन्तु आपने निःस्पृहता के साथ बड़ी नम्रता पूर्वक इस पद को अस्वीकृत कर दिया ।

सन् १९६२ से लेकर पिछले उज्जैन के कुम्भ सन् १९८० तक के दीर्घकाल तक संन्यासी-साधु समाज व कई महामण्डलेश्वरों ने आपको महामण्डलेश्वर पद पर प्रतिष्ठित होने का पुनः आग्रह किया परन्तु आपने अपने त्याग वैराग्यवान् स्वभाव के कारण लोकमान्य एवं साधु समाज मान्य श्रेष्ठ पद को स्वीकार नहीं किया । इस प्रकार 'सबहिं मानप्रद आपु अमानी, वाला सिद्धान्त आपमें चरितार्थ हो गया । इससे सिद्ध होता है कि ये वीतराग निष्ठावान महापुरुष हैं तथापि (**'लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ।' (गी. ३-२०)** इस गीतोक्त सिद्धान्त के अनुसार आप धर्मप्रचार तथा आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान, योग-भक्ति एवं शुभ कर्मों का प्रचार करने में लगे हुए हैं । अहंता-ममता का त्याग करके स्वकर्तव्य का पालन करते हुए निर्द्वन्द्व होकर सारे भारत में सर्वत्र विचरण करते हैं । पिछले ५८-५९ वर्षों से निरन्तर धर्म-देश संस्कृति एवं समाज की तन, मन, धन से सेवा कार्य में लगे हुए हैं । बच्चों में धार्मिक शिक्षा के लिए आपने दिल्ली में विश्वभारती गीता-रामयाण संस्थान की स्थापना की तथा भक्तों की भावना की वृद्धि के लिए आपने दिल्ली में भव्य एवं दर्शनीय मानस मंदिर बनवाया है । नर्मदा के पावन तट पर आपका वेदाश्रम है । यह भी केवल भक्त समुदाय एवं महात्माओं के लिए शान्ति के स्थान हैं । न चाहते हुए भी अनायास ही ये स्थान किसी अदृष्ट के कारण बन गये हैं । इनका भी आपको कोई मोह नहीं है । सेवा ही आपका ध्येय है ।

ग्रन्थ लेखन के द्वारा भी समाज की सेवा करते रहते हैं हिन्दी व गुजराती भाषा में आप कई ग्रन्थ लिख चुके हैं अब आपने अपनी तेजस्वी लेखनी के द्वारा कर्म-उपासना एवं ज्ञान के समुच्चय वाला 'कर्तव्य बोध' नामक ग्रन्थ लिखकर जनता का बड़ा उपकार किया है । मैं वेदाचार्य श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ आप जनता को ऐसे ही उपहार प्रदान करते रहें । महा मृत्युंजय श्री विश्वनाथ शिव परमात्मा हमारे अभिन्न मित्र व साथी श्री स्वामी दयानन्द जी को स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रदान करें जिससे ये जनता जनार्दन की विशेष सेवा करते रहें । इनके साथ मेरा परिचय सन् १९४४ में हुआ । तब से आज तक मैंने अनुभव किया है कि आप बड़े विद्वान्, कर्तव्यनिष्ठ, नम्र, सरल, मिलनसार, मधुरभाषी तथा हंसमुख हैं । आपके कार्य, आपकी अमर कीर्ति के पावन स्तम्भ हैं । मैं आपके द्वारा होने वाले धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यों की वृद्धि की कामना करता हूँ । तथा जनता आपके उपदेशों तथा ग्रन्थों से लाभ उठाकर धन्यता का अनुभव करे । इसी शुभ कामना के साथ मैं विराम लेता हूँ ।

स्वामी ब्रह्मानन्द आर्य
त्रैतवेदान्ताचार्य, शास्त्रार्थ महारथी
ओंकार आश्रम, चांदोद

नाम माहात्म्य

प्रेम पूर्वक नाम जप करनेसे भक्त आनन्द एवं कल्याण के निवास हो जाते है ।

हरि कीर्तन धून

हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐबाले ।
राम कृष्ण हरि राम कृष्ण हरि, राम कृष्ण हरि गोविन्द बाले
गोविन्द गोविन्द गोविन्द बोल (टेक)
विश्वनाथ सचराचर स्वामी, व्यापक अचल सनातन बोल ।
अशरण-शारण अरिवल सुख, कारण, जग तारण मधुसूदन बोल ।
जन मन रंजन भव भय भंजन, कामादिक मद गंजन बोल ॥
असुर निकन्दन अलरव निरंजन, यदुनन्दन रघुनन्दन बोल ॥
मुनि मन मानस हँस अभयकर, प्रणतपाल सुरनायक बोल ।
परमानन्द परमपद दाता, निर्गुण-सगुण रमापति बोल ॥
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मो, नारायण नारायण बोल ।
'दयानन्द' हरि नारायण जप, हरि ॐ तत्सत् गोविन्द बोल ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेतु-साम-गानम्

हाउ ३ सेतूंस्तर दुस्तरान् ३ दानेनादानं हाउ ३ ।
अहमस्मि प्रथम जा ऋतस्या ३ ।

हाउ ३ सेतूंस्तर दुस्तरान् ३ अक्रोधेन क्रोधं हाउ ३ ।
पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाभा इ हाउ ३ ।
सेतूंस्तर दुस्तरान् हाउ ३ श्रद्धया अश्रद्धां हाउ ३ ।
यो मा ददाति स ३ देवमावाः हाउ ३ ।
सेतूंस्तर दुस्तरान् हाउ ३ सत्येनानृतं हाउ ३।
अहमन्नमहमन्नमदन्तमाझि ३ हाउ ३ ।

वा एषा गति : एतदमृतं स्वर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ,
सेतूंस्तीर्त्वाचतुरः ॥ (सामवेद गान संहिता)

अर्थ-'हाउ ३' यह गान के लिये है, इसके द्वारा कल्याण कामी मनुष्य का जोर से सम्बोधन किया जाता है, अरे ! हे भाई तु ये चार दुस्तर-सेतु जो-लोभ, क्रोध, नास्तिकता तथा झूठ रूप हैं एवं दुस्तर यानी उल्लंघन-अतिक्रमण करने के लिए बड़े कठिन हैं एवं जो आत्मकल्याण-मोक्ष में प्रतिबन्धक रूप हैं - उन अनर्थकारी सेतुओं का अतिक्रमण कर-पार कर । दान-उदारता-त्यागरूप साधनके द्वारा अदान-यानी दान धर्म का विरोधी-लोभ तृष्णा-कृपणतारूप सेतुका अतिक्रमण कर । और तू दान धर्म की प्राप्ति के लिए एवं अदान की निवृत्ति के लिए मैं ऋत-सत्य ब्रह्म का प्रथम-जन्मा-परम ऐश्वर्य; से सम्पन्न-साक्षात् हिरण्यगर्भ ही हूँ ।' ऐसी भावना कर । ऐसे महान् हिरण्यगर्भरूप तुझको अदान-कृपणता-लोभ, शोभा नहीं देता, अतः तू इस तुच्छ-लोभ का परित्याग

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर । अरे ! तू पुनः इन चार दुस्तर-प्रतिबन्धक सेतुओं का अतिक्रमण कर । अक्रोध यानी क्रोध का विरोधी क्षमा एवं प्रेम से क्रोध का अतिक्रमण कर । और तू अक्रोधरूप-क्षमा एवं प्रेम की प्राप्ति के लिए तथा क्रोध की निवृत्ति के लिए- 'मैं विषयद्योतक मनःचक्षुरादि इन्द्रियों से भी प्रथम विद्यमान हूँ, उनसे पृथक् हूँ, एवं में आनन्दनिधि-निर्विकार निर्भय-अमृत की नाभि-केन्द्र हूँ । अर्थात् मैं अखण्ड एकरस-विशुद्ध-अमृत ब्रह्म ही हूँ ।' इस प्रकार की भावना कर । ऐसे निर्विकार ब्रह्मरूप तेरे समीप क्रोध कैसे आ सकता है ? नहीं आ सकता । मनः पर्यन्त क्रोध पहुँच जा सकता है, परन्तु उससे पर जो शुद्ध-असंग-आत्मा है, वही तू है, वहाँ क्रोध की गति नहीं है ।

इसलिए तू सर्वात्म-भावना के बल से क्षमा एवं प्रेम को धारण कर, क्रोध का परित्याग कर । अरे ! पुनः तू इन चार दुस्तर प्रतिबन्धक-सेतुओं का अतिक्रमण कर । ये चार सेतु बड़े अनर्थकारी हैं, इसलिए अवश्य ही तुझे इनका उल्लंघन करना ही चाहिए । श्रद्धा से तू अश्रद्धा का विध्वंस कर । अश्रद्धा यानी नास्तिकता का अतिक्रमण कर । मैं सत्य सनातन-पूर्ण पुरुष हूँ, जो कोई साधक, मुझको अपने सर्वस्वका दान करता है - आत्मनिवेदन कर देता है, वही मुझ सर्वात्मदेव को प्राप्त हो जाता है ।' इस प्रकार अपने आत्मा के विपुल-महत्त्व के अस्तित्व की भावना रूप श्रद्धा से तू अश्रद्धा का विनाश कर । अपने आपके अस्तित्व में तो अवश्य ही तुझे श्रद्धा रखनी चाहिए एवं उसके अस्तित्व के महत्त्व के साक्षात्कार के लिए भी प्रबल-प्रयत्न करना चाहिए । श्रद्धा एवं प्रयत्न से निखिल-प्रतिबन्धों की निवृत्ति एवं समस्त इष्ट की सिद्धियों का लाभ प्राप्त हो जाता है ।

अरे ! पुनः मैं कहता हूँ-बार-बार चिल्ला करके कहता हूँ कि-तू उन चार दुस्तर प्रतिबन्धक सेतुओं का इन साधनों से अतिक्रमण कर । सत्य से अनृत का अतिक्रमण कर । सत्य तो एकमात्र परब्रह्म ही है, उससे अन्य नामरूपात्मक दृश्य जड़ परिच्छिन्न संसार अनृत-मिथ्या है । सत्य-ब्रह्म की भावना से अनृत-संसार का विध्वंस कर । एवं सत्य दर्शन से, सत्य भाषण से, सत्य श्रवण से एवं सत्य आचरण से अनृत-दर्शन का, अनृत भाषण का, अनृत श्रवण का, अनृत आचरण का भी अतिक्रमण कर । अहो ! मैं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्न हूँ, अर्थात् समस्त भोग्य-प्रपञ्च भी मैं हूँ, एवं उसका अदन-भक्षणकर्ता अग्नि आदि भोक्ता-भी मैं ही हूँ, अत्ता-भोक्ता अन्न भोग्य का अपने में होम कर देता है, इसलिए मैं विशुद्ध-ब्रह्म, उस भोक्ता को अपने मन में होम कर देता हूँ, भोग्य एवं भोक्ता का होम हो जाने पर जो विशुद्ध पूर्ण-एकरस अखण्ड ब्रह्म परिशिष्ट रहता है, वही मैं हूँ । इस प्रकार सर्वबाधावधिरूप-निर्विशेष-केवलाद्वैत-सत्य ब्रह्म के सतत अनुसंधान से अनृतरूप-चतुर्थप्रतिबन्धक का तू अतिक्रमण कर बस यही गति यानी उद्धार का आत्म कल्याण का प्रकार है । यही अमृत है अर्थात् अमरत्वरूप मोक्ष प्राप्ति का साधन है । इन साधनों के द्वारा इन चार अनर्थकारी सेतूओं का उल्लंघन करके तू 'स्वः' यानी अपने अनन्त आनन्द को प्राप्त हो जा, एवं स्वयं प्रकाश भर्गः ज्योति को प्राप्त हो जा ।

हरिः ॐ तत्सत् ।

शिवोऽहं शिवः सर्वम् ।

स्वामी श्री दयानन्द वेदपाठी जी

वेदाश्रम चांदोद

विजया दशमी

२६/१०/२००१

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

कर्तव्य बोध

मंगलाचरणम्

ॐश्री वेद पुरुषाय नमः । शं भूयात् सर्वेषाम् ।

सत्यं ज्ञानमनन्तं यन्निष्कलं निष्क्रियं परम् ।
अद्वितीयं निर्विशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥ १ ॥

अर्थ-जो सत्य है, ज्ञानस्वरूप है, देश काल वस्तु कृत परिच्छेद से रहित अनन्त एवं कला रहित, निर्विकार निराकार निर्विशेष निर्गुण भेद से रहित अद्वितीय ब्रह्म है, हम उस ब्रह्म की अभेद भाव से उपसना करते हैं ।

अधस्तान्मानवं दिव्यमुपरिष्टाद्गजाकृति ।
परस्तात्तमसस्तेजः पुरस्तादस्तु नः सदा ॥ २ ॥

जो नीचे से दिव्य मानव (देव) आकृति तथा ऊपर से गजाकृति वाले हैं जो अज्ञान से पर (अतीत) स्वयं प्रकाश (ज्ञान रूप ब्रह्म हैं) वे श्री गणेश जी सदा हमारे आगे (सामने) विद्यमान रहें ।

पञ्चाशद्वर्णरूपेण यया व्याप्तमिदं जगत् ।
शब्दब्रह्ममयीं वाणीं भजे तां परदेवताम् ॥ ३ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वर तथा व्यञ्जनादि पचास वर्णरूप से जिसके द्वारा समस्त विश्व व्याप्त है जो शब्दब्रह्म रूप है उस पर-देवता मातृ-शक्ति ज्ञानाधिष्ठात्री वाणी (सरस्वती जी) का मैं भजन करता हूँ। ध्यान करता हूँ।

आद्यन्तमङ्गलमजातसमानभाव-
मार्यं तमीशमजरामरामत्मदेवम् ।
पञ्चाननं प्रबलपञ्चविनोनशीलं
संभावये मनसि शङ्करमम्बिकेराम् ॥ ४ ॥

जो आदि और अन्त रहित होते हुए भी विश्व के आदि तथा अन्त में (उत्पत्ति और प्रलय में) मंगल रूप (कल्याणप्रद) है, जिसके समान कोई तत्त्व नहीं है। जो अजर अमर आत्मारूप से प्रकाशित हो रहा है जो साकार रूप से पाँच मुखों वाला होकर पंचमहाभूतों के द्वारा प्राकृतिक विश्व की सृष्टि आदि पंचकार्यों के करने के स्वभाव वाला ब्रह्म है, उस आत्मदेवरूप श्रेष्ठ ईश्वर श्री शंकर जी का मैं मन में ध्यान करता हूँ।

पूर्व शलोक में-**पंचाननं प्रबल पंचविनोदशीलम्** । पद आया है, इससे शिवजी के पञ्चमुख तथा पञ्च कर्मों का संकेत मिलता है। शिव जी केपाँच कृत्यों (कर्मों) का नाम ही 'पञ्चविनोदशीलता' है जिसका वर्णन शिवपुराण में आया है। ये पांच कर्म हैं- सृष्टि, स्थिति, संहार आविर्भाव-तिरोभाव और अनुग्रह। जगत् से सम्बन्धित ये पाँच कर्म शिवजी के नित्य सिद्ध हैं। संसार का आरम्भ होता है - वह सृष्टि है, उसकी- प्रतिष्ठा (वृद्धि और रक्षा)-स्थिति है, उसका नाश-संहार है। विश्व का उत्थान और पतन-आविर्भाव-तिरोभाव है तथा जीव का मुक्त करना यह अनुग्रह कृपा है यही शिव के पाँच कृत्य हैं।

शिव परमात्मा पहले प्रकृति को माया के रूप में स्वीकार लेता है तब वह महेश्वर रूप से माया के गुणों के द्वारा आकाश वायु, तेज, जल और पृथ्वी को उत्पन्न करता है पहले सूक्ष्म सृष्टि होती है बाद में स्थूल। शिव भक्त इन पूर्वोक्त पाँच कर्मों को पंच महाभूतों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में देखते हैं- देखिये-पृथ्वी में सृष्टि, जल में स्थिति, अग्नि में संहार, पवन में आविर्भव-तिरोभाव और आकाश में अनुग्रह वर्तमान है । जैसे पृथ्वी से सब उत्पन्न होते हैं, जल से बढ़ते हैं तेज से नष्ट होते हैं, पवन से एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानान्तरित किये जाते हैं और आकाश में सब स्थित होते हैं । ये कार्य योग्य पद्धति से चलते रहें और इनका नियमन नियम से होता रहे, इसी हेतु से शिव पंचमुख वाला ब्रह्म है वेद में 'सद्योजातं' आदि पांच मंत्रों द्वारा 'पंचवक्त्र' शिव पूजन का विस्तृत वर्णन है ।

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् ।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ।
नमस्ते अस्तु भगवती मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥ ५ ॥

हृदय कमल के मध्य में रहने वाली, प्रातः कालीन सूर्य के समान प्रभावाली, पाश और अंकुश धारण करने वाली मनोहर रूपवाली, वरद और अभय मुद्रा धारण किये हुए हाथों वाली तीन नेत्रों से युक्त रक्तवस्त्र परिधान करने वाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाली देवी को मैं भजता हूँ ।

हे भगवती ? तुम्हें नमस्कार है । हे माता ! सब प्रकार से हमारी रक्षा करो ।

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे, जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरंञ्चिनारायणशङ्करात्मने ॥ ६ ॥

समग्र विश्व के साक्षी प्रकाशक, विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, लयके हेतुभूत ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर स्वरूप त्रिगुणरूप में अभिव्यक्त विश्व के धारण-पोषण करने वाले श्री सूर्यनारायण को मैं श्रद्धा पूर्वक नमस्कार करता हूँ ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यं ब्रह्मावरुणेन्द्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैस्तवै-
र्वेदैःसाङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ ७ ॥

ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों के द्वारा जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अङ्ग, पद, क्रम तथा उपनिषदों के सहित वेदों के द्वारा जिसका गान करते हैं, योगिजन ध्यान में स्थित तद्रूप हुए चित्त के द्वारा जिसका दर्शन करते हैं। देव तथा असुरगण जिसका अन्त नहीं जानते, उस आनन्दस्वरूप देव को हमारा नमस्कार हो ।

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ।

अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं नो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥ ८ ॥

शैव 'शिव' नाम से, वेदान्ती 'ब्रह्म' कहकर, बौद्ध 'बुद्ध' के नाम से तथा प्रमाणकुशल नैयायिक 'कर्ता' कह कर, जैन सिद्धान्त वाले लोग 'अर्हन्' के नाम से तथा मीमांसक 'कर्म' कहकर जिसकी यथायोग्य उपासना करते हैं, वह त्रिलोकी का नाथ श्री हरि परमात्मा हमें इच्छित फल देवे ।

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तँ ह देवमात्मबुद्धि प्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो ब्रह्म सर्व प्रथम ब्रह्मा को उत्पन्न करता है तथा जो ब्रह्मा को निश्चय ही वेदों का ज्ञान प्रदान करता है, उस आत्म-ज्ञान विषयक बुद्धि को प्रकाशित करने वाले प्रसिद्ध परब्रह्म परमेश्वर की मैं मुमुक्षु शरण ग्रहण करता हूँ ।

श्रियं सरस्वतीं गौरीं गणेशं स्कन्दमीश्वरम् ।
ब्रह्माणं बह्निमिन्द्रादीन् वासुदेवं नमाम्यहम् ।। १० ।।

लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, महादेवजी, ब्रह्मा, अग्नि आदि देवताओं तथा भगवान् श्री वासुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ ।

विश्वकल्याण के लिये मंगलकामना -

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदुःखमाप्नुयात् ।।

इस विश्व में सब सुखी हों, सब रोग रहित हों, सब कल्याण मंगलों का दर्शन करें, कोई भी प्राणी दुःख को प्राप्त न हो ।

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु ।
सर्वः सद्बुद्धिमाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु ।।

सभी सब दुःखों-विपत्तियों से तर जाँय, सब मंगलों का दर्शन करें, सब सद्बुद्धि प्राप्त करें तथा सब सर्वदा सर्वत्र आनन्द का अनुभव करें ।

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात् ।
शान्तो मुच्चेत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत् ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुष्ट जन शिष्टजन हो जाय, सज्जन शान्ति को प्राप्त करे, शान्तजन बन्धन से मुक्त हो जांय और मुक्त जन दूसरों को बन्धन से मुक्त करें ।

स्वस्तिः प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।
गो ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ।।

समस्त प्रजा को सुख-शान्ति प्राप्त हो, शासक वर्ग न्याय युक्त मार्ग से पृथ्वी पर शासन करे, गौ तथा ब्राह्मणों का सदा मंगल हो सभी लोग सुखी समद्ध हों ।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी ।
देशोऽयं क्षोभरहिंतो सज्जनाः सन्तु निर्भयाः ।।

समय पर मेघ वर्षा करे, पृथ्वी धान्य से भरपूर हो, यह देश (भारतवर्ष) क्षोभ (अशान्ति) रहित शान्त हो, एवं ब्राह्मण तथा सज्जन सुखी तथा भय रहित हों ।

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया ।
मनश्चभद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी ।।

विश्व का कल्याण हो, दुष्ट लोक शान्त हों, सब प्राणी परस्पर में एक दूसरे के कल्याण का विचार करें, मन सदा सब की भलाई तथा मंगल का चिन्तन करे तथा हम सब की बुद्धि बिना कारण कमलनयन भगवान् श्री विष्णु में प्रवेश करे ।

आवश्यक निवेदन

देवता चाहे एक हो या अनेक, तीन हों या तेतीस, तेतीस करोड़ हों या अनन्त । तथापि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारे उपास्य 'पञ्चदेव' ही हैं । वे हैं-श्री गणेश जी, शिवजी, दुर्गाजी, श्री विष्णु एवं सूर्य । क्योंकि हमारा शरीर पञ्चभूतों से निर्मित हैं अतएव पञ्चभूतों के अधिष्ठातृ पञ्चदेव ही हमारे मन को अपने स्वरूप की ओर आकर्षित करते हैं अतः उपासना तत्त्व परिच्छेद तीन में पूर्वोक्त पञ्चदेवों की आराधना का विस्तृत विवेचन किया गया है[1] अतः साधकों को अपने प्रत्येक कार्य में बड़ी श्रद्धा, तत्परता एवं भावना के साथ पञ्चदेवों का पूजन करना चाहिए । पञ्चदेव का पूजन करने वाला मानव कभी दुःखी नहीं होता वह भोग-मोक्ष दोनों ही प्राप्त कर लेता है । देवोपासना से पूर्व साधक को अपने सद्गुरु का चिन्तन करना चाहिए ।

जो धर्म का उपदेश करे वह गुरु है, जो शिष्य के हृदय के अज्ञान को निगल जाय, ज्ञान का प्रकाश प्रदान करे वह सद्गुरु है जो साक्षात् ब्रह्मा विष्णु-महादेव रूप एवं निर्गुण ब्रह्मस्वरूप माना जाता है ऐसे सद्गुरु का चिन्तन करा 'ॐ गुरु' इस मंत्रका जप करना, गुरुदेव का ध्यान करके उनकी आज्ञा प्राप्त करके श्री गणेश-गौरी आदि का पूजन करे ।

गुरु वन्दना

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

जिसने जड़ चेतनात्मक विश्वप्रपञ्च को व्याप्त कर रखा है जो अखण्ड ब्रह्माण्डाकार है उस तत् पद वाच्यार्थ ईश्वर तथा लक्ष्यार्थ ब्रह्म का जिसने दर्शन (साक्षात्-अनुभव) करा दिया है उस सद्गुरु देवको मेरा नमस्कार है । गुरुदेव ब्रह्मा विष्णु एवं महादेव स्वरूप है तथा साक्षात् परब्रह्म स्वरूप है ऐसे सगुण निर्गुण ब्रह्मस्वरूप गुरु देव को श्रद्धा पूर्वक नमस्कार है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधक सर्वप्रथम अपने सद्गुरु से अपने इष्टदेव का ज्ञान प्राप्त कर ले, इष्टदेव का मन्त्र, रूप का ध्यान तथा पूजा पद्धति आदि जान ले, तदनुसार इष्टदेव को मुख्य देव मानकर अन्य चार देवों को उसके अंग रूप मानकर प्रधान देव की प्रतिष्ठा मध्य में करे तथा अन्य देवों की प्रतिष्ठा कोण दिशाओं में करके शास्त्रीय विधि के अनुसार श्रद्धा पूर्वक एकाग्र मन से पूजन करे। प्रधान देव के भेद से किस देव की स्थापना कहाँ करे इसका परिज्ञान निम्न कोष्टक से हो जायेगा। देखिये -

उत्तर	पूर्व	दक्षिण
शिव		गणेश
	१ विष्णु	
शक्ति		सूर्य
विष्णु		सूर्य
	२ शिव	
शक्ति		गणेश
विष्णु		शिव
	३ गणेश	
शक्ति		सूर्य
शिव		गणेश
	४ सूर्य	
शक्ति		विष्णु
विष्णु		शिव
	५ शक्ति	
सूर्य		गणेश
	पश्चिम	

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उपर्युक्त कोष्टक निम्न शलोकों के आधार पर बने हैं ।

यदा तु मध्ये गौविन्दमैशान्यां शङ्करं यजेत् ।
आग्नेयां गणनाथं च नैर्ऋत्यां तपनं तथा ॥ १ ॥
वायव्यामम्बिकाञ्चैव यजेन्नित्यं समादृतः ।
यदा तु शङ्करं मध्ये ऐशान्यां श्रीपतिं यजेत् ॥ २ ॥
आग्नेयां च तथा हंसं नैर्ऋत्यां पार्वतीसुतम् ।
वायव्यां च सदा पूज्या भवानी भक्तवत्सला ॥ ३ ॥
हेरम्बं तु यदा मध्ये ऐशान्यामच्युतं यजेत् ।
आग्नेयां पञ्चवक्त्रं तु नैर्ऋत्यां द्युमणिं यजेत् ॥ ४ ॥
वायव्यामम्बिकाञ्चैव यजेन्नित्यमतन्द्रितः ।
सहस्रांशुर्यदा मध्ये ऐशान्या पार्वतीपतिम् ॥ ५ ॥
आग्नेयामेकदन्तं च नैर्ऋत्यामच्युतं तथा ।
वायव्यां पूजयेद्देवीं भोगमोक्षैकभूमिकाम् ॥ ६ ॥
भवानीं तु यदा मध्ये ऐशान्यां माधवं यजेत् ।
आग्नेयां पार्वतीनाथं नैर्ऋत्यां गणनायकम् ॥ ७ ॥
प्रद्योतनं तु वायव्यामाचार्यस्तु प्रपूजयेत् ॥

अर्थ - जब भगवान् विष्णु प्रधान देव होकर मध्य में हों तब ईशान में शंकर, अग्नि में गणेश, नैर्ऋत्य में सूर्य तथा वायव्य मैं एकाग्रमन से अम्बिका का नित्य पूजन करे । जब शङ्कर जी मध्य में प्रधान देव हों तब ईशान में विष्णु, अग्निकोण में सूर्य, नैर्ऋत्य में गणेश, वायव्य में भक्तवत्सला माता भवानी का सदा पूजन करे । जब श्री गणेश जी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रधान मध्य में स्थित हों तब ईशान में विष्णु, अग्नि में शिव, नैर्ऋत्य में सूर्य तथा वायव्य में आलस्यका त्याग करके जगदम्बा का नित्य पूजन करें । जब सहस्ररश्मि सूर्य प्रधान देव मध्य में हों तब ईशान में उमापति शिव, अग्नि में एकदन्त श्री गणेश, नैर्ऋत्य में अच्युत विष्णु तथा वायव्य में भोग-मोक्ष प्रदान करने वाली देवी का पूज़न करे । जब मध्य में प्रधान देव भवानी हों तब ईशान में माधव, अग्नि में पार्वतीनाथ, नैर्ऋत्य में गणनाथ तथा वायव्य में सर्वप्रकाशक भगवान् सूर्य का पूजन आचार्य करे ।

नित्य, नैमित्तिक तथा काम्यभेद से पूजा के तीन प्रकार हैं प्रत्येक पूजन में प्रथम श्री गणेश जी का पूजन करना चाहिये । यदि मोह (अज्ञान) वशात् श्री गणेश जी का पुजन न किया जाय तब विघ्नराज श्री गणाधिपति पूजा के फल को नष्ट कर देते हैं ।

शैव, गाणपत्य, शाक्त, वैष्णव एवं सौर आदि प्रत्येक के साधन एवं प्रकार भिन्न-भिन्न हैं । प्रत्येक पूजक को सदाचार का पालन करना परमावश्यक है, कहा भी है कि -

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः,
यद्यप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः ।
छन्दांस्येनं मृत्युकाले त्यजन्ति
नीडं शकुन्ता इव जातपक्षाः ॥

यद्यपि छह अङ्गों के सहित चारों वेदों का अध्ययन किया हो तथापि सदाचार हीन मानव को वेद पवित्र नहीं करते । जैसे पंख आने पर पक्षी घोंसला छोड़ देते हैं वैसे ही आचारहीन को वेद छोड़ देते हैं ।

पहले गणपति की पूजा करनी चाहिए बाद में अङ्ग देवों की पूजा करके प्रधान देव का पूजन करना चाहिए।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवमूर्ति

पाषाण, शिला, लकड़ी, सोना, चाँदी आदि धातु से निर्मित देव मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा अवश्य करनी चाहिए। मन्दिर में स्थित रहने वाली मूर्तियों की अचल प्रतिष्ठा तथा सवारी में काम आने वाली अथवा यात्रा में साथ ले जायी जाने वाली मूर्तियों में चल प्रतिष्ठा करवा लेनी चाहिए। जब तक प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती तब तक मूर्तियों में देवत्व नहीं आता, वे धातुरूप ही रहती हैं। हाँ, बाणलिंग (नमदिश्वर) स्वयं शिवरूप होने से प्रतिष्ठा के बिना भी फलप्रद माने गये हैं नर्मदा के जितने 'कंकर' उतने 'शङ्कर' यह उक्ति प्रसिद्ध है।

मूर्तियों की संख्या

घर में दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य तथा तीन देवी की मूर्तियों की पूजा नहीं करनी चाहिए। द्वारका के दो चक्र तथा दो शालग्राम की भी पूजा का निषेध है। निषिद्ध संख्या वाली मूर्तियों का पूजन करने से गृहस्थियों को उद्वेग की प्राप्ति होती है।

शालग्राम तथा वाणलिंग का आकार

शालग्राम की शिला आँवले के फल के बराबर बड़ी अथवा उससे भी छोटी लेनी चाहिए। बाणलिङ्ग पके हुए जामुन के प्रमाण का या कुक्कुट के अंडे के समान आकृतिवाला श्रेष्ठ माना गया है। उसके पूजन से भोग तथा मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। घड़ित शिवलिङ्ग या स्वयम्भुलिङ्ग छोटे-बड़े अनेक आकार के हो सकते हैं जो मंदिरों में प्रतिष्ठित हैं। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के आकार-प्रकार भी विविध आकृति एवं प्रमाण वाले हैं।

किस देव को क्या चढ़ायें ?

विष्णु को सफेद चंदन, तुलसी। शिवजी को लाल चंदन, बिल्वपत्र, भस्म, रुद्राक्ष। गणेश को सफेद चंदन, दूब, लाल-चंदन। सूर्य को केसर, जपा कुसुम। शक्ति को

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिंदूर तथा कनेर चढ़ाना चांहिए ।

किस देव को क्या न चढ़ायें ?

विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूब और सूर्य को बिल्वपत्र नहीं चढ़ाना चाहिए ।

विशेष

सूर्य को डंडी तोड़कर बिल्वपत्र चढ़ाया जा सकता है ।

शिवजी को मञ्जरी के साथ तुलसी चढ़ानी चाहिए । महा-अभिषेक में विशेष उपचारों में शिवजी को तुलसी चढ़ाने का विधान है ।

पुष्प जैसे उत्पन्न होता है वैसे सीधा ही चढ़ाना चाहिये ।

बिल्वपत्र ऊँधा चढ़ाने की विधि है । बिल्वपत्र का बज्र अवश्य निकाल देना चाहिए ।

शिवंजी को कुन्द, विष्णु को धतूरा, देवी को आक तथा सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिए ।

स्नान कराते समय देव मुर्ति को अँगूठे से नहीं मसलना चाहिए । धोती में फूल नहीं रखना चाहिए पानी में भी नहीं डुबाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से पुष्प निर्माल्य हो जाते हैं । उन्हें देवता स्वीकार नहीं करते ।

सड़ा हुआ तथा डंडीवाला नागरवेल का पान भी पूजा में नहीं लेना चाहिए । डंडी तोड़कर पान का उपयोग करना चाहिए ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान् को प्रिय आध्यात्मिक भावपुष्प

अहिंसा प्रथमं पुष्पं पुष्पमिन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वपुष्पं दया भूते पुष्पं शान्तिर्विशिष्यते ॥
शमः पुष्पं तपः पुष्पं ध्यानं पुष्पं च सप्तकम् ।
सत्यं चैवाष्टमं पुष्पमेतैस्तुष्यति केशवः ॥
एतैरेवाष्टभिः पुष्पैस्तुष्यत्येवार्चितो हरिः ।
पुष्पान्तराणि सन्त्येव बाह्यानि मनुजोत्तम ॥

प्रथम पुष्प है **'अहिंसा'** द्वितीय पुष्प है इद्रियों का **'निग्रह'** ततीय पुष्प है सर्व-प्राणियों पर **'दया'** चतुर्थ पुष्प है मन की **'शान्ति'** पंचम पुष्प है **'शम'** छठा पुष्प है **'तप'** एवं प्रभु का **'ध्यान'** करना यह सातवाँ पुष्प है और आठवाँ पुष्प है **'सत्य'** । इन आठ पुष्पों से भगवान् संतुष्ट होते हैं ।

(१) अहिंसा प्रथम पुष्प

किसी भी प्राणी को शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा न पहुँचाना, हिंसा के भाव को मन से निकाल देना ।

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः

अहिंसा के सिद्ध होने पर अहिंसक की सन्निधि में रहने वाले प्राणी वैर-विरोध का परित्याग कर देते हैं । सर्वत्रात्मदर्शन करके 'निज प्रभुमय देखहिं जगत्, का सन करहिं विरोध' इस उक्ति के अनुसार 'अहिंसा' पुष्प है जो पूजक का प्रथम गुण है । इसे सर्वात्मभाव से विश्वात्मा को समर्पित करना है । यह पुष्प प्रभु को संतुष्ट करता है ।

(२) इन्द्रियों का निग्रह करना यह द्वितीय पुष्प है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मानव की श्रोत्रादि सभी इन्द्रियाँ स्वभावतः शब्दादि अपने-अपने विषय की तरफ दौड़ती रहती हैं इनका संयम करके इनको भगवान् की सेवा में लगाना-यह पुष्प के समान आह्लादक है । अतएव भगवान् को प्रिय है इससे भक्त को भगवान् की प्राप्ति होगी इसीलिए आप पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ तथा पञ्च कर्मेन्द्रियाँ संयमित करके पुष्प के रूप में भगवान् को समपिंत कर दें ।

(३) सम्पूर्ण प्राणियों पर 'दया' करना तृतीय पुष्प है

प्राणिमात्र पर दया का विस्तार करना । निखालस एवं निष्कपट भाव से सबकी सेवा करना । स्व-पर के भेद का त्याग करके, शत्रु-मित्र भाव को दूर करके सबमें भगवद्बुद्धि करके किसी भी दुःखी प्राणी को सहायता प्रदान करना, यह दया रूप पुष्प है । जो प्रभु को संतुष्ट करता है ।

(४) चतुर्थ पुष्प है 'मन की शान्ति'

स्वभाव से चञ्चल एवं अशान्त मन को योगाभ्यास तथा भजन के द्वारा शान्त करके-अभ्यास तथा वैराग्य के द्वारा सांसारिक वासनाओं से रहित करके श्रद्धा भक्ति से युक्त बना कर पुष्प की भावना करके अपने मन को परमपिता परमात्मा को प्रदान कर दें अतः परम शान्ति प्राप्त होगी-**मय्येव मन आधत्स्व**-भगवान् ने कहा भी है कि-तू अपना मन मुझ में ही लगा दे ।

(५) पाचवाँ पुष्प है, जीवन में शान्ति

जो अशान्त है उसे सुख कहाँ ? अतः-

जब तक है जिन्दगी, फुरसत न होनी काम से ।
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम करलो राम से ॥

राम से प्रेम करोगे तो काम नष्ट हो जाएगा । काम के नष्ट होने पर जीवन में शान्ति आ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाएगी यह शान्ति ही पुष्प है, इसे प्रभु को समर्पित कर दें । जीवन का भार प्रभु को सौंप दें, सब शान्त हो जाएगा । अपने जीवन को पुष्पवत् सुवासित करके प्रभु को चढ़ा दें । सर्वात्म समर्पण कर दें ।

(६) छठा पुष्प है 'तप

मन और इन्द्रियों की परमात्मा में एकाग्रता ही परम तप है । यहाँ अनेक तपोनिष्ठ भक्तों-योगियों एवं सन्तों के तपोमय जीवन से शिक्षा प्राप्त होती है । पार्वती का तप, मनु-शतरूपा का तप, कपिल का तप, नर-नारायण का तप, शबरी का तप, ध्रुव प्रह्लान आदि का तप, उदाहरण के लिए ग्रहण किया जा सकता है । तत्त्व जो परब्रह्म है उसकी प्राप्ति का परम साधन तप ही है । इसमें पुष्प बुद्धि करके अनुष्ठान करना है । तपोबल से ब्रह्माजी सृष्टि करते हैं, विष्णु रक्षा तथा रुद्र तपोबल से ही प्रलय करते हैं । शेष जी तपोबल से ही पृथ्वी को धारण करते हैं । अतः आप भी तप करें यह पुष्प प्रभु को समर्पित करें ।

(७) सातवाँ पुष्प है 'ध्यान'

अपने इष्टदेव के स्वरूप का अखण्ड चिन्तन होते रहने को ही 'ध्यान' कहते हैं यह योग का सातवाँ अङ्ग है । घ्यान के द्वारा ध्याता ध्येय को प्राप्त कर लेता है ध्यान में सहज स्थिति हो । यह पुष्परूपता है जो प्रभु स्वीकार कर लेते हैं । जैसे-अशोक बन में सीताजी राम का ध्यान करती हैं, कीड़ा भ्रमर का ध्यान करता है, वैसे ही भक्त भगवान् का ध्यान करें । परिणामतः यह ध्यान ही पुष्प है, प्रभु का चिन्तन ही पुष्प है जो उन्हें समर्पित करना है यानी समस्त मानसिक वृत्तियों के सहित अन्तःकरण को प्रभु को प्रदान कर देना है ।

(८) आठवाँ पुष्प है 'सत्य' जो प्रभु को अत्यन्त प्रिय है

सत्य परमात्मा का स्वरूप है, नित्य है । उसकी प्राप्ति का साधन भी सत्य ही है, असत्य

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का अधिष्ठान होने से परमात्मा सत्य कहाता है । मानव के तन-मन-वचन में सत्य स्थिर रहे, व्यवहारिक जीवन की शुद्धि सत्य से ही होती है अतः पुष्प के समान जीवन सत्य से महक उठे, जैसे 'राजा हरिश्चन्द्र का जीवन' बस यही सत्यमय जीवन पुष्पवत् होकर प्रभु को समर्पित हो जाय । ये आठ पुष्प हैं जो प्रभु को प्रसन्न करने वाले हैं । अन्य पुष्प भी हैं जो बाह्य हैं, वे भी भगवान् को चढ़ाये जाते हैं परन्तु उपर्युक्त आठ पुष्पों द्वारा पूजन करने पर भगवान् शीध्र ही संतुष्ट हो जाते हैं ।

कुशा-देवकार्य तथा पितृकार्य में कुशा तथा कुशा की अँगूठी का विशेष रूप में उपयोग होता है इसके लिए कुश-ग्रहणी अमावस्या (भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या) के दिन पूर्व अथवा उत्तराभिमुख होकर कुशवृक्ष का पूजन करके निम्न प्रार्थना करके जड़ (मूल) के सहित कुशा ग्रहण कर लेनी चाहिए

विरंचिना सहोत्पन्ना परमेष्ठि निसर्गज ।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव ॥

अर्थ - ब्रह्मा के साथ उत्पन्न होने वाली परमेष्ठी की सृष्टि में प्रकट हे दर्भ ! तुम मेरे सारे पापों को नष्ट करो तथा कल्याणकारी हो जाओ । इस प्रार्थना के बाद 'हुँ फट्' मंत्र बोलकर जड़ सहित दर्भ उखाड़कर घर ले आवे और वर्ष भर उसका उपयोग करे ।

प्रादेश (अँगूठा तथा तर्जनी के मध्य के प्रदेश के बराबर) दर्भ, दो प्रादेश की कुशा तथा एक हाथ की बर्हि कहलाती है । इससे लम्बी कुशा तृण (घास) के बराबर मानी गई है उसका त्याग कर दे ।

तुलसी तोड़ने का मंत्र

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थ-हे तुलसी ! तुम अमृत से उत्पन्न हो, तुम सदा केशव भगवान् की प्रिया हो केशव के लिए मैं तुम्हें तोड़ता हूँ हे शोभने ! वर देने वाली हो जाओ ।

संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूनम, रविवार तथा संध्या के समय तुलसी नहीं तोड़नी चाहिए । विशेष कारण उपस्थित होने कर निम्न मंत्र बोलकर तोड़ी जा सकती है ।

त्वदङ्गसम्भवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम् ।
तथा नाशय विघ्नं मे ततो यान्ति परां गतिम् ॥

मौन-दोनों समय की सन्ध्या, जप, देवकार्य, पितृकार्य, दतुअन तथा भोजन के समय मौन रहना चाहिए । गुरुजनों के पास, दान करते समय, योगानुष्ठान के समय तथा श्राद्ध व मैथुन, मल-मूत्र त्याग के समय अवश्य ही मौन रहना चाहिए, इससे बड़ा लाभ होता है ।

पादुका त्याग-जहाँ होम-हवनादि होता हो उस अग्नि के स्थान में, भोजनालय में, गौशाला, देवमंदिर, गुरु, आचार्य विद्वान् तपस्वी सन्त महात्माओं की सन्निधि में जाते समय पादुका (खड़ाऊँ, चप्पल-जुता आदि) का त्याग करके जाना चाहिए । मन्त्र जप के स्थान में भी पादुका पहन कर नहीं जाना चाहिए ।

शिव दर्शन-प्रातःकाल में शिव दर्शन करने से रात्रिकृत पाप नष्ट होता है । दोपहर को दर्शन करने से जन्म भर का पाप तथा सायंकाल में शिव दर्शन से सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं । अतः शिव दर्शन का नियम लो । सोने का पहाड़, सौ करोड़ गाय, पाँच करोड़ घोड़ो का दान करने से जो फल मिलता है वह सदाशिव का दर्शन करने से अनायास ही मिल जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

शांकर सम्प्रदायीय शान्ति पाठ

ॐतत्सत् परमात्मने नमः ।

ओम् शंनो मित्रःशं वरुणः । शं भवत्वर्यमा । शं न इंद्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।। १ ।।

ओंकार परमात्मां का मुख्य नाम है । इसका स्मरण पाप नाशक तथा पुण्यवर्धक है । ओंकार का उच्चारण करने से साधक की सब बिघ्नबाधाओं से रक्षा होती है । 'मित्र' यानी 'सूर्य' जो दिन का अभिमानी, नेत्र का अनुग्राहक, रूप का प्रकाशक देवता है वह हमें सुख एवं शान्ति प्रदान करे । वरुण जो रात्रि अथवा जल का अभिमानी, रसनेन्द्रिय का अधिष्ठाता रस का ग्राहक देवता है, वह हम सब को सुख शान्ति देने वाला होवे । 'अर्यमा' जो पितरों का अधिष्ठाता देवता है वह हमें सुख देने वाला हो । हाथ का अधिष्ठाता बल का देने वाला देवता इन्द्र हमें सुख-शान्ति प्रदान करे । वाणी तथा बुद्धि का प्रकाशक बृहस्पति हमें सुख देवे । विस्तृतपादवाला विष्णु (वामन) भगवान् हमें सुख-शान्ति देने वाला हो । ब्रह्म को नमस्कार है । हे वायु देव ! आपको नमस्कार है । आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं । आपको ही में प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा । सत्य कहूँगा । वह ब्रह्म मेरी रक्षा करे । वह वेदवक्ता आचार्य की रक्षा करे । मेरी रक्षा करे । आचार्य की रक्षा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करे । त्रिविध ताप की शान्ति हो ।

आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक ये तीन ताप (दु:ख) प्रसिद्ध हैं इन तीनों से सांसारिक जीव पीड़ित हैं इन तीनों की निवृत्ति के लिए शान्ति पाठ के अन्त में तीन बार '**शान्तिः**' पद पढ़ा गया है । तीन बार 'शान्ति': पद सह व्यक्ति समाज तथा देश में शान्ति स्थापित होती है । समाज-राष्ट्र तथा विश्व में सर्वत्र सुख-शान्ति की स्थापना का भाव '**शान्तिः**' पद में निहित है ।

ओम् सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ॥ ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ओम्-वह प्रसिद्ध परमेश्वर हम शिष्य और आचार्य दोनों की रक्षा करे । वह प्रसिद्ध परमेश्वर हम दोनों को ज्ञान जनित आनन्द का भोग करावे । हम दोनों मिलकर वीर्य यानी विद्या की प्राप्ति के सामर्थ्य का लाभ करें । हम दोनों का पठन, पाठन किया हुआ वेद का ज्ञान तेजस्वी होवे, हम दोनों परस्पर विद्वेष न करें । त्रिविध ताप की शान्ति हो।

ओम् यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः । छन्दोभ्योऽध्यमृतात्सम्बभूव । स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु । अमृतस्य देव ! धारणो भूयासम् । शरीरं मे विचर्षणम् । जिह्वा मे मधुमत्तमा । कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम् । ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः । श्रुतं मे गोपाय ॥ ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ओम् जो ओङ्कार वैदिक-छन्दों में श्रेष्ठ है-सर्वरूप है, अमृत रूप वेदों से अधिक (आराधनीय) हुआ है । वह ओंकार रूप इन्द्र भगवान् मुझको बुद्धि की सुक्ष्मता एकाग्रता एवं निर्मलता रूपी सामर्थ्य देवें । हे देव ! मैं अमृत (परब्रह्म) का धारण करने वाला

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होऊँ। मेरा शरीर रोग-रहित स्वस्थ रहे । मेरी जिह्वा मधुर भाषिणी हो, कानों से मैं बहुत भद्र सुनू । आप (ओंकार) ब्रह्म के कोश हैं यानी आपकी आराधना से ही ब्रह्म प्रकट होता है, इसलिए आपके भीतर ब्रह्म छिपा है । लौकिक बुद्धि से आप ढके हुए हैं । जो कुछ मैंने सुना है, उसकी रक्षा कीजिए । त्रिविध ताप की शान्ति हो ।

ओम् अहं वृक्षस्य रेरिव । कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव । ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि । द्रविणं सवर्चसम् । सुमेधा अमृतोऽक्षितः । इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम् । ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

ॐ हे परमात्मन् ।। मैं संसाररूप वृक्ष को काटने वाला हूँ । मेरी कीर्ति (महिमा) पर्वत के शिखर के समान अत्युन्नत है । मैं सूर्य के समान अत्यन्त पवित्र और शुद्ध अमृत हूँ । प्रकाश सहित बल हूँ । सुन्दर-विशुद्ध बुद्धि वाला, अमृत और नाशरहित हूँ । ये वचन वेद के जानने के पश्चात् त्रिशंकुके कहे हुए हैं । त्रिविध ताप की शान्ति हो ।

ओम् पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्ति ।।

ॐ वह परब्रह्म पूर्ण है, यह अपर ब्रह्म (भी) पूर्ण है (क्योंकि) पूर्ण से पूर्ण (ही) निकलता है, पूर्ण से पूर्ण लेकर पूर्ण ही अवशेष रहता है । त्रिविध ताप की निवृत्ति हो ।

ओम् आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च । सर्वाणि सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं में

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्तु । तदात्मनिनिरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु ।। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

हे सर्व रक्षक प्रभो ! मेरे अङ्ग वाणी, प्राण, नेत्र, श्रोत्र, बल और सर्व इन्द्रियाँ वृद्धि को प्राप्त हों । सब ब्रह्मरूप उपनिषद् हैं । मैं ब्रह्म का तिरस्कार न करूँ यानी ब्रह्म से मैं विमुख न होऊँ । ब्रह्म मेरा तिरस्कार न करे । हम दोनों का परस्पर विशुद्ध प्रेम हो । ब्रह्मात्मा में निरन्तर प्रेम करने वाले महा पुरुषों में एवं उपनिषदों (वेदान्तों) में प्रसिद्ध जो शम दमादि धर्म हैं, मुझमें होवें । ॐ त्रिविध ताप की शान्ति हो ।

ओम् वाङ् मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि । वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीरनेनाहोरात्रान्संदधाम्पृतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । अवतु वक्तारम् ।। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

ॐ मेरी वाणी मन में प्रतिष्ठित हो, मेरा मन वाणी में प्रतिष्ठित हो । हे स्वप्रकाश ब्रह्म चैतन्यात्मन् ? अविद्या दूर करने के लिए आप मुझ में प्रकट हो जाइए । वेद का यथार्थ तत्त्व मेरे लिए लाइये । मेरा सुना हुआ ज्ञान मुझे न छोड़े । इस पढ़े हुए को मैं दिन रात धारण करूँ । परमार्थ में सत्य बोलूं, व्यवहार में भी सत्य ही बोलूं । वह ब्रह्म मेरी रक्षा करे । रक्षा करे आचार्य की । रक्षा करे आचार्य की । त्रिविध ताप शान्त हों ।

ओम् भद्रं नो अपिवातय मनः ।।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

हे प्रभो ! हमें सुख मिले तथा हमारा कल्याण हो, मन पवित्र कीजिए । त्रिविध ताप शान्त हों ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ।।

स्वस्ति न इंन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिप्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

हे देवगण ! हम कानों से सुखदायी वचन सुनें । ध्यान करने वाले हम नेत्रों से कल्याण रूप देखें । स्थिर हस्त-पादादि अङ्गों के द्वारा सूक्ष्म रहस्यवाली श्रुतियों से उस परब्रह्म परमात्मा की हम स्तुति करें । हे देवो ! आयु भर हम कल्याणरूप शिव को ही धारण करें । महान् कीर्तिवाला इन्द्र हमको आनन्द देवे । समस्त विश्व का जानने वाला सुर्य हमको आनन्द देवे । बृहस्पति हमको आनन्द देवे । त्रिविध ताप शान्त हों ।

ओम् यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्व यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै । तँ ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षर्वै शरणमहं प्रपद्ये ।। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

ॐ जो परब्रह्म परमात्मा पूर्व में ही आद्यशरीरी ब्रह्मा को धारण करता है तथा जो उसके लिए ऋगादि वेदों को प्रकाशित करता है । यानी वेदों का उपदेश करता है । आत्मबुद्धि (ज्ञान) के प्रकाशक उस प्रसिद्ध देव की मैं मुमुक्षु शरण ग्रहण करता हूँ । त्रिविध ताप शान्त हों ।

जिसे क्षीण दोष वाले ज्ञानीजन अपने हृदय में प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करते हैं उस नित्य सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के श्रुति में मुख्य चार साधन बताये गये हैं-

सत्येनलभ्यस्तपसाह्येष आत्मा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् ॥

यह आत्मा नित्य सत्य, नित्य तप, नित्य सम्यक् ज्ञान और नित्य ब्रह्मचर्य के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

ॐ

आचार्य परम्परा

ओम् नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशऋषिभ्यो मबहद्भ्यो नमो गुरुभ्यः।
सर्वोपप्लवरहितः प्रज्ञानघनः प्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि ॥ १ ॥

ब्रह्मविद्या सम्प्रदाय प्रवर्तक ब्रह्मा आदि को नमस्कार हो, महान् गुरुओं, वंश प्रर्वतक ऋषियों को नमस्कार है। सर्वोपद्रवों से रहित प्रज्ञानघन प्रत्यगात्मा ब्रह्म ही मैं हूँ।

ओम् नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्म शिष्यम् ॥ २ ॥

ॐ नारायण, ब्रह्मा, वसिष्ठ, शक्ति तथा उनके पुत्र पराशर, व्यास, शुकदेव, गौडपाद उनके शिष्य महान् योगी गोविन्दपाद ॥

श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्-गुरून्संततमानतोऽस्मि ॥ ३ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गोविन्दपाद के शिष्य भगवत पाद श्री शंकराचार्य तथा उनके शिष्य पद्मपाद, हस्तामलक, त्रोटकाचार्य, सुरेश्वराचार्य के सहित अपने गुरु श्री महन्त नन्हुँपुरी जी पर्यन्त सब गुरुओं को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ ।

श्रुतिस्मृति पुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम् ।। ४ ।।

श्रुति-स्मृति तथा पुराणों के ज्ञान के समूह, दया के भण्डार लोक कल्याणकारी भगवत्पाद श्री शंकरचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ ।

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ।। ५ ।।

शंकररूय शंकराचार्य, केशव (विष्णु) रूप श्री व्यास जी सूत्रकार (व्यास जी), भाष्यकार (श्री शंकराचार्य जी) दोनों पूजनीय आचार्यों को बारम्बार नमस्कार हो ।

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेद-विभागिने ।
व्योमवद् व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ।। ६ ।।

ईश्वर, गुरु तथा आत्मा इस प्रकार की मूर्तियों के भेद से विभक्त होते हुए भी वास्तव में अविभक्त आकाश के समान व्यापक स्वरूप, ऐसे श्री दक्षिणामूर्ति महादेव जी को श्रद्धा भक्ति-युक्त नमस्कार हो ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनध्याय मंगलपाठ

अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसंततिम् ।
स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां ब्रह्म तन्मङ्गलं परम् ॥ १ ॥
अतिकल्याणरूपत्वान्नित्य-कल्याण-संश्रयात् ।
स्मर्तृणां वरदत्वाच्च ब्रह्म तन्मंङ्गलं विदुः ॥ २ ॥
ओङ्कारश्चाथ शब्दश्च द्वावैतौ ब्रह्मणः पुरा ।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ ॥ ३ ॥

जो स्मरण करनेमात्र से मनुष्यों के अशुभों का नाश करता है, ज्ञान-वैराग्यादि संतान का विस्तार करता है, वह ब्रह्म परम मङ्गलरूप है । अति कल्याणस्वरूप तथा कल्याण का आश्रय होकर जो स्मरण करने वाले भक्तों को वरप्रद है उस ब्रह्म को ज्ञानीजन मङ्गलरूप जानते हैं । 'ओंकर' तथा 'अथ' ये दोनों शब्द सृष्टि के आदि में ब्रह्मा के कण्ठ को भेद करके निकले हैं इसलिए ये दोनों माङ्गलिक हैं, मङ्गलरूप हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

नित्य कर्म

सञ्चित पापों का क्षय ही जिनका प्रयोजन है ऐसे नित्य कर्मों का तथा सकाम पुरुषों के लिए विहित काम्य कर्मों का परिज्ञान होना आवश्यक है । कामना ही कर्म का कारण या प्रवर्तक है, जो लोग पूर्णकाम या आप्तकाम हैं उनके द्वारा कर्म का होना सम्भव नहीं है । आत्म दर्शन की कामना पूर्ण होने पर पूर्ण कामना की सिद्धि होती है, आत्मा ही ब्रह्म है और ब्रह्मवेत्ता को परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है, अतएव उसके लिए कर्म की आवश्यकता नहीं है । इसलिए कर्म अज्ञानी तथा सकाम पुरुष के लिए हैं । जो कर्मनिष्ठ (कर्मठ) लोग कर्म करते हुए ही जीवित रहना चाहते हैं उनके लिए शास्त्र ने नित्य नैमित्तक कर्मों का विधान किया है । सामान्य लोगों की बुद्धि से सिद्ध होने वाले आत्मा के अनेकत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व तथा अशुद्धत्व और पापमयत्व को लेकर ही कर्मों का निरूपण किया गया है । वैसे मानव जीवन का ध्येय परमात्मा की प्राप्ति ही है, क्योंकि परमात्मा ही सबकी उत्पत्ति का कारण है, उसी से सब जीवन धारण करते हैं तथा अन्त में उसी में विलिन हो जाते हैं इसलिए जीवन का लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति के अतिक्ति अन्य कुछ भी नहीं हो सकता । परमात्मा की प्राप्ति हो इसके लिए ज्ञान चाहिए, ज्ञान चित्तशुद्धि के बिना तथा विक्षेप निवृत्ति के बिना होता नहीं, अतः व्यवहार की शुद्धि का साधन नित्यकर्मों का तथा चित्त चाञ्चल्य निवृत्त्यर्थ उपासना का प्रतिपादन करना आवश्यक है । साधारण स्त्री-पुरुषों और अल्प-पठित साधकोंको उपयोगी सिद्ध हो सके तथा कुछ प्ररेणा दे सके, इस कोटि का दैनिक साहित्य नित्यकर्म के रूप में यहाँ दिया जा रहा है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्नानं सन्ध्या जपो होमः देवतानां च पूजनम् ।
आतिथ्यं वैश्वदेवं च षट्कर्माणि दिने दिने ॥

गृहस्थियों के नित्य स्नान, सन्ध्या, जप, होम, देव पूजन तथा वैश्वदेव सहित अतिथि का सत्कार का सत्कार ये छह कर्म नित्य नियम से करने चाहिए ।

प्रातः काल में सूर्योदय से एक घण्टा पहले ब्राह्म मुहूर्त रहता है उस समय सोये रहने से पाप लगता है, तथा दरिद्रता आती है, बुद्धि मन्द हो जाती है । अतः सूर्योदय से एक घण्टा पहले उठ जाना चाहिए और उठकर तुरन्त ही अपने इष्टदेव का चिन्तन करना चाहिए । अपने हाथ की हथेली का दर्शन करके निम्न श्लोक बोलना चाहिए ।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमूले सरस्वती ।
करमध्ये तु गोविन्दः प्रभाते कर-दर्शनम् ॥

हाथ के अग्रभ्राग में लक्ष्मी, मूल में सरस्वती तथा हाथ के मध्य में गोविन्द भगवान् का निवास है ऐसी भावना करके प्रातःकाल में हाथ का दर्शन करे । उसके बाद विस्तर पर बैठे बैठे ही इष्ट देव का चिन्तन करे और भगवान् के पवित्र नामों का संकीर्तन-जप करे ।

यथा

ॐ आनन्दं ॐ आनन्दं ॐ आनन्द्म ॐॐॐ पुनः शिव शिव, हरिःहरिः, नारायण नारायण ॐॐ । श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव । इत्यादि ईश्वर के नामों का संकीर्तन करे । इसके बाद पृथ्वी माता को प्रणाम करके प्रार्थना करनी चाहिए ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

हे समुद्र रूप वस्त्रों को धारण करने वाली विष्णु-पत्नीरूपा पृथ्वी देवी ! आपको नमस्कार है । बालक माता की गोद में ही खेलता है वैसे मैं भी आप पर पैर रखता हूँ इस पादस्पर्श से होने वाले दोष को क्षमा करें ।

इसके बाद मुख शुद्धि के लिए तीन बार कुल्ला करके नेत्र धोकर मङ्गल दर्शन करे ।

श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा ।
प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्चते ॥

श्रोत्रिय (वेदज्ञ ब्राह्मण), सौभाग्यवती स्त्री, गाय, अग्नि, तथा यज्ञाग्नि का जो प्रातःकाल में उठकर दर्शन करता है वह आपत्तियों से मुक्त हो जाता है । श्री गणेश जी, लक्ष्मी जी, सूर्य, तुलसी गुरु तथा अपने माता-पिता तथा बड़े बूढ़ों के जो प्रातःकाल में प्रणाम करता है उसकी आयु विद्या, यश तथा बल की वृद्धि होती है । पुण्य बढ़ता है । इसके बाद मुक्ति देने वाली सप्त पुरियों का स्मरण करे ।

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका : ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका : ॥

श्री राम की जन्मभूमि व राजधानी अयोध्या, श्री कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा, मायापुरी (हरिद्वारा), काशी, शिवकांची, उज्जैन जगन्नाथपुरी और द्वारका ये सप्तपुरी मोक्ष की देने वाली हैं ।

स्त्रियों को अपने पाप की निवृत्ति तथा सौभाग्य की वृद्धि के लिए निम्न पाँच सतियों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा देवियों का स्मरण करना चाहिये -

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पंचकं यः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥
उमा उषा च वैदेही राम गङ्गेति पंचकम् ।
प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा ॥

अर्थ स्पष्ट है -

पुरुषों को पुण्य की वृद्धि तथा संकट नाश के लिए निम्न श्लोक पढ़ने चाहियें -

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम् ।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोर-संकट-नाशनम् ॥

अर्थ स्पष्ट है - हलायुध बलराम जी हैं ।

गाय का दर्शन करके गौरक्षा की प्रतिज्ञा करे तथा निम्नलिखित भावना करे -

गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।
गावो में हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

गौवें मेरे आगे हों, गौवें मेरे पींछे हों, मेरे हृदय में गौवों का निवास हो, मैं गौवों के बीच में रहूँ ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वम्,
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यम्,
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ॥ १ ॥

समस्त चराचर भूत -प्राणियों के हृदय में स्वयं प्रकाश रूप से भासमान, सत्, चित् और आनन्दरूप, ब्रह्मनिष्ठ- विरक्त-परमहंस संन्यासियों की परमगति रूप, जो तुरीय साक्षी चेतन आत्म-तत्त्व है, उसका मैं निरन्तर एकाग्रता से एवं परम श्रद्धाभक्ति से प्रातःकाल में स्मरण करता हूँ । जो स्वप्न जाग्रत् और सुषुप्ति रूपी तीन अवस्थाओं का जानने वाला निर्विकार द्रष्टा है, वही मैं हूँ । आकाशादि पाँच भूतों का अल्प-समुदाय रूप शरीर-इन्द्रिय आदि मैं नहीं हूँ ।

प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यम्,
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेति नेति वचतैर्निगमा अवोचु-
स्तं देवदेवमजमच्युत माहुरग्र्यम् ॥ २ ॥

जो तत्त्व मन और वाणी से जाना नहीं जाता है, किन्तु जो मन-वाणी का प्रकाशक है, उस स्वयं ज्योति सर्वात्मा भगवान् को मैं प्रातःकाल में भजता हूँ । जिसके सत्ता-स्फूर्ति रूपी अनुग्रह से, तमाम वाणियाँ प्रतीत होती हैं, यानी तमाम वाणी उपलक्षित यावत् संसार जिसकी सत्ता से भासता है । ऋग्, यजुः आदि वेदोंने जिस सर्वाधिष्ठान तत्त्व को 'नेति नेति' वचनों से कहा है, यानी तमाम प्रपञ्च का निषेध करके परिशेषरूप से बतलाया है, उस तत्त्व को ही विरक्त विद्वान् लोग अजन्मा, अविनाशी, सबसे श्रेष्ठ एवं देवों के देव महादेवरूप से प्रतिपादन करते हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं,
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ॥
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ,
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै ॥ ३ ॥

मायारूपी अन्धकार से परे, सूर्य के समान ज्योतिःस्वरूप यानी सर्व प्रकाशक पुरुषोत्तम नाम वाले पूर्ण सनातन पद को मैं प्रातःकाल में नमस्कार करता हूँ । जिस सर्वाभिन्न सर्वाधिष्ठान तत्त्व में विद्वानों को यह चराचर जगत रस्सी में सर्प के समान मिथ्या कल्पित मालूम हो रहा है ।

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम् ।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम् ॥

तीनों लोकों के भूषण रूप, इन पवित्र तीन श्लोकों को जो प्रातःकाल में पढ़ता है , वह ब्रह्मनिर्वाण रूपी परमपद को प्राप्त हो जाता है ।

मलमूत्र त्याग विधि

जहाँ मलमूत्र का त्याग करना हो, वहाँ से 'देव ऋषि पितरों' को **"गच्छन्तु ऋषयो देवाः"** इत्यादि मन्त्रों के द्वारा विदा करना चाहिये । यज्ञोपवीत वाले यज्ञोपवीत को दाहिने कान में लपेट कर वस्त्र से सिर को ढककर मलमूत्र का त्याग करें । मिट्टी तथा जल से शुद्धि करे । लिङ्ग में एक बार, गुदा में तीन बार, बायें हाथ में दस बार दोनों हाथों में सात बार तथा दोनों पैरों में तीन-तीन बार मिट्टी लगाकर जल के द्वारा शुद्ध करना चाहिये । दिन की अपेक्षा रात्रि में आधी, यात्रा में चौथाई, आतुर (रुग्णकाल) में यथाशक्ति शुद्धि करके कुल्ला करना चाहिऐ । कुल्ला का जल बाँई तरफ डालना चाहिये। मल-त्याग के बाद बारह, मूत्र-त्याग के बाद चार तथा भोजन के बाद सोलह कुल्ले

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने चाहियें। केवल मूत्र त्याग करके तो एक बार लिङ्ग मिट्टी से धोकर हाथ पैर धोकर चार कुल्ले करके आचमन करना चाहिये।

दन्तधावन

पूर्वाभिमुख बैठकर मौन होकर द्वादश अंगुल प्रमाण कनिष्ठिका के अग्रभाग के समान स्थूल काँटे तथा दूध आदि वाले विहित वृक्ष की दतुअन लेकर दन्तधावन करे। मुख तथा दाँतों की शुद्धि के लिए नित्य दतुअन करे। उस समय वनस्पति की प्रार्थना करे, यथा-

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून्वसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

हे वनस्पते! दतुअन! तुम हमें आयु, बल, यश, तेज, पुत्र आदि सन्तान, पशु, धन, मेधा - प्रज्ञा और ज्ञान प्रदान करो।

इस प्रकार प्रार्थना करके दाँत घिसकर जिह्वा का उल्लेख करके बारह कुल्ले करे अथवा मुख शुद्धि पर्यन्त कुल्ले करे।

दतुअन के लिए निषिद्ध दिन

संक्रान्ति, व्यतीपात, व्रत, श्राद्धका दिन, एकम, छठ, आठम, नवमी, चौदश, अमावस्या, पूर्णिमा तथा रविवार के दिन दतुअन नहीं करना चाहिये। दतुअन करना आवश्यक ही प्रतित हो तो मुख शुद्धि के लिए बारह कुल्ले अधिक करना चाहिये। छींक आवे तो "**शतं जीवेम शरदः**" यह मन्त्र बोले तथा जम्भाई आवे तो चुटकी बजानी चाहिये।

क्षौर - अमावस्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति व्रत, श्राद्ध, रवि, मंगल, तथा शनिवार के दिन हजामत नहीं करावे। गर्ग आदि मुनियों ने कहा है कि 'रविवार के दिन क्षौर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कराने से १ मंगलवार को ९ तथा शनिवार को ७ मास की आयु क्षीण होती है । बुधवार को ५ गुरुवार को १० तथा शुक्रवार को क्षौर कराने से ११ मास की आयु बढ़ती है । गृहस्थियों को सोमवार तथ गुरुवार को हजामत नहीं करानी चाहिये ।

तेल की मालिस का नियम

छठ, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, पूनम तथा रवि, मंगल, गुरु एवं शुक्रवार को तेल नहीं लगाना चाहिये । सुगन्धित तेल लगाने में दोष नहीं है । रविवार को तेल लगाने से ताप, मंगलवार को मृत्यु जैसा कष्ट, गुरुवार को हानि तथा शुक्रवार को दुःख होता है । सोमवार को तेल लगाने से शोभा में वृद्धि, बुधवार को धन प्राप्ति तथा शनिवार को सुख प्राप्त होता है । निषिद्ध दिन में तेल लगाना हो तो रविवार को तेल में फूल, गुरुवार को दूब, मंगलवार को मिट्टी तथा शुक्रवार को गोबर डालकर तेल लगाने से दोष नहीं लगता ।

स्नान, दान, देव पूजन आदि के आरम्भ में संकल्प का विधान है।

प्रातःकाल में स्नान करना आवश्यक है क्योंकि रात्रि में सोने से शरीर अपवित्र हो जाता है स्नान से इसकी शुद्धि होती है और पवित्रभाव मन में पैदा होता है । स्नान के लिए कुएँ के पानी से झरने का, झरने से सरोवर का, सरोवर से नदी का, नदी से तीर्थ का और तीर्थ से गङ्गा जी का जल श्रेष्ठ माना गया है । बहुत से लोग गरम पानी से स्नान करते हैं उनको संक्रान्ति, ग्रहण, सन्तान-उत्पत्ति, मरणाशौच, श्राद्ध, जन्मतिथि तथा किसी अपवित्र वस्तु का स्पर्श होने पर गरम पानी से स्नान नहीं करना चाहिये ।

घर में नित्य स्नान विधि

पट्टा (पाटला) या शिला के आसन कर पूर्वाभिमुख बैठकर हाथ-पैर धोकर आचमन करके तीन कुल्ले करके शिखा बाँधकर हाथ में जल लेकर संकल्प करे, यथा -

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेतबाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतखण्डे जम्बूद्वीपे शालिवाहन शके बौद्धावतारे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे ममात्मनः श्रुति-स्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात स्पर्शास्पर्श आसन भोजन शयन गमनादिषु कृतकर्म दोषनिरासद्वारा श्री परमेश्वरप्रीतये प्रातःस्नानमहं करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करके पात्र में ठण्डा पानी लेकर या उसमें गरम पानी डालकर गङ्गा आदि तीर्थों का स्मरण करके स्नान करे । यथा -

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।।
नर्मदे सिन्धु काबेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ।।

अर्थ स्पष्ट है । इत्यादि स्मरणपूर्वक स्नान करके वस्त्र से शरीर पोंछकर अन्य वस्त्र पहनकर आचमन करे । यह घर में स्नान करने की विधि कही गई ।

बीमारी में अथवा असमर्थता में हाथ पैर धोकर पवित्र होकर दोनों घुटनों के बीच में हाथ रखकर आचमन करने से स्नान होता है अथवा गीले वस्त्र से शरीर पोंछ कर धोए हुए वस्त्र पहनकर आचमन करने से स्नान होता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीर्थ में स्नान की विधि

संकल्प में - "मम कायिकाद्यखिलपातक निरासनार्थं त्रिविध तापोपशमनार्थं अमुकतीर्थे स्नानमहं करिष्ये" ऐसा कहकर जल छोड़े, पुनः तीर्थ-प्रार्थना करे -

त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता ।
याचितं देहि मे तीर्थ सर्वपापैः प्रमुच्यसे ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके इष्ट मन्त्र से तीर्थाभिमंत्रण करके तीन बार जल को घुमाकर जलाञ्जलि लेकर द्वेषरूप काम क्रोधादि शत्रुओं के नाश की भावना करके उस जल को अपने बाएँ भाग में डाल दे । फिर जल में प्रवेश करके सूर्याभिमुख होकर स्नान करे । स्नान के समय मृत्तिका, गोमय, भस्म आदि मर्दन करने का विधान है तथा दर्भ से मार्जन आदि किया जाता है जिससे पाप का नाश होकर पुण्य बढ़ता है ।

स्नानांग तर्पण

स्नान के समय देव, ऋषि, मनुष्य एवं पितरों को जलाञ्जलि दी जाती है जिसे 'तर्पण' कहा जाता है । पूर्व दिशा की तरफ मुख करके सव्य होकर (यज्ञोपवीत को बाएँ कंधे पर करके) देवतीर्थ (अंगुलियों के अग्रभाग) से ॐ कारपूर्वक देवताओं के लिए एक-एक जलांजलि देवे । हाथ में तीन कुशा लेकर पूर्वोक्त पद्धति से निम्न मंत्रों द्वारा देवतर्पण करे -

ओम् ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् । ओम् भूर्देवास्तृ-
प्यन्ताम् । ओम् भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् । ओम् स्वर्देवास्तृ-
प्यन्ताम् । ओम् भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्तर की तरफ मुख करके यज्ञोपवीत को गले में माला की तरह करके दो-दो अंजलि .जल देवें -

ओम् मरीच्यादि-ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ओम् सनकादि-मनुष्यास्तृप्यन्ताम् । ओम् भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ओम् भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ओम् स्वर्ऋस्यस्तृप्यन्ताम् । ओम् भूर्भुवःस्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् ।

दक्षिण की तरफ मुख करके यज्ञोपवीतको दाहिने कंधे पर करके पितृतीर्थ (अँगूठा और तर्जनी का मध्य भाग) से पितरों को तीन-तीन अँजलि जल देवे-

ओम् कव्यवाडादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम् । ओम् चतुर्दशयमास्तृप्यन्ताम् । ओम् भूः पितरस्तृप्यन्ताम् । ओम् स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् । ओम् भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् । (यहाँ अपने अपने गोत्र का नाम ले) अमुक गोत्रा अस्मत्पितृ-पितामह-प्रपितामहास्तृप्यन्ताम् । ओम् अमुक गोत्रा अस्मन्माता-पितामही-प्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् ओम् अमुक गोत्रा अस्मन्मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहाःसपत्नीकास्तृप्यन्ताम् । ओम् आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम् ।

इसके बाद पानी से बाहर एक अंजलि जल 'तृप्यन्तु' कह कर छोड़े तथा आचमन करके धोये हुए शुद्ध वस्त्र पहन ले और घर में आकर गृहकृत्य करे ।

आसन-मृगछाला, कुशा और ऊन का आसन पवित्र होता है । आसन झाड़कर ग्रन्थी उत्तर दक्षिण करके बिछावें ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिखा-सभी शुभ कार्य शिखा बॉधकर करने चाहियें। इष्ट मन्त्र या गायत्री मन्त्र बोलकर शिखा बाँधनी चाहिये। शिखा न हो तो शिखा स्थान का स्पर्श कर ले।

जैसे राष्ट्रध्वज राष्ट्र का प्रतीक माना जाता है। ध्वज का सम्मान-अपमान राष्ट्र का सम्मान-अपमान माना जाता है वैसे ही शिखा-सूत्र हिन्दु धर्म के प्रतीक हैं अतः हिन्दुओं को अवश्य ही शिखा रखनी चाहिये। शिखा न रखने से किए गए कर्म निष्फल हो जाते हैं।

हिन्दुओं को हिन्दुत्व का गौरव होना चाहिये। शिखा अवश्य रखनी चाहिये। शिखा न रखना हिन्दु धर्म का अपमान है।

तिलक-सन्ध्या-देवकार्य, पितृकार्य आदि तिलक किए बिना नहीं करने चाहिये। चन्दन आदि न हो तो पानी से भी तिलक किया जा सकता है। हुरसे के ऊपर से शिर में चन्दन नहीं लगाना चाहिये। किसी पात्र में लेकर चन्दन लगायें।

भस्म - प्रातः जलमिश्रित, दोपहर को चन्दन मिश्रित और सायंकाल में सूखी भस्म लगानी चाहिये। बाएँ हाथ में भस्म लेकर दाहिने हाथ से ढक कर निम्न मन्त्र बोले -

ओम् अग्निरिति भस्म। ओम वायुरिति भस्म। ओम् जलमिति भस्म। ओम् स्थलमिति भस्म। ओम् व्योमेति भस्म। ओम् सर्वंहवाइदं भस्म। ओम् मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति॥

अग्नि आदि ये पञ्चमहाभूत भस्म हैं यह सारा जगत् भस्म है। मन तथा चक्षु आदि ये इन्द्रियाँ भी भस्म हैं। परमात्मा से प्रकाशित हैं। उसकी प्रतीक यह भस्म ज्ञान देने वाली ऐश्वर्यरूप है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निम्न मन्त्र से भस्म लगावे-

ओम् त्र्यायुषं जमदग्ने : (ललाट में) । **ओम् कस्यपश्य त्र्यायुषम्** (कण्ठ में) । **ओम् यद्देवेषु त्र्यायुषम्** (भुजाओं में) । **ओम् तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** (हृदय में) भस्म लगाकर रुद्राक्ष की माला **'ओम् त्र्यम्बकं यजायहे'** इस मंत्र से धारण करे ।

यज्ञोपवीत

आचमन -प्राणायाम करके संकल्पके अन्त में **'नूतनयज्ञो-पवीतधारणमहं करिष्ये'** बोलकर जल छोड़े । सूत्र को त्रिगुणित करके जल से धोकर दस गायत्री मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें फिर तन्तु देवतओं का आवाहन करें ।

प्रथम-तन्तौ-ओंकारमावाहयामि । द्वितीय-तन्तौ-ओम् अग्निमावाहयामि । तृतीय-तन्तौ-ओम् सर्पानावाहयामि । चतुर्थ-तन्तौ-ओम् सोममावाहयामि । पंचम-तन्तौ-ओम् पितृनावाहयामि । षष्ठ-तन्तौ-औम् प्रजापतिमावाहयामि । सप्तम-तन्तौ-ओम् अनिलमावाहयामि । अष्टम तन्तौ-ओम् सूर्यमावाहयामि । नवम तन्तौ-ओम् विश्वान्देवानावाहयामि । ग्रन्थियों में-ओम् ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि । ओम् विष्णवे नमः । विष्णुमावाहयामि । ओम् रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि ।। प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यथास्थानं न्यसामि ।

मानसोपाचार से पूजन करके ध्यान करे ।

प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मत्वसिध्दयै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम् ॥

यज्ञोपवीत धारण

यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवताः त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीत-धारणेविनियोग : ।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यम्प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

इस मंत्र से पहले दाहिने हाथ में उठाकर फिर कण्ठ में धारण करे, वामस्कन्ध पर रखकर हृदय को स्पर्श करते हुए उपवीत करके गायत्री मंत्र का उच्चारण करके आचमन करे ।

जीर्णसूत्र त्याग

पुराने जनेऊ को माला की तरह कण्ठी करके सिर पर से पीठ की तरफ निकालकर यथाशक्ति गायत्री मंत्र का जप करे । पुराने जनेऊ को पानी में विसर्जन कर दे ।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

माला-शिव मंत्र के जप में रुद्राक्षकी माला, विष्णु मंत्र में तुलसी की माला लेनी चाहिये । ऐसे तो भिन्न-भिन्न देवताओं के लिए भिन्न-भिन्न मालाओं का विधान है तो भी तुलसी या चन्दन की माला सर्व सुलभ होने से सब में चल सकती हैं । प्रत्येक मनके के बीच गाँठ देकर बनाई हुई सुमेरु के सहित एक सौ नव मनकों की माला होनी चाहिये । माला को अनामिका अंगुलि पर रखकर अंगुठा तथा मध्यमा की सहायता से फेरनी चाहिये, सुमेरु को लांघना नहीं चाहिये । सुमेरु के पास से माला घुमाकर जप

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना चाहिये । माला का पूजन व प्रार्थना करके जप करने से विशेष फल मिलता है ।

माला पूजा - ओम् ऐं अक्षमालिकायै नमः ।

इस मंत्र से माला की पूजा करके निम्न मंत्र से-

माला की प्रार्थना करे ।

ओम् महामाये महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वगस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।
अविध्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिध्दयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ।।

हे मालाधिपते ! सुसिद्धि प्रदान करो, सर्वमंत्रार्थसाधिके ! महामाये सर्व शक्तिस्वरूपिणि महामाले ! धर्म आदि चतुर्वर्ग तुम्हारे स्वरूप में स्थित हैं अतः सब कार्य सिद्ध करो यह मेरी प्रार्थना है ।

देव पूजन-जप आदि कार्यों में घी का दीपक जलाना चाहिये ।

दीप मन्त्र

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्म-साक्षीह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ।।

हे दीप ! तुम देवरूप हो, कार्य साक्षी तथा विघ्न के नाशक हो । जब तक कर्म पूर्ण हो तब तक स्थिर रहो ।

अगरबत्तियाँ धूप भी जला लें

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जप-ज़प करते समय दाहिने हाथ को गोमुखी में रखकर अथवा वस्त्र से ढक कर पद्मासन, सिद्धासन, या सुखासन पर बैठकर हाथ को हृदय के पास रखकर जप करना चाहिये। जप के समय हिलना-डुलना, सोना, बोलना तथा माला का गिरना अच्छा नहीं। जो बोला जाय तो पुनः आचमन करके इष्ट-चिन्तन करके जप शुरु करे। जप में स्थान विशेष की भी विशेषता मानी गई है। घर में जप करने से एक गुना, गोशाला में सौगुना तथा वन-बगीचा एवं तीर्थ में किया गया जप हजार गुना तथा पर्वत पर दस हजार गुना, नदी किनारे लाख, देवालय में करोड़ तथा शिवजी के पास बैठकर जप करने से अनन्त गुना फल मिलता है। जप पूर्ण होने पर जिस आसन पर बैठकर जप किया हो उस आसन के निचे की मिट्टी मस्तक कर तिलक की तरह लगानी चाहिए जिससे फल कर्ता को ही मिलता है नहीं तो देवराज इन्द्र इसका फल ले जाता है।

जप के प्रकार- वाचिक, उपांशु तथा मानसिक ऐसे जप तीन प्रकार का होता है। वाणी से बोल कर जो जप किया जाय वह **वाचिक** जप है, पास में बैठा हुआ दूसरा मनुष्य न सुन सके तथा जिसमें जीभ व होंठ हिलते रहें ऐसा धीरे-धीरे किया गया जब **उपांशु** कहा जाता है तथा जीभ-होठ आदि हिलाये बिना केवल मन के द्वारा मंत्र के अक्षरों की पुनरावृत्ति होती रहे यह **मानसिक जप** कहा जाता है। इसमें पूर्व की अपेक्षा उत्तर २ जप श्रेष्ठ माना गया है। जब तक मानस जब सिद्ध न हो तब तक वाचिक या उपांशु जप करना चाहिये। जप पूर्ण होने पर इष्टदेव को समर्पित् कर दे।

सन्ध्या

द्विजों को विधि पूर्वक त्रिकाल सन्ध्या अथवा द्विकाल सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये। सन्ध्या नहीं करने से उनका तेज नष्ट हो जाता है। आध्यात्मिक उत्थान नहीं होता अपितु पाप बढ़ता है अन्त में पाप योनियों में जन्म लेना पड़ता है। स्त्रियों तथा द्विजेतर मनुष्यों कोभी इष्ट मन्त्र का जप अथवा गुरुप्रदत्त मंत्र का जप नियम से करना चाहिऐ। सूर्य को अर्ध्य दें। शिवजी की पूजा करें, तुलसी में पानी डालें, धूप-दीप करके फल-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फूल आदि देवों को समर्पित करे तथा विधिपूर्वक षोडशोपचार, पंचोपचार अथवा उपलब्ध सामग्री से देव पूजन करे। देवपूजन की विधि आगे बताएँगे। अब सन्ध्या कीजिये।

पूर्वोक्त विधि से स्नानादि करके स्वच्छ धोये हुए वस्त्र पहनकर उपवस्त्र लेकर कुशा-कम्बल आदि विहित आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर स्वच्छ मँजे हुए पंचपात्र में शुद्ध जल लेकर तथा सन्ध्या में उपयोगी अन्य सामग्री लेकर सन्ध्या करें।

सन्ध्या का अर्थ- सं-पूर्वक 'ध्यै' धातु से सन्ध्या शब्द बना है जिसका अर्थ- 'सम्यक् ध्यान' ईश्वर का चिन्तन। इस संध्या के द्वारा जीव का ईश्वर के साथ संधि-मिलन यानी योग होता है। अहोरात्र के सन्धि काल को सन्ध्या कहा गया है, देखिए -

अहोरात्रस्य यः सन्धिः सूर्यनक्षत्रवर्जितः।
सा तु सन्ध्यासमाख्याता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥

सूर्य तथा नक्षत्रों से रहित - जो दिन रात की सन्धि है। तत्त्वदर्शी मुनियों ने उसे सन्ध्या कहा है। यह सन्ध्या उत्तमा, मध्यमा तथा अधमा के भेद से तीन प्रकार की है, यथा **प्रातः संध्या**- तारों के रहते जो संध्या की जाय-वह उत्तमा है तारों के छिपने पर की जाय - वह मध्यमा तथा सूर्योदय होने पर जो की जाय-वह अधमा है इस प्रकार प्रातःसन्ध्या तीन प्रकार की है। वैसे ही सायंसन्ध्या भी तीन प्रकार की है, जैसे सूर्य के रहते की गई सायं सन्ध्या - उत्तमा है सूर्य के अस्त होने पर - मध्यमा तथा तारों के उदय होने पर की गई सायं - सन्ध्या - अधमा कही गई है।

स्नान, होम, जप, दान, स्वाध्याय पितृकर्म तथा सन्ध्यावन्दन में कुशा की पवित्री अवश्य धारण करनी चाहिए। जो द्विज कुशपवित्री युक्त हाथ से आचमन करता है उसको सोमपान का फल तथा जो भोजन करता है उसको यज्ञ का फल प्राप्त होता है। भोजन के बाद पवित्री उच्छिष्ट हो जाती है अतः उसका त्याग कर दे। दर्भ की पवित्री के अभाव में सोने की मुद्रिका पहन ले। अब निम्न मन्त्र से पवित्री पहन कर बाएँ हाथ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में पानी लेकर दाएँ हाथ से अपने शरीर पर तथा सन्ध्या के सामान पर सब दिशाओं में जल छीटें-

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करे -

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥

ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥

अर्थ- हे (ॐ) परमेश्वर तू (अमृत-उपस्तरणं) अमरपन का आच्छादन है । ऐसा (सु-आह) सुन्दर कथन है । हे परमेश्वर । तू (अमृत-अपिधानं असि) अमृत का आवरण है, ऐसा मेरा आत्मा कहता है । हे परमेश्वर ! आप अमरभाव से जगत् के घट-घट एवं अणु-अणु में व्यापक हैं । यह आचमनीय जल मुझे शुद्ध एवं अमर बनावे ।

हे परमेश्वर ! **(मयि सत्यं श्रयतां)** मेरे अन्दर सत्य स्थिर रहे । **(यशः)** मुझे यश प्राप्त होवे । **(श्रीः)** मेरे अन्दर शोभा और शक्ति स्थिर रहे तथा **(श्रीः)** मेरे पास धन रहे । अतः मैं **(स्व-आ-हा)** अपने सर्वस्व का अर्पण करता हूँ ।

भावार्थ-हे प्रभो ! मैं अपना तन, मन, धन सब आपके चरणारविन्द में समर्पण करता हूँ । आपकी अमृतमयी कृपादृष्टि से मैं सत्य का पालन करूँ कि जिससे मेरा यश बढ़े मुझे शोभा तथा शक्ति एवं अमरपद रूपी परम धन प्राप्त हो ।

भस्म धारण करके, शिखा बाँधकर रुद्राक्ष की माला पहन कर संकल्प में - **'श्री परमेश्वर**

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रीतये प्रातःसन्ध्योपासनमहं करिष्ये' बोलकर जल छोड़े ।

'पृथ्वि त्वया' इत्यादि से भूमि प्रार्थना करके अपने आसन का प्रोक्षण करे, फिर भूतशुद्धि करे । यथा -

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥
सर्वेषामविरोधेन सन्ध्याकर्म समारभे ॥

मेरे कार्य में विघ्न बाधा करने वाले भूत प्रेत राक्षस आदि भगवान् शिव की आज्ञा से यहाँ से अपने -२ स्थान में चले जाएँ मैं यहाँ सन्ध्या कर्म का आरम्भ करता हूँ । (बाम पैर की एड़ी को तीन बार भूमि में पछाड़े) ।

इन्द्रिय स्पर्श

बाएँ हाथ में पानी लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका दो अंगुलियों से मन्त्रों में निर्दिष्ट इन्द्रिय का स्पर्श जल से करे और जिस इन्द्रिय का स्पर्श करे, उसमें सौ वर्ष पर्यन्त अव्याहत शक्ति स्थिर रहे, ऐसी भावना करे, जैसे सौ वर्ष पर्यन्त मेरी वाणी में वक्तृत्व शक्ति, प्राण में संचार गति एवं बल, आँख में देखने की शक्ति, कान में सुनने की शक्ति, नाभिस्थान में समान शक्ति बल, हृदय में बल तथा यश, कण्ठ में कोमलता एवं बल, मस्तिष्क में ज्ञान बल, भुजाओं में अद्भुत पराक्रम शक्ति तथा हाथों के तल एवं पृष्ठ भाग में बल एवं यश स्थिर रहे । ऐसी भावना करते हुए अब नीचे के मन्त्रों से इन्द्रिय स्पर्श करे ।

ओम् वाक् वाक् । ओम् प्राणःप्राणः । ओम् चक्षुःचक्षुः । ओम्

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रोत्रम् श्रोत्रम् । ओम् नाभिः । ओम् हृदयम् । ओम् कण्ठः । ओम् शिरः । ओम् बाहुभ्यां यशोबलम् । ओम् करतल-करपृष्ठे।

मन्त्रों के भावार्थ ऊपर दिये हैं ।

मार्जन

इन्द्रिय स्पर्श में जिन दो अंगुलियें से स्पर्श किया था अब उन्हीं से मार्जन अर्थात् जल के छींटे (मन्त्र बोल-बोल कर एक एक मन्त्र से एक अंग पर) दें । और भावना करें कि मेरे सब अंग पवित्र हो रहे हैं-

ओम् भूः पुनातु शिरसि ॥ १ ॥
ओम् भुवः पुनातु नेत्रयोः ॥ २ ॥
ओम् स्वः पुनातु कण्ठे ॥ ३ ॥
ओम् महः पुनातु हृदये ॥ ४ ॥
ओम् जनः पुनातु नाभ्याम् ॥ ५ ॥
ओम् तपः पुनातु पादयोः ॥ ६ ॥
ओम् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि ॥ ७ ॥
ओम् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥ ८ ॥

भावार्थ - हे सर्वव्यापक ईश्वर ! मेरा अस्तित्व मेरे शिर में ज्ञान देकर पवित्रता करे । हे ईश्वर । चित् शक्ति मेरे नेत्रों की शुद्धि करे । हे परमात्मन् ! आत्मशक्ति मेरे कण्ठ की पवित्रता करे । हे ईश्वर ! मेरे महत्त्व से मेरा हृदय पवित्र हो । हे ईश्वर । मेरी जननशक्ति नाभिस्थान की पवित्रता करे । हे परमात्मन् ! मेरी सहिष्णुता या तपः शक्ति पावों की शुद्धि करे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे ईश्वर ! फिर मेरे शिर में सत्य पवित्रता करे तथा (अ-उ-म्) जाग्रत, स्वप्न एवं सुषुप्ति ये मेरी अवस्थायें तथा मेरी (खं) इन्द्रियाँ और मेरा (ब्रह्म) ज्ञान सर्वत्र मेरी शुद्धि करे ।

भावार्थ- हे अन्तर्यामी प्रभो ! आपकी कृपा से मेरे शिर, नेत्र, कण्ठ , हृदय, पैर एवं समस्त शरीर पवित्र रहे । शिर में स्मरण शक्ति रहे (पागलपन न आवे) । नेत्रों में दिव्य दृष्टि रहे (अन्धता न आवे) । कण्ठ रोगादि से रहित कोमल रहे (क्रूतरा न आवे) हृदय में आपकी ज्ञानमयी भक्ति रहे (नास्तिकता न आवे) नाभिस्थान की पवित्रता रहे । (जननशक्ति न मिगड़े) । पैरों में गमन शक्ति रहे (पंगुता न आवे) । पुनः मेरे शिर में पवित्रता हो । इस मन्त्र में सत्य निष्ठा के अभ्यास से पुनः शिर की पवित्रता करने का उपदेश दिया गया है । अर्थात् हमारा मस्तिष्क ज्ञान से भरपूर सत्य युक्त शुद्ध हो ।

प्राणायाम

पूरक कुम्भक एवं रेचक यह तीन भेद प्राणायाम के हैं । पूरक के समय दिव्य गुण एवं शक्ति आरोग्यता आदि की प्राप्ति, कुम्भक के समय उनकी स्थिरता एवं रेचक के समय आन्तरिक दोषों का निराश हो रहा है, ऐसी भावना करनी चाहिये ।

प्राणायाम का विनियोग

ओङ्कारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः । परमात्मा देवता । व्याहृतीनां विश्वामित्र-जमदग्नि-भरद्वाज-गौतमात्रि-वसिष्ठकश्यपा ऋषयः । अग्नि-वायु-सूर्य-बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवा देवताः । गायत्र्युष्णिनुष्टुब्-बृहती-पङ्क्ति-त्रिष्टुब्-जगत्यश्छन्दांसि । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । गायत्री छन्दः । आपो ज्योतिरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषि : ब्रह्माग्निवायुसूर्या :

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवताः । यजुश्छन्दः । प्राणायामे विनियोगः ॥

प्राणायाम का मंत्र

ओम् भूः ओम् भुवः ओम् स्वः ओम् महः ओम् जनः ओम् तपः ओम् सत्यम् । ओम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ओम् आपोज्योतिरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

यहाँ स्वाधीनता,संयम का अनुभव करे और अपनी अस्तित्व ज्ञानादि शक्तियों का मैं प्राण के द्वारा निरोध करता हूँ । यह भावना करे ।

कम से कम तीन प्राणायाम करे ।

अधमर्षणम्

निम्न मन्त्रों का अर्थ चिन्तन करते हुए ईश्वर का माहात्म्य एवं अपने किये पापों का प्रायश्चित्त तथा भविष्य में पाप न करने की प्रतिज्ञा करना ही अघमर्षण का उद्देश्य है ।
ऋषि-अघमर्षणो माधुच्छन्दसः । देवता भाववृत्तम।

अघ यानी पाप और मर्षण यानी नष्ट करना अर्थात् मेरे जो पाप हैं मैं भगवान् के पास जाकर उनका नाश करता हूँ । इस भावना के साथ अघमर्षण करने पर पाप करने की भावना नष्ट हो जाती है ।

दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर नाक के पास ले जाकर सूँघते हुए नीचे के मन्त्र बोलें-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मन्त्र

ओम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥
समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥
सूर्याच्चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ३ ॥

ऊपर के मंत्र बोल कर हथेली में लिए हुए जल को देखे बिना ही अपने बायें हाथ की तरफ पीछे डाल दे फिर हाथ धो ले ।

शब्दार्थ-(अभि-इद्धात्) प्रदीप्त **(तपसः)** ईश्वर के आत्मिक सामर्थ्य से ऋत और सत्य ये सार्वकालिक और सार्व-भौमिकता नियम प्रथम **(अधि-अजायत)** उत्पन्न हो गये । **(तत्ः)** पश्चात् **(रात्रिः-अजायत)** महा प्रलय की रात्रि उत्यन्न हो गई । तदनन्तर प्रकृति का समुद्र **(अर्णवः)** अशान्त हो गया । इस प्रकृति के प्रक्षुब्ध से **(सम्वत्सरः)** काल **(अधि-अजायत)** उत्पन्न हो गया । **(विश्वस्य-मिषतः)** काल **(अधि-अजायत)** उत्पन्न हो गया । **(विश्वस्य-मिषतः)** सब जगत् के हल-चल को **(वशी)** वश में रखने वाले **(धाता)** विधाता ईश्वर ने **(यथा पूर्व)** पूर्व सृष्टि के समान ही आकाश, द्युलोक, अन्तरिक्ष पृथिवी, सूर्य चन्द्र, दिन, रात आदि सब **(विदधत्)** बनाया और **(अकल्पयत्)** यथा स्थान सुव्यवस्थित स्थापित कर दिया है ।

भावार्थ-इस सृष्टि के पहले भी ऐसी ही सृष्टि थी । उसके प्रलय में भी ईश्वर के ऋत और सत्य नाम के अटल नियम अपना कार्य सूक्ष्म रूप से कर रहे थे । पूर्व सृष्टि के अन्त के पश्चात् प्रलय रात्रि का प्रारम्भ हुआ । नियत समय बीतने पर जब दूसरी सृष्टि उत्पन्न होने का समय प्राप्त हुआ तब दिव्य प्रकृति में हलचल होने लगी । ईश्वर के वे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऋत सत्य नाम के नियम भी जगद्रचना योग्य हल-चल करने लगे । जिससे प्रकृति समुद्र में बड़ी भारी हल-चल मची । इससे समय उत्पन्न हो गया । जगत् की सब हल-चल को स्वाधीन रखने वाले ईश्वर ने फिर इस वर्तमान जगत् की उत्पत्ति की । ईश्वर ने यह जगत् ऐसा रचा कि जैसा पूर्व कल्प में था । इस जगद्रचना चक्र प्रवाह से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य के किये हुए शुभाशुभ कर्म नाश नहीं होते अपितु उनका फल मनुष्य के एक जन्म में नहीं, तो दूसरे जन्म में, दूसरे में नहीं, तो तीसरे में, एक कल्प में नहीं नहीं, तो कल्पान्तर में भी भोगना पड़ता है । निद्रा, मृत्यु और प्रलय ये तीन प्रलय हैं । निद्रा दैनिक प्रलय है । मृत्यु प्राणिमात्र का प्रलय है तथा प्रलय सर्व जगत् का महाप्रलय है । यह बात इसलिये इस समय याद करने योग्य है कि किये हुए पाप का दण्ड भोगने को मैं तैयार हूँ और आगे ऐसा अनुचित कर्म नहीं करूँगा । दिन का किया हुआ ऋण रात के पश्चात् दूसरे दिन भी विद्यमान रहता है वैसे ही मृत्यु या महाप्रलय के बाद भी कर्म भोगे बिना शेष रहते हैं । अतः इस विषय में सूक्ष्म विचार करना चाहिये ।

निम्न मंत्र से तीन आचमन करे

ओम् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभि श्रवन्तु नः ॥

शब्दार्थ -(देवी:आपः) दिव्यजल (नः) हम सबके लिये (शं) सुखकारी (अभिष्टये) इच्छित फल के लिये (पीतये संरक्षणकारी (भवन्तु) हों । तथा यह जल (नः) हम सबके (योः) रोगादि का नाशक एवं (शं) सुख की (अभिश्रवन्तु) वर्षा करें ।

भावार्थ - आचमनीय जल दिव्य होने से रोगनाशक एवं सुख-शान्ति तथा अभीष्ट की सिद्धि का देने वाला है।

अब गायत्री मन्त्र से सूर्यनारायण को तीन अर्घ्य देवे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनसा परिक्रमण

निम्न मंत्रों के अर्थ का चिन्तन कीजिये । ईश्वर की दिव्व शक्तियाँ किस प्रकार रक्षण करती हैं इस विचार के साथ परमात्मा की व्यापकता पर ध्यान दीजिये और अपने को ईश्वर के संरक्षण में निर्भय पाइये ।

ओम् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽदित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान्द्वेष्टि वं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

शब्दार्थ - (प्राची दिक्) पूर्व दिशा में (अग्निः) प्रकाशक स्वरूप ईश्वर (अधिपतिः) अधिपति हैं । (असितः) अन्धकार से (रक्षिता) रक्षा करने वाला हैं । (आदित्या) सूर्य की किरणें (इषवः) बाणरूप साधन हैं (तेभ्यो अधिपतिभ्यो नमः) उस स्वामी के लिये नमस्कार हो । (रक्षितृभ्यो नमः) रक्षक के लिये नमस्कार हो । (इषूभ्यो नमः) बाणों के लिये आदर हो । (एभ्यः नमः अस्तु) इन सबके लिये नमस्कार हो । (योऽस्मान्द्वेष्टि) जो एक दुष्ट हम सबसे द्वेष करता है और (यं वयं द्विष्मः) हम सब जिससे द्वेष करते हैं। (तम्) उस द्वेषी को (वः) आपके ज्ञानरूप (जम्भे) दाढ़ में (दध्मः) रखते हैं ।

ओम् दक्षिणादिगीन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो. पूर्ववत् ॥ २ ॥

शब्दार्थ - (दक्षिणा दिक्) दक्षिण दिशा का (इन्द्रः अधिपति) शत्रु निवारक शूर स्वामी है । (तिरश्चिराजी राक्षिता) मर्यादा का अतिक्रमण न करने वाला संरक्षक और (पितर इषवः) पितृ शक्तियां या चन्द्र किरणें (शस्त्र रूप से संरक्षण करने के साधन) बाण हैं । तेभ्यो. इत्यादि अर्थ पूर्ववत् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो. पूर्ववत् ॥ ३ ॥

शब्दार्थ- (प्रतीची दिक्) पश्चिम दिशा का (वरुणः अधिपतिः) सर्वश्रेष्ठ ईश्वर स्वामी है । (पृत्-आ-कुःरक्षिता) स्पर्धा में उत्साह धारण करने वाला संरक्षक और (अन्नं इषवः) अन्न बाण (रक्षण करने के साधन) हैं । उन अधिपतियों के लिए नमस्कार हो। शेष पूर्ववत् ॥

ओम् उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः ॥ तेभ्यो. पूर्ववत् ॥ ४ ॥

शब्दार्थ - (उदीची दिक्) उत्तर दिशा का (सोमः अधिपतिः) शान्त अधिपति है (स्व-जः रक्षिता) स्वयंसिद्ध रक्षक और (अशनि इषवः) विद्युत्तेज इषु हैं । उन अधिपति. इत्यादि पूर्ववत् ॥

ओम् ध्रुवादिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः तेभ्यो. पुर्ववत् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ-(ध्रुवा दिक्) स्थिर दिशा का (विष्णुः अधिपतिः) व्यापक ईश्वर अधिपति है (कल्माषग्रीवः रक्षिता) कर्म कर्ता संरक्षक और (वीरुधः इषवः) वनस्पतियाँ इषु हैं । शेष पूर्ववत् ।

ओम् ऊर्ध्वादिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्ष मिषवः तेभ्यो. पूर्ववत् ॥ ६ ॥

शब्दार्थ- (उर्ध्वादिक्) ऊर्ध्व दिशा का (बृहस्पतिः अधिपतिः) आत्मज्ञानी अधिपति है (श्वित्रः रक्षिता) पवित्र संरक्षक है और (वर्षं इषवः) वर्षा का अमृतमय जल संरक्षण

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का साधन इषु हैं । सर्वव्यापक ज्ञान सम्पन्न स्वामी इत्यादि पूर्ववत् ॥

भावार्थ-मंत्रों का आशय यह है कि 'तत्तद्दिशाओं के अधिपति, संरक्षक एवं साधना सहायक गुणों (तत्त्वों) का समादर करना तथा द्वेषियों का निराकरण करके न्याय सभा में देकर योग्य दण्ड देना एवं परमात्मा की अनन्त शक्तियों की व्यापकता एवं चेतना का सम्पूर्ण संसार में अनुभव करना और आनन्द प्राप्त करना है ।

उपस्थान मंत्राः

उद्वयमुदुत्यमितिद्वयोः प्रस्कण्वऋषिः सूर्योदेवता अनुष्टुप् छन्दः । चित्रं देवानामित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिः । सूर्यो देवत । उष्णिक् । छन्दः । सूर्योपस्थाने विनियोगः ।

ओम् उद्वयन्तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवन्देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥
उदुत्यं जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ २ ॥

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँश्रृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥ ४ ॥

शब्दार्थ - (वयं) हम सब (तमसःपरि) अविद्यान्धकार से परे (उत्तरं) उत्कृष्ट (स्वः)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वकीय जीवात्माका (पश्यन्त) अनुभव करते हुए (देवत्रा-देवं) सब दिव्य पदार्थों का रक्षक प्रकाशक और (सूर्य) स्वयंप्रकाशी एवं प्रेरक (उत्तमं) सब में उत्कृष्ट (ज्योतिः) परमात्म तेज को (अगन्म) प्राप्त करते हैं ।

भावार्थ- प्रकृति से परे सबके प्रकाशक एवं प्रेरक परमेश्वर को हम (जीवात्मा) प्राप्त हों ॥ १ ॥

शब्दार्थ-जो (देवानां) सब देवताओं में (चित्रं) विलक्षण और (अनीकं) बलवान् है (मित्रस्य) सूर्य (वरुणस्य) वरुण और (अग्नेः) अग्न्यादिकों को भी जो (चक्षुः) प्रकाश देता है । (द्यावापृथिवी) द्युलोक, पृथिवी और (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्ष में भी जो (आ अप्रा) व्यापक है (तस्थुषः च) स्थावर (जगतः) जंगमका भी (आत्मा) अन्तरात्मा है वह (सूर्य) सर्वोत्पादक विश्वात्मा परमेश्वर मेरे अन्तःकरण में (उत् अगात) प्रकाशित (प्रकट) होवे । (स्व-आ-हा) मैं पूर्णत्याग करता हूँ ।

भावार्थ-स्थावर जंगम जगदुत्पादक प्रकाशक परमात्मा है । मैं स्वार्थत्यागपूर्वक उसकी उपासना करता हूँ । वह परमात्मा मेरे अन्तःकरण में प्रकट होवे ओर मैं आनन्द रूप बनूँ ॥ ३ ॥

शब्दार्थ-(तत् देव हितं) वह देवों के लिए हितकारक (शुक्रम् चक्षुः) पवित्र ज्ञान तेज (पुरस्तात्) मेरे सम्मुख (उत् चरत) उदित हो गया है । उस तेज में रहते हुए हम सब (शरदः शतं पश्येम) सौ वर्ष देखें (शरदः शतं जीवेम) सौ वर्ष जीते रहें । (शरदः शतं श्रृणुयाम) सौ वर्ष सुनें (शरदः शतं प्रब्रवाम) सौ वर्ष प्रवचन करें (शरदः शतं अदीनाः स्याम) सौ वर्ष दीन न बनते हुए रहें (शरदः शतात् भूयः) सौ वर्ष से भी अधिक आयु प्राप्त करके आनन्द के साथ रहें ।

भावार्थ-परमात्मा ज्ञानस्वरूप है । उसका ज्ञान एक रस एवं नित्य उदित है विद्वान् उसका अनुभव करते हैं और साथ ही उससे प्रार्थना करते हैं कि हे सर्व हितकारकेश्वर!

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपकी कृपा से हम सब सौ वर्ष जीवें, देखें, सुनें, प्रवचन करें । अदीन होकर रहें तथा सौ वर्ष से भी अधिक आयु प्राप्त करके आनन्द में रहें ।

उपस्थान (उप) समीप के (पास के) स्थान में बैठना ही उपस्थान है । अर्थात् उपर्युक्त चारों मन्त्र जीवात्मा को परमात्मा के पास वैठने का भाव व्यक्त कर रहे हैं । अतः आप अपने मन में ऐसी ही भावना कीजिये कि मैं प्रकृति से ऊपर उठकर परमात्मा के पास उनकी गोद में बैठा हूँ । आनन्द निमग्न हूँ ।

गायत्र्यावाहनम्

तेजोऽसीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः । आज्यं देवता । जगती छन्दः । यजुर्गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

ओम् तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसिधाम नामासि ।
प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देव यजनमसि ।

गायत्र्युपस्थानम्

तुरीय पदस्य विमल ऋषिः । परमात्मा देवता । गायत्री छन्दः । गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ओम् गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शतायपदाय परोरजसे सावदोम् ।

गुरु मंत्र गायत्री जपः

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः परमात्मा देवता । गायत्री छन्दः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः । अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्री छन्दः । गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । गायत्री छन्दः । उपात्तदुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर-प्रीत्यर्थं गायत्री मंत्र जपे विनियोगः । ओम् भूर्भुवः स्वः । ओम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

एक सौ आठ, अठाईस अथवा दश बार जप करके परमात्मा को समर्पित कर दे । फिर धेनु आदि मुद्रा प्रदर्शित करे ।

मन्त्रार्थ-(ओम्) उत्पत्ति, स्थिति, लयकर्ता (भुः) सत् (भुवः) चित् (स्वः) आनन्द स्वरूप (सवितुः) प्रेरक (देवास्य) ईश्वर के (तत् वरेणयं भर्गः) उस प्राप्त करने योग्य श्रेष्ठ स्वरूप का हम सब (धीमहि) ध्यान करते हैं । इसलिये कि (यः) जो (नः) हम सबकी (धियः) बुद्धियों को धर्मार्थादि चतुर्विध पुरुषार्थ में (प्रचोदयात्) विशेष प्ररेणा करे ।

भावार्थ-सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म ही जगदुत्पत्ति, स्थिति एवं लय का कर्ता है उसी के दिव्यस्वरूप का हम सब को ध्यान करना चाहिये (तुच्छ तान्त्रिक देवी-देवताओं का नहीं) । उसी की दिव्य कृपा प्रेरणा से ज्ञानमयी बुद्धि प्राप्त करके हम सब उस परमात्मा के अविनाशी परम पद को प्राप्त कर सकते हैं ।

आप यथा शक्ति अधिक से अधिक अर्थ चिन्तन पुर्वक जप करें ।

नमतम्

ओम् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शब्दार्थ-(शं भवाय नमः) शान्ति देने वाले ईश्वर के लिये मेरा नमस्कार है । (मयो भवाय नमः) सुखदायक भगवान् को मेरा नमन है । (शं कराय नमः) लौकिक सुख देने वाले ईश्वर के लिये मेरा नमस्कार है । (मयःकराय नमः) पारलौकिक सुख करने वाले ईश्वर के लिये मेरा नमस्कार है (शिवाय) कल्याण स्वरूप ईश्वर के लिये (च) तथा (शिवतराय नमः) अत्यन्त मङ्गलमय शिव परमात्मा के लिये मेरा नमस्कार है ।

भावार्थ-लौकिक एवं पारलौकिक शान्ति सुख आनन्दैश्वर्यप्रद मङ्गलमय भगवान् शिव के लिए नमस्कार करना अर्थात् उसकी सर्वतोभावेन शरण ग्रहण करना है । साथ ही प्रार्थना भी करनी है कि हे मङ्गलमय शिव परमात्मन् । आपकी दिव्यभक्ति मेरे हृदय में रहे । इस भावना से नम्रता पूर्वक प्रेम भाव से प्रभु को नमस्कार करना चाहिये ।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः. ॥

हे प्रभो ! आपकी कृपा से त्रिविधताप की शान्ति होवे । अथवा वैयक्ति, सामाजिक एवं जागतिक शान्ति प्राप्त होवे ।

इस प्रकार सन्ध्या पूर्ण करके परमेश्वरार्पण करके आचमन करके गृह कार्य में लग जाय ।

ॐ शिवः सर्वं सर्वत्र

सूतक में सन्ध्या

सूतके मृतके चैव सन्ध्या कर्म न संत्यजेत् ।
मनसोच्चारयेन्मन्त्रान्प्राणायाममृते द्विजः ॥ (पुलस्त्यः)

सूतक- मृतक में सन्ध्या कर्म का त्याग न करे । मन से मंत्रों का उच्चारण करे-अमंत्र-प्राणायाम करे **'कुर्यात्प्राणायाम-मंत्रकम्'** गायत्री मंत्र का सम्यक् उच्चारण करके

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सूर्य को प्रातः तीन, मध्याह्न में एक एवं सायंकाल में तीन अर्घ्य प्रदान करे । जल से अपनी प्रदक्षिणा करके, मन से दश बार गायत्री जप करके सूर्य का ध्यान करते हुए नमस्कार करे । सूतक में वैश्वदेव, दान, प्रतिगृह तथा परान्न भक्षण आदि न करे ।

कालातिक्रम में प्रायश्चित

उदयास्तमयादूर्ध्वं यावत्स्यात् घटिकात्रयम् ।
तावत्संध्यामुपासीत्तं प्रायश्चितं ततः परम् ॥

सूर्योदय तथा सूर्यास्त के पहले जब तक तीन घड़ी का समय रहे तब तक सन्ध्योपासना करनी चाहिये । इसके बाद प्रायश्चित्त होता है ।

संध्या काल में अतिक्रम हो जाय तो चौथा अर्घ्य गायत्री मंत्र से श्री सूर्यनारायण को देवे । कुछ लोग **'ओम् आकृष्णेन'** इस मंत्र से चतुर्थ अर्घ्य देना कहते हैं कुछ लोग **'नमस्ते'** के दो तथा **'पुनर्मनः'** एवं **'ऋचं वाचं'** इन वेद मंत्रों का पाठ करके संध्या करे- यही प्रायश्चित बताते हैं ।

सन्ध्या न करने से दोष

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनानुपासिता ।
जीवमानो भवेच्छूदो मृतः श्वा जायते ध्रुवम् ॥

जिसने सन्ध्या नहीं जानी, या सन्ध्या की उपासना नहीं की वह जब तक जीता है तब तक शूद्र की तरह रहता है और मर कर कुक्कुर होता है । व्यासजी ने कहा है कि 'सन्ध्या काल के प्राप्त होने कर जो आलस्य से समय व्यतीत करता है वह सूर्य हत्या को प्राप्त होता है तथा उल्लू (पक्षी विशेष) की योनि को प्राप्त होता है । दक्ष ने कहा है कि 'सन्ध्याहीन मानव नित्य अपवित्र है तथा सभी कर्मों के अयोग्य है । सन्ध्या को छोड़ कर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो अन्य कर्मों में लगा रहता है वह उसके फल का भागी नहीं होता ।'

अतः जिसको यह ज्ञान है कि 'मैं द्विज हूँ' उसको त्रिकाल सन्ध्या सदा अवश्य करनी चाहिये । इस विषय में मनु की घोषणा तो बुहत जोरदार है, देखिये-

नोपतिष्ठति यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम् ।
स शूद्रवत् बहिष्कार्यः सर्वस्माद्विजकर्मणः ।।

जो प्रातः सन्ध्या नहीं करता तथा सायं सन्ध्या की भी उपासना नहीं करता वह शूद्रवत् है और वह सभी द्विज कर्मों से बहिष्कृत करने योग्य है ।

पंचायतन देवपूजा

सनातन धर्म में पंचदेवों का वैशिष्ट्य है । पंचदेवों में गणेश-विष्णु-शिव-देवी तथा सूर्य इनका ग्रहण है । इनकी स्थापना का प्रकार इसी पुस्तक में पृष्ठ २८ में दिया जा चुका है। सूर्योदय से पहले स्नानादि करके पवित्र होकर देवमन्दिर में जाकर घण्टा बजाकर देव को जागृत करे, स्तुति-मंगलार्ति नमस्कार करके प्रातः सन्ध्या करे । सूर्य को नमस्कार करे । फिर देव मंदिर के द्वारप्रदेश में खड़ा होकर आचमन करके **'अपस-र्पन्तु'** इत्यादि मंत्रों के द्वारा भूतों का निवारण करे फिर नम्र होकर देव मंदिर में प्रवेश करके देव के आगे भूमि में बैठकर गणेशादि देवों को नमस्कार करके **'पृथ्वि त्वया'** इत्यादि से आसन का प्रोक्षण करके कुशा, कम्बल आदि अपने आसन कर पूर्वाभिमुख होकर बैठे । शिखा बाँध ले । पवित्री धारण करले बाँये हाथ में तीन कुशा तथा दाहिने हाथ में दो कुशा लेकर देव पूजा का आरम्भ करे ।

पहले आचमन-प्राणायाम करके **'आनो भद्राः'** इत्यादि भद्र-सूक्त का पाठ करे । फिर सुशान्तिर्भवतु ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वस्तिवाचन

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । श्री परमगुरुभ्यो नमः । श्री परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः । श्री परात्पर गुरुभ्यो नमः । ओम् लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमोनमः । अविघ्नमस्तु ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।
सर्व मङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनं हरिः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽऽध्रियुगं स्मरामि ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ॥

हाथ में साक्षत जल लेकर संकल्प करे -

ओम् तत्सत् अद्य. एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम आत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त-शुभ-फल प्राप्त्यर्थं ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिकाल संरक्षणार्थं सकलकामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं तथा मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्त भयव्याधिजराऽपमृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं तथा मम जन्मराशेरखिल-कुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टम-द्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफल-प्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्तते-रविच्छिन्न वृद्धयर्थं आदित्यादिनवग्रहानुकूलता-सिद्धयर्थं तथा इन्द्रादिदशदिक्पाल-प्रसन्नता-सिद्धयर्थं आधिदैविकाऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थफल-प्राप्त्यर्थं च श्री शिवपंचायतनदेवता-प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथा मिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च पूजनमहं करिष्ये । पुनर्जलमादाय-तदङ्गतया विहित दिग्रक्षणं कलशाराधानं दीपपूजनं शङ्खघण्टार्चनं च गुरुस्मरणपूर्वकं मातृपितृस्मरणं करिष्ये ।

दिग्-रक्षण-बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर उसके ऊपर दाहिना हाथ ओंधा ढक कर दाहिने घुटने पर रखकर नीचे के मन्त्र बोले ।

ओम् अपसर्पन्तु ''पूजा कर्म समारभे'' (पृ.६४) तक के मंत्र बोलकर सरसों सब दिशाओं में बिखेर दे फिर भैरव को नमस्कार करके वामपाद की तलसहित एड़ी को तीन बार भूमि में ताड़ित करे फिर जल का स्पर्श करे तथा **'स्वस्तिनः इन्द्र.'** इस मंत्र से अक्षतों से युक्त पुष्प ऊपर फेंके और कहे-**''देवा आयान्तु**-देव आवें **'यातुधाना अपयान्तु'** राक्षस चले जाँय'' । व्यापक परमात्मा के पूजन की रक्षा करो ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कलश स्थापन

अपने बाएँ तरफ अक्षत पुंज पर जल से भरा हुआ घट स्थापन करके उसमें वरुणका आवाहन करके प्रतिष्ठा करे तथा **'ओम् वरुणाय नमः सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः'** इस मंत्र से षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन करके पुष्पाञ्जलि समर्पित करके कहे-इस पूजा से वरुण प्रसन्न हो। फिर **''कलशस्य मुखे''**. इत्यादि मंत्रों द्वारा कलश में देवताओं का आवाहन करके पूजन करे फिर कलशस्थ जल में से जल लेकर पूजा द्रव्य तथा अपने शरीर शिर पर प्रोक्षण करे।

दीप पूजन

घी का दीपक जलाकर देव के दक्षिण भाग में रखे। तेल का दीपक प्रज्वलित करके देव के वाम भाग में स्थापित करके **ओम् भूर्भवः स्वः विष्णुदैवत्य घृतदीपस्थ दैवतायै नमः आवाहयामि । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि। ओम् भूर्भवः स्वः । वनस्पति देवत्य तैलदीपस्थ देवतायै नमः आवाहयामि।**

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि ।

शंख पूजन

शंख को धोकर जल से भरकर देव के वाम भाग में रखे **ओम् अग्निर्ऋषिः''** तथा **पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि । तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् । ओम् भूर्भुवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः । शंखस्थदेवतां आवाहयामि** । सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पे समर्पयामि। नमस्करोमि । (शंखमुद्रा दिखावे ।)

घण्टा पूजन

गरुड़ घण्टी को धोकर नाद करके देव के दक्षिण भाग में स्थापित करके पूजन करे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् सुपर्णोऽसि. देवों के आगमन तथा राक्षसों के गमन के लिये घण्टा नाद करके **ओम् भूर्भवः स्वः घण्टास्थाय गरुड़ाय नमः गरुडं आवाहयामि ।**

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि । (गरुड़मुद्रा दिखावे ।).

देव होकर देव का पूजन करे । अदेव को देव-पूजा का अधिकार नहीं है अतः देवत्व की सिद्धि के लिये पहले षडङ्गन्यास एवं पुरुष सूक्त के मन्त्रों से षोडशाङ्गन्यास करे फिर पूजन का आरम्भ करे ।

किसी भी प्रधान देव का पूजन करना हो, पहले श्री गणपति का पूजन करे फिर नवग्रह, दशदिक्पाल, षोडशमातृका, आदि का पूजन करके प्रधान देव का पूजन करना चाहिये ।

मुख्य पंचदेव हैं पंच देवों की पूजा का संक्षिप्त प्रकार यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है । यहाँ शिवजी को प्रधान देव मानकर पंच-देव पूजा की विधि बताई जा रही है ।

तत्रादौ गणपति स्मरणम्

एकदन्तं सूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धि-विनायकम् ॥

(गणपति को चन्दन तथा पुष्प चढ़ावे)

निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करे -

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥
ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राणायाम - प्राणायाम का मंत्र पहले दिया जा चुका है नाक के दाहिने छिद्र को अँगूठे से दबाकर बाँये छिद्र से श्वास ले - यह पूरक प्राणायाम है श्वास पूरते समय विष्णु का घ्यान करे, दाहिने नासारंध्र को अँगूठे से दबाये रहे तथा बायें नासारंध्र को भी कनिष्ठिका तथा अनामिका अँगुलियों से दबाकर श्वास को रोक रखे और कमल पर विराजमान ब्रह्माजी का ध्यान करे-यह कुंभक प्राणायाम है । इसके बाद दाहिने नासारंध्र को छोड़कर धीरे-धीरे श्वास छोड़े उस समय गंगाधर तीन नेत्र वाले शिवजी का ध्यान करे-यह रेचक प्राणायाम है । ये पूरक, कुम्भक एवं रेचक मिलकर एक प्राणायाम हुआ । ऐसे-ऐसे तीन प्राणायाम करके संकल्प करे । संकल्प के अन्त में 'श्री साम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं गणपत्यादि सकल देवता पूजन पूर्वक शिव पंचायतन पूजनं करिष्ये । पानी छोड़कर नीचे लिखे ध्यान के श्लोकों का अर्थ चिन्तन करते हुए पंच देवों का ध्यान करे -

श्री गणपति घ्यानम्

(ध्यान करके अक्षत चढ़ावे)

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् ॥
दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्,
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री समेतं प्रसन्नम् ॥

जो गौर अंगवाले, श्वेत वस्त्रधारी, श्वेत पुष्प एवं श्वेत चन्दन से पुजित, सुर-नरों में श्रेष्ठ, क्षीरसमुद्र में रत्नदीपों के मध्य रत्न के सिंहासन पर विराजमान, हाथों में पाश, अंकुश, कमल एवं वरद मुद्राधारण किये हुए, भाल प्रदेश में चन्द्रमा, तीन नेत्र वाले, श्रीयुक्त सदा प्रसन्न एवं निर्मल, गणों के स्वामी हैं सुख तथा शान्ति के लिये ऐसे श्री

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री देवी ध्यानम्

(ध्यान करके अक्षत चढावे)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्म ताम् ।।

देवी को नमस्कार, महा देवी को, कल्याण स्वरूपा देवी को बारम्बर नमस्कार, प्रकृति देवी को तथा भद्रकाली देवी को नमस्कार, नियम पालन करने वाले हमं सदा नम्र होकर देवी का ध्यान करते हैं ।

श्री विष्णु ध्यानम्

(ध्यान करके अक्षत चढ़ावे)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

जिसकी आकृति अतिशय शान्त है जो शेषनाग पर शयन करते हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो सब देवों के स्वामी हैं जो विश्व के आधार, आकाश के समान व्यापक, मेघ जैसे वर्ण वाले, शुभ अङ्गों से युक्त, लक्ष्मीपति, कमल जैसे नेत्र वाले योगियों को ध्यान में प्राप्त होने वाले, जन्म आदि भय को हटाने वाले, सम्पूर्ण लोकों के एकमात्र स्वामी, ऐसे श्री विष्णु को मैं नमस्कार करता हूँ ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री सूर्य ध्यानम्

(ध्यान करके अक्षत चढ़ावे)

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरंचिनारायणशङ्करात्मने ।।

समग्र जगत् के प्रकाशक, विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, लय करने वाले, सत्त्व, रज और तमो रूप तीन गुणों को धारण करने वाले, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वररूप श्री सूर्य नारायण को मैं नमस्कार करता हूँ ।

श्री शिव ध्यानम्

(ध्यान करके अक्षत चढ़ावे)

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्जवलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।

चाँदी के पहाड़ व चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, स्फटिक मणि के जैसे धवल वर्ण वाले, फरसा, मृगमुद्रा तथा अभयमुद्रा धारण करने वाले, सदा प्रसन्न, पद्मासन पर विराजमान, सब दिशाओं से देवगणों द्वारा स्तुत्य व्याघ्रचर्म धारण करने वाले पाँच मुख एवं तीन नेत्र (पन्द्रह नेत्र) वाले, विश्व के आदि कारण, विश्ववन्द्य भगवान् महेश्वर का नित्य ध्यान करना चाहिये । अर्थात् मैं ध्यान करता हूँ ।

ओम् भूर्भुवः श्री शिव-प्रमुख-पंचायतन देवताभ्यो नमः ध्यायामि । (अक्षत छोड़े) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पंचायतन देव आवाहनम्

निम्नलिखित आवाहन मन्त्रों से मूर्तियों के पास पुष्प रखे, मूर्ति न हो तो आवाहन करके पूजन करे ।

ओम् सहस्रशीर्षा.

आगच्छ देवदेवेश तेजोराशे जगत्पते ।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपंचायतन देवताभ्यो नमः आवाहनाभावे पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

नोट - (मिट्टी की मूर्ति में सदा ही आवाहन करना चाहिये । स्थापित प्रतिमा में आवाहन विसर्जन न करे । शालग्राम एवं नर्मदेश्वर लिंग में आवाहन ऋचासे पूर्व में श्री हरि को पुष्पांजलि तथा अन्त में भी पूजा की पूर्ति के लिये पुष्पाञ्जलि देवे) ।

आसनम्-ओम् पुरुषऽएवेदँ सर्वम् . ।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपंचायतन देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि (पुष्प रखे) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाद्यम्-एतावानस्य. ।।

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।।
ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पंचायतनदेवताभ्यो नमः ।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि (चरणों में जल छोड़े) ।

अर्घ्यम्-त्रिपादूर्ध्व उदैत. ।।
तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ।
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपंचायतन देवताभ्यो नमः । हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (चन्दन फूल अक्षत वाला पानी देव के हाथ में देवे ।)

आचमनीयम्-ओम् ततोविराडजायत. ।

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपंचाय. नमः । मुखे आचमनीयं समर्पयामि (देव के मुख में जल देवे) ।

स्नानम्-ओम् तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं. ।

गङ्गासरस्वतीरेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मयादेव तथा शान्ति कुरुष्व मे ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव. नमः । सर्वांगे स्नानं सम. । (स्नान करावे) ।

पयः स्नानम्-ओम् पयः पृथिव्यां. ।।

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपं. नमः । पयः स्नानं सम. (दूध से स्नान कराकर जल से स्नान करावे)।

दधि स्नानम्-ओम् दधिक्राव्णो. ।

पयस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

(दही के द्वारा स्नान कराकर जल से स्नान करावे ।)

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शि. नमः दधिस्नानं समर्पयामि

घृत स्नानम्-ओम् घृतं घृतपावानः पिबत. ।
नवनीत-समुत्पन्नं सर्व-संतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव. नमः । घृतस्नानं समर्प.
(घी से स्नान - करा के जल से स्नान करावे)।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मधु स्नानम्-ओम् मधुवाता ऋतायते. । मधुनक्त. मधुमान्नो. ।

तरु पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(मधु से स्नान कराकर जल से स्नान करावे ।)

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव. नमः । मधुस्नानं स.।

शर्करास्नानम्-ओम् अपाँ्रसमुद्वयस. ।

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(शक्कर के द्वारा स्नान कराकर जल से स्नान करावे ।)

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पंचायतनदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ।

एक तन्त्रेण पंचामृत स्नानम् ओम् पंच नद्यः ।
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करावे ।)

शुद्धोदक स्नानम्-ओम् शुद्धबालः ।

गन्धोदक स्नानं सम. तथा सुगन्धितैलेन उद्वर्तनस्नानं सम. ।

शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं सम. ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(अभिषेक के लिए पंचोपचार से पूजन करे ।)

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपंचायतन देवताभ्यो नमः । गन्धं सम. । ओम् भूः. धूपं आघ्रापयामि । ओम् भूः. दीपं दर्शयामि । ओम् भूः. शर्करोपहार नैवेद्यं निवेदयामि । सम्प्रोक्ष्यामृतीकृत्य । ओम् प्राणाय स्वाहा, ओम् अपानाय स्वाहा, ओम् व्यानाय स्वाहा, ओम् उदानाय स्वाहा, ओम् समानाय स्वाहा । नैवेद्य के बाद हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि । मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं सम. । पूजा साङ्गतासिद्धये हिरण्यमुद्रादक्षिणां समर्पयामि । प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि । अनेन यथाशक्त्याध्यानावाहनादिकृत पूर्वाराधनेन श्री शिवपंचायतन देवताः प्रीयन्ताम् न मम ।

निर्माल्यं उत्तरे विसृज्य । पुनः गन्ध पुष्प सब देवों पर चढ़ा कर, शालग्राम पर तुलसी दल, शिव के ऊपर बिल्वपत्र, गणेश पर दूर्वापत्र चढ़ा कर, जल धारा पात्र को गन्धादि से पूजकर, गन्धयुक्त जल से भर कर, विष्णु का **पुरुष सूक्त** से, गणेश का **गणेशाथर्वशीर्ष** से, सूर्य का **विभ्राड्.** इस सूर्य सूक्त से देवी का **श्री सूक्त** से तथा श्री शिव का साङ्ग रुद्र से अथवा रुद्राध्याय (**नमस्ते.**) से अभिषेक करे । अथवा केवल पुरुष सूक्त से ही सब देवों के शिर पर संक्षेप से घण्टा बजाते हुए अभिषेक करे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुरुषसूक्तम्

ओम् सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिँ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥
पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्‌भ्याँशूद्रो अजायत ॥ ११ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्‌भ्यां भूमिर्दिशःश्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवायद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः
सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

इस प्रकार एक तन्त्र से सब देवों का अभिषेक करके शंख के जल से शालग्राम को स्नान करावे ।

ओम् सर्वेषां वा एष वेदानाँरसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतवेदानाँ रसेनाभिषिञ्चति । ओम् शान्तिः । शान्तिः । शान्तिः । सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु । ओम् अमृताभिषेकोऽस्तु ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिवपंचायतन देवताभ्यो नमः अभिषेक-स्नानं समर्पयामि।

देवों को वस्त्र से पोंछकर स्वस्छ स्थान पर स्थापित कर दे ।

वस्त्रम् -तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि. ।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

ओम् भूभुर्वः स्वः श्री शिव पं. नमः । वस्त्रं (वस्त्राभावेऽक्षतान्) समर्पयामि

(वस्त्र या अक्षत चढ़ावे) ।

यज्ञोपवीतम्-ओम् तस्मादश्वा अजायन्त. ।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्ता त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. नमः । यज्ञोपवीतं तदभावेऽक्षतान् सम. ।

(जनेऊ चढ़ावे अथवा अक्षत चढ़ावे) ।

गन्धम्-ओम् तं यज्ञम्वर्हिषि. ।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ओम् भू. श्री शिव. गन्धं स. । (चन्दन चढ़ावे) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अक्षताः-ओम् अक्षन्नमीमदन्त. ।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ् कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. नमः अक्षतान् समर्पयामि ।
(अक्षत चढ़ावे) ।

पुष्पाणि-ओम् यत्पुरुषं. ।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. पुष्पाणि सम. ॥

(पुष्प चढ़ावे । पुष्प माला समर्पित करे ।)

श्री गणेश जी को दूर्वाङ्कुर अर्पण करे-

ओम् काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्बे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
गणेशस्य विशेषेण दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा ।
क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ॥ (दूब चढ़ावे ।)

ओम् भू. गणेशाय नमः दूर्वाङ्कुरान् सम. ।

सूर्याय पुष्पार्पणम्-ओम् सविता त्वा प्रसवानां. ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भानो दिवाकरादित्य मार्तण्ड जगतां पते ।
प्रणतार्तिहरादित्य पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥

ओम् भू. सूर्याय नमः पुष्पाणि स. ।

(सूर्य को पुष्प चढ़ावे) ।

देव्यै पुष्पार्पणम्-ओम् श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च. ।

सेवन्तिका बकुल चम्पक पाटलाब्जैः,
पुन्नाग जाति करवीर रसालपुष्पैः ॥
विल्व प्रवाल तुलसीदल मालतीभि-
स्त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद ॥

ओम् भू. दैव्यै पुष्पाणि स. ।

विष्णवे तुलसीदलार्पणम्-ओम् विष्णोः कर्माणि पश्यत-
यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ।
तुलसी हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥

ओम् भू. विष्णवे नमः तुलसीदलं सम. (तुलसी चढ़ावे) ।

शंकराय बिल्वपत्रार्पणम्

ओम् शिवोभव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मा द्यावा पृथिवी अभिशोचीमन्तिरिक्षम्मा वनस्पतीन्।।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिवर्गदम् ।
त्रिजन्मपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम् ।।

ओम् भू. शिवायं नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि।

(शिव जी को बिंल्वपत्ती चढावे) ।

सौभाग्यद्रव्यम्-ओम् अहिरिव भोगैः पर्येति बाहून् ज्याया हेतिम्परिबाधमानः । हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाँ् सम्परिपातु विश्वतः ।

श्वेतचूर्णं रक्तचूर्णं हरिद्रा कुंकुमं तथा ।
सिन्दूरेण समायुक्तं सौभाग्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. नमः सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि
(अबिल गुलाल कुंकुम आदि चढाव) ।

आभूषणम्

अलंकारान्महद्दिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान् ।
गृहाण देव देवेश प्रसीद परमेश्वर ।।

(अलंकार चढ़ावे) ।

धूपः-घण्टा बजाते हुए-ओम् ब्राह्मणो. ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ओम् भूभुर्वः स्वः श्री शिव. पं. नमः । धूपं आघ्रापयामि ।

(धूप सुघाँवे) ।

दीपः-ओम् चन्द्रमा मनसो. ।

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव. पं. नमः । दीपं दर्शयामि ॥

(दीप दिखावे) ।

नैवेद्यम्

ओम् नाभ्या आसीदन्तरिक्षं. ।

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपाहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ।

गायत्री मन्त्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा से अमृती करके ग्रासमुद्रा से **'ओम् प्राणाय स्वाहा, ओम् अपानाय स्वाहा, ओम् व्यानाय स्वाहा, ओम् उदानाय स्वाहा, ओम् समानाय स्वाहा'** देव को भोजन करावे । मध्य में पानी दे पुनः भोजन कराकर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'ओम् भू. उत्तरापोशनं स. हस्तप्रक्षालनं स. मुख प्रक्षालनं स. ओम् भू. आचमनीयं स. ओम् भू. करोद्वर्तनार्थे चन्दनं सम. । मुखवासार्थे ताम्बूलम्- यत्पुरुषेण. ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. नमः ताम्बूलं स. ।

पान, सुपारी, लौंग, इलायची आदि अर्पण करे ।

ऋतुफलानि-याः फलिनीर्या अफला. ॥

फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पं. नमः फलानि सम.

दक्षिणा-ओम् हिरण्यगर्भः ।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव. नमः दक्षिणां स. ।

(दक्षिणा चढावे) ।

कर्पूरारार्तिक्यम्-कपूर अथवा घी का दीपकजला कर गन्ध पुष्पादि से पूज कर बाएँ हाथ से घण्टा बजाते हुए आरती करे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् इदँ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीरँ सर्वगणँ स्वस्तये आत्म सनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतो अस्मासुधत्त ।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरञ्च प्रदीपितम् ।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

ओम् भूभुर्वः स्वः श्री शिव पं. कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि । शरीरारोग्यता सिद्धयर्थं आत्मवन्दनं कृत्वा हस्तप्रक्षालनम् ।

(नोट-सब देवों की आरतियाँ व स्तुति प्रार्थना पाठ आदि इसी पुस्तक में आगे देखें)।

प्रदक्षिणा-सप्तास्यासन्. ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

मन्त्र पुष्पाञ्जलिः

(अञ्जलि में पुष्प लेकर खड़े होकर ।)

ओम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्भाणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ओम् राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ओम् स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादा परार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभि गीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति । ओम् विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रै-र्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ।

नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पञ्चायतन देवताभ्यो नमः । मंत्र पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

विशेषार्घ्यः -

रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥

ओम भूर्भुवः स्वः श्री शिव. नमः विशेषार्घ्यं स.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजोपचारार्पणम्-

छत्र-चामर-संगीत-व्यजनांदोलिकादिकान् ।
राजोपचारान् मनसा कल्पितान् स्वीकुरुष्व भो ॥

ओम् भू. समस्तराजोपचारार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥

क्षमा प्रार्थना-

आवाहनं न ज़ानामि न जानामि तवाऽर्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याहं तव दर्शनात् ॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः श्री शिव पंचायतन देवताभ्यो नमः ।
सकलपूजापरिपूरणार्थे पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥

अर्पणम्-अनेन ध्यानावाहनासनपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवस्त्रोपवी-तगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलप्रदक्षिणामंपुष्परूपैः षोडशो-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनाख्यकर्मणा श्री शिवपंचायतन देवता प्रीयतां न मम। ओम् तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्युनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

ओम् शिवाय नमः ओम् विष्णवे नमः । हरिः ओम् तत्सत् ।

ॐ

आरती रहस्य

अन्तर के अज्ञानरूप अन्धकार को नष्ट करने के लिये ज्ञानका प्रतीक दीपक दिखाकर सदा शिव परमात्मा से अपने प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो ! मेरे अज्ञानरूप अन्धकार को ज्ञान ज्योति के द्वारां नष्ट कर दीजिये तथा त्रिविध दुःखों की निवृत्ति पूर्वक परमानन्दकी अनुभूति कराइये ।

आरती में सृष्टि प्रक्रिया

आरती में सृष्टि प्रक्रिया का एक विज्ञानपूर्ण अभिनय होता है। इसमें कौन तत्त्व पहले बना और कौन बाद में तथा इन तत्त्वों का अनुक्रम और व्युत्क्रम कया है ? यह सूक्ष्म रहस्य आरती के संकेत से भक्तों को समझाया जाता है, देखिये - आरती में प्रथम पड़दा हटते ही भगवान का दर्शन होता है । फिर शंख बजता है, पुनः चंवर डूलाया जाता है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर वस्त्र धुमाकर धूप दी जाती है, बाद में जल धुमाकर आरती की जाती है, आरती पूर्ण करके भक्तों पर शंखका जल छींटकर केवल भगवान का दर्शन ही शेष रहता है। भक्तों की जिज्ञासाकी पूर्ति के लिए इसका तात्विक रहस्य बताते हैं -

भगवान मायाके पड़दे में छिपे रहते हैं, पड़दा हटाना यह मायाकी निवृत्ति है इसके हटने पर ही भक्तको भगवान का दर्शन होता है । मायाकी शक्तिके योगसे परमात्मा क्रमशः आकाश-वायु तेज-जल और पृथ्वी को उत्पन्न करते हैं तथा प्रलय काल में पृथ्वी के क्रमसे लीन होते हैं यही प्रक्रिया आरती में दिखाई जाती है ।

प्रथम शंख बजाकर शब्दगुण सहित आकाश की उत्पत्तिका संकेत करके चंवर डुलाकर वस्त्र के संकेत से स्पर्शगुण युक्त वायु की उत्पत्ति बताकर ज्योत जलाकर रूप गुणसहित अग्नितत्त्व की उत्पत्तिका भाव प्रकट करके शीतगुणयुक्त जल धुमाकर जलकी उत्पत्तिका संकेत करके वस्त्र एवं हाथकी मुद्राओं से धूप के द्वारा गन्ध गुण युक्त पार्थिव तत्त्व की उत्पत्तिका संकेत करके ज्योति के द्वारा ब्रह्म ज्योति से जीवन ज्योति यानी आत्म ज्योतिको जगाने का आरती में अभिनय किया जाता है ।

प्रथम जिस क्रम से आकाश आदि तत्त्व उत्पन्न होते हैं उस क्रम से आरती करके बाद में विलोमक्रम (उलटे क्रम) से आरती की जाती है, जो लयका क्रम है । शंखका जल भक्तों पर छींटकर खाली शंख दिखाने पर अन्त में परमात्मा ही शेष रहता है । पहले परमात्मा था, अन्त में परमात्मा रहता है अतः परमात्मा ही सत्य है अन्य सब मिथ्या है। जो नित्य सत्य परमात्मा है वही पूजक का वास्तविकस्वरूप है । इस स्वरूप की प्राप्ति ही आरती का फल है, यही रहस्य है ।

आरती कितनी बार घुमानी

स्नानथाली, निराजनथाली, गरुड़धण्टी, पंचपात्र आदि में पहले उन उन देवोंके बीजमन्त्र चन्दनसे लिखना चाहिये अथवा सबका बीजमंत्र "ॐ" कार लिखे । जिस देवकी आरती

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उतारनी हो उसका बीजमंत्र बन जाय इस प्रकार आरती घुमानी चाहिये । जिस देवकी शास्त्र में जितनी संख्या बताई हो उतनी बार उसकी आरती घुमानी चाहिये यथा -

विष्णु द्वादश आदित्यों में परिगणित होने से द्वादशात्मक है । द्वादशीतिथि तथा द्वादशाक्षर मन्त्र है अतः द्वादशबार आरती घुमावे । शंकर जी एकादश रुद्र रूप हैं, चतुर्दशी तिथिके अधिष्ठाता हैं, महाशिवरात्रि अथवा प्रदोषव्रत चतुर्दशी अथवा त्रयोदशी में होता है अतः ११- १३ या १४ आवर्तन करे । सूर्य की सात रस्मि सात घोड़े, सप्ताक्षर मन्त्र एवं सप्तमी तिथि है । अतः सात आवर्तन करे । दुर्गाजीकी नव संख्या प्रसिद्ध है । नवमीतिथि नवरात्रि महोत्सव नव दिन का तथा नंवार्णमन्त्र नव अक्षर का है अतः नव बार आरती घुमावे। गणेशजी चतुर्थी तिथि के अधिष्ठाता हैं इसलिये चार बार आरती घुमावे । गुरुदेव सर्व देवमय हैं इसलिये अपने इष्टदेवके जितने आवर्तन करे । सामान्यतया किसी भी देवकी आरती के सात आवर्तन कर सकते हैं । **''देव के किस अंग में कितने आर्वतन करें ? ''** इसका उत्तर निम्न श्लोक से मिलता है **''आदौ चतुः पादतल प्रदेशे दौ नाभि देशे मुख बिम्बमेकम् । सर्वेषु गात्रेषुच सप्तबारा नारार्तिकं भक्तजनः प्रकुर्यात् ''** प्रथम चरणमें चार बार, नाभि में दो बार, मुख में एकबार तथा सम्पूर्ण शरीर में सातबार आरती के आवर्तन करे ।

वेदाश्रम चांदोद में स्थित श्री सिद्धेश्वर महादेव परिवार के देवों की संयुक्त आरती-

शिव आरती

रचयिता-महामण्डलेश्वर वेदाचार्य श्री स्वामी दयानन्द पुरीजी महाराज-

ओम् जय सिद्धेश हरे, शिव जयसिद्धेश हरे ।
सिद्धनाथ सिद्धेश्वर (२) ब्रह्म स्वरुप हरे ॥ॐ हर. ॥
सिद्धि विनायक सुखधन मंगलरूप हरे (शिवमं)
रिद्धि-सिद्धि विद्याप्रद (२) धन मण्डार हरे ॥ ॐ हर. ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गंगाधर शिव शंकर संकट दूर करे । (शिव सं.)
सरस्वती शक्ति भवानी (२) जय जगदम्ब हरे । ॐ हर. ॥
हे लक्ष्मी नारायण जय गोपाल हरे । (शिव जय.)
व्यापक शुद्ध सनातन (२) जय जगपाल हरे ॥ ॐ हर. ॥
पवनपुत्र बजरंगी ज्ञान रुप स्वामी (शिव ज्ञान.)
रामचन्द्र पुरुषोत्तम (२) प्रभु अन्तर्यामी (ॐ हर.)
नित्य सत्य नारायण मन वांछित दाता (शिव मन.)
शुद्ध ब्रह्म परिपूरण (२) जग धाता माता ॥ ॐ हर ..॥
जलाराम जनसेवा प्रभु भक्ति करता (शिवप्रभु.)
गुहपद शिवपद पूजा (२) भव सागर तरता । ॐ हर.
वेदा श्रम चण्डीपुर सिद्धेश्वर राजे (शिव सि.)
भक्ति विरग ज्ञानमय (२) वेद ध्वनी गाजे ॐ हर.)
''दयानन्द'' शिव आरती जो भावे गावे (शिवजो.)
जन्म-मरण से छूटे (२) मोक्ष गति पावो ॐ हर
ॐ जय सिद्धेश हरे शिवजय सिद्धेश हरे..
सिद्धनाथ सिद्धेश्वर (२) ब्रह्म स्वरुप हरे । ॐ हर. ॥

आरती संग्रह

श्री विश्वनाथ जी की आरती

हरिः ओम् जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश,
शिव जय गौरीनाथ ।
त्वं मां पालय नित्यं (२) कृपया जगदीश, ॐ हर हर महादेव ॥ १॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कैलाशे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने, शिव कल्पद्रुमविपिने ।
गुंजति मधुकर पुंजे (२) कुंजवने गहने ।
कोकिल कूजति खेलति हंसावलिललिता, शिव हंसावलिललिता ।
रचयति कलाकलापं (२) नृत्यति मुदसहिता । ॐ हर हर महादेव ॥२॥

तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता, शिव शालामणिरचिता ।
तन्मध्ये हरनिकटे २ गौरी मुदसहिता, क्रीडां रचयति भूषारंजित निजमीशं, शिव रंजितनिजमीशम् ।
इन्द्रादिक सुरसेवित ब्रह्मादिक मुनिसेवित प्रणमति ते शीर्षम् ।ॐ हर हर महादेव ॥३॥

विबुधवधूर्बहुनृत्यति हृदये मुदसहिता, शिव हृदये मुदसहिता ।
किन्नर गायन कुरुते (२) सप्तस्वरसहिता ।
धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते, शिव मृदंग वादयते ।
क्वण-क्वण ललिता वेणुं २ मधुरं नादयते । ॐ हर हर महादेव ॥ ४ ॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलितं, शिव नूपुरमुज्जवलितं ।
चक्रावर्ते भ्रमयति (२) कुरुते तां धिक् तां ।
तां तां लुप चुप तालं नादयते, शिव डमरुँ वादयते ।
अँगुष्ठांगुलिनांद २ लास्यकतां कुरुते । ॐ हर हर महादेव ॥ ५ ॥

कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितं, शिव पंचाननसहितम् ।
त्रिनयनशशिधरमौलिं (२) विषधरकण्ठयुतम् ।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालं शिव पावकयुतभालम् ।
डमरु त्रिशूलपिनाकं २ करधृतनृकपालम् । ॐ हर हर महादेव ॥ ६ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते, शिव झल्लरि नादयते ।
नीराजयते ब्रह्मा नीराजयते विष्णुर्वेदऋचां पठते ।
इति मृदुचरण सरोजं हृदि कमले धृत्वा, शिव हृदि कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं शिवलोकयति सुरेशमीशमभिनत्वा । ॐ हर हर महादेव ॥ ७ ॥

रुण्डैर्रचयति मालां पन्नगमुपवीतं, शिव पन्नगमूपवीतम् ।
वामविभागे गिरिजा, वामविभागे गौरी, रूपं ह्यतिललितम् ।
सुन्दरसकलशरीरे मनसिजकृतभस्माभरणं शिव कृतभस्माभरणम्
इति वृषभध्वजरूपं हर शिव शंकररूपं, तापत्रयहरणम् । ॐ हर हर महादेव ॥ ८ ॥

ध्यानं आरतिसमये हृदये इति कृत्वा, शिव हृदये इति कृत्वा ।
रामं त्रिजटानाथं शम्भो त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा ।
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते, शिवपठनं यः कुरुते ।
शिवसायुज्यं गच्छति हरसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते । ॐ हर हर महादेव ॥ ९ ॥

ओम् जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश शिव जय गौरीनाथ त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश । ॐ हर हर महादेव ॥ १० ॥

ओंमकार रूप शिव आरती

ओम् जय शिव ओङ्कारा, शिव हर भज ओङ्कारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भोले नाथ महादेव, अर्धाङ्गिगोरा ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे, शिव पञ्चानन राजे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हंसासन गरुड़ासन, हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजे ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ १ ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहे, शिव दश भुज ते सोहे ।
तीनों रूप निरखता, तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ २ ॥

अक्षमाला वनमाला रुण्डमालाधारी, शिव मुण्डमालाधारी ।
मृगमद चन्दन सोहे, मृगमद चन्दन सोहे, भोले शशिधारी ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ ३ ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे, शिव बाघम्बर अङ्गे ।
ब्रह्मादिक सनकादिक, ब्रह्मादिक सनकादिक, भूतादिक सङ्गे ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ ४ ॥

लक्ष्मी अरु सावित्री पार्वती सङ्गे, शिव पार्वती सङ्गे ।
अर्धाङ्गे श्री विष्णु आर्धङ्गे श्री विष्णु, सोहत शिर गंगे ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ ५ ॥

करमध्य कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता, शिव चक्र त्रिशूलधार्ता ।
जग करता जग भरता, जग करता सुख भरता, शिव प्रलयं करता ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ ६ ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत सविवेका, शिव जानत सविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये, प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् हर हर हर महादेव ॥ ७ ॥

त्रिगुणानन्द की आरती निसदिन जो गावे, प्रभु प्रेम सहित गावे ।
भजत दयानन्द स्वामी, भजत शिवानन्द स्वामी,
वांछित फल पावे ।
ओम् हर हर हर महादेव ॥ ८ ॥

विश्वेश्वर शिव आरती

रचयिता-अनन्तश्री स्वामी दयानन्द वेदपाठी जी महाराज

ओम् जय विश्वेश हरे, शिव ! जय विश्वेश हरे ।
विश्व प्रकाशक प्रेरक (२) पालक ओम् हरे ॥ ओम् जय. ॥
विश्वरूप, विश्वेश्वर, मङ्गलरूप विभो (शिव मंगल.)
करुणामृत निखिलेश्वर (२) सच्चिद् रूप प्रभो ॥ ओम् जय. ॥
हे जगदीश ! उमेश्वर ! ज्ञानामृत स्वामी (शिव ज्ञानामृत.)
शाश्वत सुखद सनातन (२) प्रभु अन्तरयामी ॥ ओम् जय. ॥
तुम ही दिव्य अगोचर, निष्कल एक विभु ॥ (शिव निष्कल.)
व्यापक सत्य सनातन (२) अज अविनाशी प्रभु ॥ ओम् जय. ॥
विद्या योग ज्ञानप्रद, मोह निवार हरे (शिव मोह निवार.)
माया योग ज्ञानप्रद, मोह निवार हरे (शिव मोह निवार.)
माया रहित निरंजन (२) केवल ब्रह्म परे ॥ ओम् जय. ॥
विमल विरज जग कारण, द्वन्द्वादिक हारे (शिव द्वन्द्वादिक.)
क्लेश शोक भय टारे (२) षड् सम्पति धारे ॥ ओम् जय. ॥
'दयानन्द' शिव आरति, जो प्रेमी गावे (शिव जो.)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन्म मरण सब छूटें (२) मोक्ष सदन पावे ॥ ओम् जय. ॥

ओम् कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

मगलं भगवान् विष्णुमंगलं गरुडध्वजः ।
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनो हरिः ॥
सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

शिव स्तुति

ओम् वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगमुदं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १ ॥

उमापति महादेव जी को वन्दन, देवों के गुरु, जगत् के कर्ता शिव को वन्दन हो । सर्प के आभूषण वाले मृगमुद्राधारी अज्ञानी जीवरूप पशुओं के रक्षक पशुपति शिव को वन्दन हो । सूर्य, चन्द्र तथा अग्निरूप नेत्र वाले, मुकुन्द भगवान् विष्णु के अतिप्रिय श्री शिव को नमस्कार हो । भक्तों के आश्रयरूप वरदान देने वाले, श्री शंकर जी को बारम्बार वन्दन हो ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे ।
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ।। २ ।।

शान्त स्वरूप, कमलासन पर विराजमान, मुकुट में चन्द्रमा को धारण करने वाले, पाँच मुख तथा तीन नेत्र वाले, दाहिने हाथ में त्रिशूल, वज्र, खड्ग फरसा तथा वरदान मुद्रा धारण करने वाले, बाँये हाथ में नाग, पाश, घण्टा तथा डमरू के साथ अंकुश धारण करने वाले, अनेक प्रकार के तेजोमय अलंकारों से प्रकाशित, स्फटिकमणि के समान उज्ज्वल, पार्वती पति शिव को मैं श्रद्धा भक्ति पूर्वक नमस्कार करता हूँ ।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे ।
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं ।
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।। ३ ।।

हे ईश ! समुद्र के समान दावात में कज्जल गिरि के समान स्याही घोल कर पृथ्वी जैसे कागज पर कल्प-वृक्ष की कलम लेकर यदि सरस्वती जी नित्य आप के गुणों को लिखा करें तो भी हे शिव ! आप के गुणों का अन्त नहीं आ सकता ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।। ४ ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे देवाधिदेव ! तुम ही मेरे माता, पिता, बन्धु, सखा एवं विद्या तथा धन हो, तुम ही मेरे सब कुछ हो ।

करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

हे महादेव ! मेरे हाथ, पैर, वाणी अथवा शरीर-कर्म या कान, नेत्र अथवा मन के द्वारा किया हुआ विहित अथवा अविहित सब अपरध क्षमा करो । हे शम्भो ! हे करुणावरुणालय शिव ! आप की जय जयकार हो ।

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे ।
सर्पैर्भुषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे ।
दन्तित्वक्-कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे ।
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचालामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥

चन्द्रमा के द्वारा प्रकाशित मुकुट वाले, कामदेव के नाशक गंगाधर, कल्याणकर, कण्ठ और कानों में सर्प के आभूषणवाले कपाल में अग्निरूप नेत्र वाले, गजचर्म रूप सुन्दर वस्त्र वाले, त्रिलोकी के साररूप दुःख और अविद्याको हरने वाले श्री शिव परमात्मा में हे जीव ! तू अपनी मुक्ति के लिए अपनी चित्तवृत्ति को स्थिर कर । तुझे अन्य कर्मों से क्या प्रयोजन है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री गणेश जी की आरती

आरती गज-वदन विनायक की ।
सुर-मुनि-पूजित गणनायक की ॥ टेक ॥
एक दंत, शशिभाल, गजानन,
विघ्न-विनाशक, शुभगुण-कानन,
शिव-सुत, वन्द्यमान-चतुरानन ।
दुःख-विनाशक, सुख-दायक की ॥ सुर. ॥
ऋद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि-दाता, सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अविगत-गति,
विद्या-विनय-विभव-दायक की ॥ सुर. ॥
पिंगल-नयन, विशाल शुण्डधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर ।
सुर-वन्दित सब विधि लायक की ॥ सुर. ॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥ जय. ॥
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूशे की सवारी ॥ जय. ॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया ।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥ जय. ॥
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
भक्तजन शान्ति देत, सन्त करें सेवा ॥ जय. ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गणेशाथर्वशीर्षम्

(गणपत्युपनिषत्)

यं ज्ञात्वा मुनयः सर्वे निर्विघ्नं यान्ति तत्पदम् ।
गणेशोपनिषद्वेद्यं तद्ब्रह्मैवास्मि सर्वगम् ॥
ओम् भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

ओम् नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यं । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमव शिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अव चोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि । पाहि समन्तात् । त्वं वाङ् मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः अर्धेन्दुलसितम् ॥ १ ॥ तारेणरुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दूरुत्तररूपम् । नादः सन्धानम् । संहिता संधिः । सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः । निचृद् गायत्री छन्दः । श्री महागणपतिर्देवता । ओम् गम् । (गणपतये नमः) एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् । एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम् । अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् । रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपुजितम् । भक्तानुकम्पिदं देव

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् । एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः । नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्री वरदमूर्तये नमो नमः । एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहापातकोपपातकात्प्रमुच्यते । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुंजानोऽपापो भवति । धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति । इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् । यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति । सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् । अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान्भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्याचरणं विद्यात् । न विभेति कदाचनेति । यो दूर्वांकुरैयजति स वैश्रवणोपमो भवति । यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति । स मेधावान्भवति । यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात्प्रमुच्यते । महापापात्प्रमुच्यते । महादोषात्प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति । स सर्वविद्भवति । एवं वेदेत्युपनिषत् । हरिः ओम् तत्सत् ।

ब्रह्मरूप श्री गणेश जी को नमस्कार

अजं निर्विकल्पं निराकारमेकं,
निरानन्दमानन्दमद्वैतपूर्णम् ।
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं,
परब्रह्मरूपं गणेशं भजामः ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अज, विकल्पशून्य, निराकार, एक, दुःखरहित, आनन्दपूर्ण अद्वितीय, सर्वोत्कृष्ट, निर्गुण, निर्विशेष, इच्छा तथा चेष्टाशून्य परब्रह्मरूप श्री गणेश जी का मैं भजन करता हूँ।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय ।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय ।
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

विघ्नों को दूर करने वाले, वरदान देने वाले, देवों के प्रिय, बड़े पेट वाले, सब जगत् का कल्याण करने वाले, हाथी जैसे मुख वाले वेद तथा यज्ञ के श्रृंगाररूप, पार्वती जी के पुत्र हे श्री गणपति जी ! आप को मेरा नमस्कार हो ।

श्री अम्बा (दुर्गा) जी की आरती

जय अम्बे, गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुम को निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय ॥
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को । मैया .
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ जय ॥

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै । मैया .
रक्त-पुष्ण गल माला, कण्ठे पर साजै ॥ जय ॥
केहरि वाहर राजत, खड्ग खपर धारी । मैया .
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥ जय ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती । मैया .

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कोटिन चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय ॥
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती । मैया.
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ।। जय.

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे । मैया .
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय हीन करे ॥ जय ॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी । मैया .

आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय ॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो । मैया.
बाजत ताल मृदंगा, औ बाजत डमरू ॥ जय ॥

तुम हो जगकी माता, तुम ही हो भरता ॥ मैया .
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति करता ॥ जय ॥
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी । मैया .

मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ जय ॥
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती । मैया.
(श्री) मणिद्वपि में राजत, कोटिरतन ज्योति ॥ जय ॥
(श्री) अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै । मैया.
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ जय ॥

अम्बा भवानी (दुर्गा) जी की स्तुति

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्म ताम् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार है । प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है । हम लोग नियम पूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं ।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि ! नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

शरण में आये दीन-दुःखियों की रक्षा करने में तत्पर, हे सब का दुःख दूर करने वाली देवी ! हे नारायणि ! आप को नमस्कार हो ।

सर्वमङ्गलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

हे कल्याणदायिनी शिवे ! तुम सब प्रकार मंगल प्रदान करने वाली मङ्गलमयी हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली हे गौरी ! तुम्हें नमस्कार है ।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽतुते ॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि ! सब भयों से हमारी रक्षा करो । तुम्हें नमस्कार है ।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवि ! हम पर प्रसन्न होओ । सम्पूर्ण जगत् की माता! प्रसन्न होओ । विश्वेश्वरि ! विश्व की रक्षा करो । देवि ! तुम्हीं चराचर जगत्

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की अधीश्वरी हो ।

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥

देवि ! जिससे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधा शक्ति आप ही हैं । दुर्गम भव सागर से पार उतारने वाली नौकारूप दुर्गा देवी भी आप ही हैं । आपकी कहीं भी आसक्ति नहीं है । कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल में एकमात्र निवास करने वाली भगवती लक्ष्मी तथा भगवान् चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी देवी भी आप ही हैं ।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं । दुःख दरिद्रता और भय हरने वाली देवि ! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता हो ।

नव दुर्गा

देवी के नवरूप प्रसिद्ध हैं जिन्हें 'नव दुर्गा' कहा जाता है । दुर्गा कवच में इनका वर्णन है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देखिए-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।।
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।।

देवी की नौ मूर्तियाँ है, जिन्हें 'नव दुर्गा' कहते हैं उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाये जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी मुर्ति को कूष्माण्डा कहते हैं। पाँचवी दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवाँ कालरात्रि और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान् के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं।

(१) पर्वताधिराज हिमालय की पुत्री 'पार्वती देवी' यद्यपि समस्त जगत् की अधीश्वरी हैं तथापि हिमालय की भक्तिभावना एवं तपस्या से संतुष्ट होकर उनकी पुत्री के रूप में प्रकट हुई।

(२) 'ब्रह्म' जो नित्य सत् चित् आनन्दरूप एवं परिपूर्ण है उस परमात्मा को प्राप्त करा देना जिसका स्वभाव हो वह 'ब्रह्मचारिणी' है।

(३) आह्लादकारी चन्द्रमा जिसके घण्टा में स्थित हो उस देवी का नाम 'चन्द्रघण्टा' है।

(४) जन्म-मरण एवं दुःख-शोक-मोह पूर्ण जगत् जिनके उदर में स्थित है वे महादेवी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'कूष्माण्डा' कहलाती हैं ।

(५) छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार भगवती की शक्ति से उत्पन्न हुए सनत्कुमार का नाम स्कन्द है । उनकी माता होने से देवी 'स्कन्दमाता' कहलाती हैं ।

(६) देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए महादेवी महर्षिकात्यायन के आश्रम पर प्रकट हुई तथा महर्षि ने उन्हें अपनी कन्या माना, इसलिए वे 'कात्यायनी' नाम से प्रसिद्ध हुई ।

(७) सबका संहार करने वाले काल की भी रात्रि (विनाशिका) होने से उनका नाम 'कालरात्रि' है ।

(८) तपस्या करके महान् गौर वर्ण प्राप्त किया था इसलिए इनका नाम 'महागौरी' हुआ ।

(९) सिद्धि अर्थात् भोग-मोक्ष देने में समर्थ होने से देवी का नाम 'सिद्धिदात्री' है।

नव दुर्गा का पूजन करने से दुर्गा जी की कृपा से मानव तमाम शोक-मोह, दुःख और भय से मुक्त हो जाता है । अग्नि, शत्रु, विषम स्थान अथवा किसी भी संकट में पड़ा हुआ मानव देवी का स्मरण करे तो संकट में से छूट जाता है । दुर्गति का नाश करती है इसीलिए इसका नाम 'दुर्गा' है ।

आश्विन नवरात्रियों में नव दुर्गा का विशेष उत्सव अनुष्ठान आदि होता है, इसके मुख्य तीन भेद हैं । 'महाकाली', 'महालक्ष्मी' और 'महासरस्वती' । मनुष्य को बल, धन और ज्ञान की जरूरत है । अतः बल की देने वाली दुर्गा 'महाकाली' है । धन की देने वाली 'महालक्ष्मी' तथा ज्ञान का दान करने वाली 'महासरस्वती' है । इन तीनों का अभिन्न मन्त्र नवार्ण मन्त्र है **'ओम् ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे'** इस मंत्र का १०८ अथवा अधिक से अधिक जप करना चाहिये । इसका अर्थ नीचे दिया जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे चित्स्वरूपिणी महासरस्वती ! हे सद्रूपिणी महालक्ष्मी ! हे आनन्द स्वरूपिणी महाकाली ! ब्रह्मविद्या प्राप्त करने के लिए हम सब समय तुम्हारा ध्यान करते हैं । हे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके ! तुम्हें नमस्कार है । अविद्यारूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थि को खोलकर मुझे मुक्त करो ।

महाकाली पूजन

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥

'विजयशालिनी' 'जयन्ती' भक्तों के जन्म मरण आदि संसार के बन्धन को तोड़कर 'मोक्ष' देने वाली 'मंगला' प्रलयकाल में विश्व को ग्रास बना लेने वाली 'काली' भक्तों को सुख तथा कल्याण देने वाली 'भद्रकाली' हाथ में कपाल धारण करने वाली 'कपालिनी' अष्टाङ्ग योग, कर्म उपासना आदि कठिन साधनों से प्राप्त होने वाली और दुःखों का नाश करने वाली 'दुर्गा' करुणामयी अपराध को माफ करने वाली 'क्षमा' सब का कल्याण करने वाली 'शिवा' विश्व को धारण करने वाली 'धात्री' यज्ञ का भाग लेकर देवों का पोषण करने वाली 'स्वाहा' श्राद्ध-तर्पण को स्वीकार कर पितरों का पोषण करने वाली 'स्वधा' इन नामों से प्रसिद्ध हे महाकाली ! चण्डिके ! आपको मेरा नमस्कार हो । यह मंत्र बोलकर पूजन करे तथा स्तुति-प्रार्थना आदि करके पूजन पूण करे **'ओम् श्री महाकाल्यै नमः'** इस मंत्र का जप करे ।

महालक्ष्मी अष्टलक्ष्मी पूजन

ओम् महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

इस मंत्र से ध्यानावाहनादि क्रम से पूजन करके **'ओम् श्री महालक्ष्म्यै नमः'** इस मंत्र

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का १०८ जप करके श्री सूक्त का पाठ करे ।

श्री सूक्त

ओम् हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १ ॥
ओम् तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीं ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
ओम् अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥

ओम् कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं ।
तृप्तां तर्पयन्तीं पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥
ओम् चन्द्रां प्रभासां यशमा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदारां
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥
ओम् आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो बनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

ओम् उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतः सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृर्द्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥

ओम् क्षुत्पिपासामलां जेष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सवार्न्निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥

ओम् मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥

ओम् कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥

ओम् आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत बस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥

ओम् आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरणयमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १३ ॥

ओम् आर्द्रांयः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिररणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४ ॥

ओम् तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

ओम् यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पंच दशर्चं च श्री कामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥

सिद्ध-लक्ष्मीर्मोक्ष-लक्ष्मीर्जय-लक्ष्मीः सरस्वती ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीर्लक्ष्मीर्वर-लक्ष्मीश्च प्रसन्ना मम सर्वदा ॥

रस सिद्ध पुरुषों को रस सिद्धि देने वाली सिद्ध लक्ष्मी, ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली ब्रह्मलक्ष्मी, भगवान् शंकर के साथ एकता कराने वाली मोक्षलक्ष्मी, शुत्रुओं पर विजय कराने वाली जयलक्ष्मी, वचन सिद्धि करने वाली सरस्वती, ऐश्वर्य, समृद्धि कान्ति, आयुष्य, आरोग्य देने वाली श्रीलक्ष्मी, मनवाञ्छित कार्य को सफल करने वाली वरलक्ष्मी, इस प्रकार भिन्न भिन्न रूपों में स्थित महालक्ष्मी जगदम्बा हमारे ऊपर सदा प्रसन्न रहें। निम्न मंत्रों का पाठ करे।

ओम् आद्यलक्ष्म्यै नमः । ओम् विद्यालक्ष्म्यै नमः ।
ओम् सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः । ओम् अमृतलक्ष्म्यै नमः ।
ओम् कामलक्ष्म्यै नमः । ओम् सत्यलक्ष्म्यै नमः ।
ओम् भोगलक्ष्म्यै नमः । ओम् योगलक्ष्म्यै नमः ।

श्री सरस्वती जी की आरती

रचयिता-श्री स्वामी दयानन्द बेदपाठी जी

ओम् जय सरस्वति माता । मैया जय सरस्वति माता,
विद्या योग ज्ञानप्रद (२) मैं तुमको ध्याता ॥ १ ॥ ओम्.
तुम हो नित्य सनातनी, सत् चित् आनन्दा (मैया)
सत्य अनंत अनादिनी (२) तुम परमानंदा ॥ ओम्.
तुम्हीं हो आत्मस्वरूपा, ब्रह्ममयी ज्योति (मैया)
ओत प्रोत हो जगमें, सूत यथा मोती ॥ ओम्.
वेद शास्त्र शुभ रूप, रूप रहित माता (मैया)
अखण्ड एक अनूप (२) उज्ज्वल हो ध्याता ॥ ओम्.
श्रद्धाभक्ति तुम्हारी, मन में ज्ञान भरो (मैया)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विद्या बोध अलौकिक (२) जिह्वा वास करो ।। ओम्.
दयामयी हूँ बालक, मोह हरो मेरा (मैया)
अमीदृष्टि अब कर दो (२) ध्यान धरूँ तेरा ।। ओम्.
''दयानन्द'' यह आरति, जो भावुक गावे (मैया)
ध्यान ज्ञान रस पावे (२) अविचल पद पावे । ओम्.

महासरस्वती पूजन

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवै : सदा वंदिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

जो देवी कुन्द (मोगरा) चन्द्र तथा ओसकणों (वर्फ) के समान गौर वर्णवाली है जो श्वेत वस्त्रों से सुसज्जित है जिन्होंने हाथ में वीणा का श्रेष्ठ दण्ड धारण किया हुआ है जो श्वेत कमल के आसन पर विराजसान हैं जिनको ब्रह्मा, विष्णु, शङ्कर आदि देव सदा वन्दन क़रते हैं और जो बुद्धि की जड़ता (अज्ञान) को जड़मूल से नष्ट करती हैं वे भगवती सरस्वती देवी मेरी रक्षा करे ।

षोडशोपचार से पूजन करके **'ॐ ऐं श्री महासरस्वत्यै नमः'** इस मंत्र का जप करे । अन्त में स्तुति प्रार्थना नमस्कारादि करके पूजन पूर्ण करे ।

कुमारी पूजन

दो से चौदह वर्ष की कन्या का देवी के रूप में पूजन करके भोजन करावे, वस्त्र दक्षिणा आदि दे । मंत्र-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति स्वरूपिणी ।
पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥

कुमारी आरती

नीराजनं सुमाङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं 'महादेवि ! नमोऽस्तु ते ॥

पुस्तक पूजन

बहीखाता, पुस्तक आदि को बस्ता (वस्त्र) में लपेट कर कुंकुम आदि से पूजन करके प्रार्थना करे । प्रार्थना -

ओम् शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥

शरद ऋतु के कमल के समान मुख वाली हे कमलमुखी ! शारदा देवी ! सदा सर्वदा तुम मेरे साथ ही रहो ।

पुस्तक सरस्वती का प्रत्यक्ष स्वरूप है इस लिए पुस्तक का कभी भी तिरस्कार न करे, पुस्तक को पैर लगाने से बहुत पाप लगता है । पानी तथा शिथिल बंधन से पुस्तक की सदा रक्षा करनी चाहिये **नमो देव्यै.** यह पुस्तक पूजन का मंत्र है ।

कलम-दावात का पूजन

कलम तथा दावात को मौली बाँधकर उसके ऊपर स्वस्तिक बनावे फिर दावात को महाकाली तथा कलम को महासरस्वती रूप मानकर पूजा करके प्रार्थना करे-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मषि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता ।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥

हे स्याही की दावात ! तू लेखनी सहित चित्रगुप्त के यहाँ स्थित रहती है वैसे कागज पर सदा अच्छे अक्षरों के लिखने के लिए मेरे पास रहो । मैं आप का आदर करता हूँ ।

श्री जगदीश्वर भगवान् की आरती

ओम् जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ओम् ।
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का । प्रभु ।
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ओम् ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी । प्रभु ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ओम् ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी । प्रभु ।
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ओम् ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता । प्रभु ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥ ओम् ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति । प्रभु ।
किस विधि मिलूँ दयामय ! तुमको मैं कुमति ॥ ओम् ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे । प्रभु ।
अपने हाथ उठावो, द्वार पड़ा तेरे ॥ ओम् ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा । प्रभु ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ओम् ॥
ओम् जय-जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे । प्रभु ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ओम् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री सत्यनारायण भगवान् की आरती

जय लक्ष्मीरमणा, श्री जय लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा ॥ जय. ॥
रत्नजड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छवि राजै ।
नारद करत निरांजन, घंटा ध्वनि बाजै ॥ जय. ॥
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो ।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर, कञ्चन-महल कियो ॥ जय. ॥
दुर्बल भील कठियारो, जिन पर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी ॥ जय. ॥
वैश्य मनोरथ पाये, श्रद्धा तजि दीन्ही ।
सो फल भोग्यो प्रभु जी, फिर अस्तुति कीन्ही ॥ जय. ॥
भाव-भक्ति के कारण , छिन-छिन रूप धर्‌यो ।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो ॥ जय. ॥
ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी ।
मनवाञ्छिल फल दीन्हों, दीनदयालु हरी ॥ जय. ॥
चढ़त प्रसाद सवायो, कदलीफल मेवा ।
धूप-दीप-तुलसी से, राजी सत्य देवा ॥ जय. ॥
सत्य नारायण जी की आरती, जो कोई नर गावै ।
तन-मन-सुख-सम्पत्ति, वाञ्छित फल पावै ॥ जय. ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान् श्री राधा-कृष्ण युगल किशोर की आरती

आरती युगल किशोर की कीजै, तन-मन धन न्यौछावर कीजै ।
गौर-श्याम मुख निरखत रीझै, प्रेमस्वरूप नयन भर पीजै ।।
रवि-शशि कोटि वदन की शोभा, ताहि देखि मेरा मन लोभा ।
मोर-मुकुट कर मुरली सोहै, नटवार वेष निरखि मन मोहे ।।
कंचन थाल कपूरकी बाती, जगमग ज्योति जले दिन राती ।
फुलन की सेज फुलन गलमाला, रतनसिंहासन बैठे नन्दलाला ।।
ओढ़े-पीत-नील पट-सारी, कुंज बिहारी भवभय हारी ।
श्रीपुरुषोत्तम गिरिवर धारी, आरति करत सकल नर नारी ।।
नन्दनन्दन वृषभानु-किशोरी, परमानन्द प्रभु अविचल जोरी ।
यो यह आरति प्रेम से गावे, बसे वैकुण्ठ परमपद पावे ।।

श्री रामचन्द्र जी की आरती

आरती करति कौसल्या मैया ।
कंचन थार बारि घृत-बाती जुगल अंगन की लेति बलैया ।।
रतन सिंहासन सुखद सुहावत, राजै दम्पति चारों भैया ।।
चमर छत्र प्रभु करत पवनसुत, जय-जय बोलत मन-हरषैया ।।
सरस माधुरी सियाराम की, बाँकी झाँकी हृदय-धरैया ।।
आरती करति कौसल्या मैया ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हरिहर को भज - संसार से तर ।

विष्णुं समाराधय शंकरं वा, भक्तिर्हि मुख्या न च देवभेदः ।
पानं सुधाया अमृतत्त्वहेतुः, पात्रं न हैमं नच राजतं वा ॥

भगवान् विष्णु की आराधना करो या भगवान् शंकर की, भक्ति ही मुख्य मुक्ति का साधन है, देव-भेद मुख्य नहीं है । अमृत का पान ही अमरता का हेतु है सुवर्ण पात्र या चाँदी का पात्र अमरता का हेतु नहीं है । तात्पर्य यह है कि सोना तथा चाँदी के पात्र के झगड़े में अमृत की अवहेलना करना मूर्खता है, वैसे ही देव के झगड़े में पड़कर भक्ति का निरादर करना अज्ञता है ।

हरि-हरयोरभेदः

हो जा भव से पार... मानव... हरिहर बोल,
जीवन का यही सार .. मानव... हरिहर बोल ॥ टेक ॥
विष्णु शिव में भेद नहीं है, भेद देखना खेद सही है ।
त्याग भेद व्यवहार... मानव ... हरिहर बोल ॥ १ ॥
निर्गुण एक ब्रह्म निरुपाधि, माया ही शिव विष्णु उपाधि ।
नभ में घट आकार ... मानव ... हरिहर बोल ॥ २ ॥
शिव पूजो या विष्णु पूजो, एक अभिन्न देव नहिं दूजो ।
यही है भक्ति सार... मानव .. हरिहर बोल ॥ ३ ॥
सुधापान ही अमर करत है, पात्र हेतु नहिं हेम रजत है ।
क्लेशादिक सब टार... मानव... हरिहर बोल ॥ ४ ॥
रामकृष्ण हरिहर शिव बोलो, 'दयानन्द' भ्रम-ग्रन्थी खोलो ।
भूमा ही सुखसार... मानव... हरिहर बोल ॥ ५ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

श्री रामरक्षा स्तोत्रम्

'रामरक्षाकवच' की सिद्धिकी विधि

नवरात्र में प्रतिदिन नौ दिनों तक ब्राह्म मुहूर्त में नित्य कर्म तथा स्नानादिसे निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारण कर कुशा के आसनपर सुखासन लगाकर बैठ जाइये । भगवान् श्रीराम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्त को एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्रका कम से कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ कीजिए । पाठ करने वाले की श्रीराम की शक्तियों के प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा । पूर्ण शान्ति और विश्वास से इसका जाप होना चाहिए । यहाँ तक कि यह कण्ठस्थ हो जाय ।

विनियोगः

ओम् अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

इस रामरक्षास्तोत्र-मंत्र के, बुधकौशिक ऋषि हैं, सीता और रामचन्द्र देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है, सीता शक्ति है, श्रीमान् हनुमान्जी कीलक हैं, तथा श्री रामचन्द्र जी की प्रसन्नता के लिए रामरक्षास्तोत्र के जप में विनियोग किया जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं,
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं,
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥

जो धनुष-बाण धारण किये हुए है, बद्ध पद्मासन से विराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं, जिनके प्रसन्न नयन नूतन कमलदल से स्पर्धा करते तथा वाम भाग में विराजमान श्री सीता जी के मुखकमल से मिले हुए हैं, उन आजानुबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकार के अलंकारों से विभूषित तथा विशाल जटाजूटधारी श्री रामचन्द्र जी का ध्यान करे ।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥

श्री रघुनाथ जी का चरित्र सौ करोड़ (श्लोकमय) विस्तार वाला है और उसका एक-एक अक्षर भी मनुष्यों के महान् पापों को नष्ट करने वाला है ॥ १ ॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥ २ ॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥ ३ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥ ४ ॥

जो नीलकमल के समान श्यामवर्ण, कमल-नयन, जटाओं के मुकुट से सुशोभित, हाथों में खड्ग, तूणीर, धनुष और बाण धारण करने वाले, राक्षसों के संहारकारी तथा संसार की रक्षा के लिए अपनी लीला से ही अवतीर्ण हुए हैं, उन अजन्मा और सर्व व्यापक भगवान् राम का जानकी और लक्ष्मण जी के सहित स्मरण कर प्राज्ञ पुरुष इस सर्व कामप्रदा और पाप-विनाशिनी रामरक्षाका पाठ करे । मेरे शिर की राधव और ललाट की दशरथात्मज रक्षा करें ॥ २-४ ॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रिय श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥ ५ ॥

कौसल्यानन्दन नेत्रों की रक्षा करें, विश्वामित्रप्रिय कानों को सुरक्षित रक्खें तथा यज्ञरक्षक घ्राण की और सौमित्रिवत्सल मुख की रक्षा करें ॥ ५ ॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥ ६ ॥

मेरी जिह्वा की विद्यानिधि, कण्ठ की भरतवन्दित, कंधों की दिव्यायुधधारी और भुजाओं की भग्नेशकार्मुक (महादेव जी का धनुष तोड़ने वाले) रक्षा करें ॥ ६ ॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥ ७ ॥

हाथों की सीतापति, हृदय की जामदग्न्यजित् (परशुरामजी को जीतने वाले), मध्य

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भाग की खरध्वंसी (खर नाम के राक्षस का नाश करने वाले) और नाभिकी जाम्बवदाश्रय (जाम्बवान् के आश्रय स्वरूप) रक्षा करे ॥ ७ ॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥ ८ ॥

कमर की सुग्रीवेश (सुग्रीव के स्वामी), सक्थियों की हनुमत्प्रभु और ऊरुओं की राक्षसकुल-विनाशक रघुश्रेष्ठ रक्षा करें ॥ ८ ॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥ ९ ॥

जानुओं की सेतुकृत्, जंघाओं की दशमुखान्तक (रावण को मारने वाले), चरणों की विभीषणश्रीद (विभीषण को ऐश्वर्य प्रदान करने वाले) और सम्पूर्ण शरीर की श्रीराम रक्षा करें ॥ ९ ॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥

जो पुण्यवान् पुरुष रामबल से सम्पन्न इस रक्षा का पाठ करता है, वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी और विनय सम्पन्न हो जाता है ॥ १० ॥

पाताल-भूतल-व्योम-चारिणश्छद्म-चारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ११ ॥

जो जीव पाताल, पृथ्वी अथवा आकाश में विचरते हैं और जो छद्मवेष से घूमते रहते हैं, वे राम नामों से सुरक्षित पुरुष को देख भी नहीं सकते ॥ ११ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ १२ ॥

'राम', रामभद्र,' 'रामचन्द्र' - इन नामों का स्मरण करने से मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥ १२ ॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १३ ॥

जो पुरूष जगत् को विजय करने वाले एक मात्र मंत्र राम नाम से सुरक्षित इस स्तोत्र को कण्ठ में धारण करता है (अर्थात् इसे कण्ठस्थ कर लेता है), सम्पूर्ण सिद्धियाँ उसके हस्तगत हो जाती हैं ॥ १३ ॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥

जो मनुष्य वज्रपञ्जर नामक इस राम कवच का स्मरण करता है, उसकी आज्ञा का कहीं उल्लंघन नहीं होता और उसे जय और मङ्गल की प्राप्ति होती है ॥ १४ ॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥ १५ ॥

श्री शंकर ने रात्रि के समय स्वप्न में इस रामरक्षा का जिस प्रकार आदेश दिया था, उसी प्रकार प्रात:काल जागने पर बुधकौशिक ने इसे लिख दिया ॥ १५ ॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभु :॥१६॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो कल्प वृक्षों के बगीचे हैं तथा समस्त आपत्तियों का अन्त करने वाले हैं, जो तीनों लोकों में परम सुन्दर हैं, वे श्रीमान् राम हमारे प्रभु हैं ॥ १६ ॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥ १७ ॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १८ ॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥

जो तरुण अवस्था वाले, रूपवान् , सुकुमार, महाबली, कमल के समान विशाल नेत्रों वाले, चीर वस्त्र और कृष्ण मृगचर्म धारी, फल-मूल आहार करने वाले, संयमी, तपस्वी, ब्रह्मचारी सम्पूर्ण जीवों को शरण देने वाले, समस्त धनुर्धारियों में श्रेष्ठ और राक्षस कुल का नाश करने वाले हैं, वे रघु श्रेष्ठ दशरथ कुमार श्रीराम और लक्ष्मण दोनों भाई हमारी रक्षा करें ॥ १७-१९॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥ २० ॥

जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रक्खा है, जो बाण का स्पर्श कर रहे हैं तथा अक्षय बाणों से युक्त तूणीर लिए हुए हैं, वे राम और लक्ष्मण मेरी रक्षा करने के लिए मार्ग में सदा ही मेरे आगे चलें ॥ २० ॥

संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छंन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ २१ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वदा उद्यत, कवच धारी, हाथ में खड्ग लिए, धनुष-बाण धारण किए तथा युवा अवस्था वाले भगवान् राम लक्ष्मण जी सहित आगे-आगे चलकर हमारे मनोरथों की रक्षा करें ॥ २१ ॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तः ॥ २२ ॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥ २३ ॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥

(भगवान् का कथन है कि) राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बली, काकुत्स्थ, पुरुष, पूर्ण, कौसल्येय, रघूत्तम, वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराण-पुरुषोत्तम, जानकी-बल्लभ, श्रीमान् और अप्रमेयपराक्रम-इन नामों का नित्य प्रति श्रद्धा पूर्वक जप करने से मेरा भक्त अश्वमेधयज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त करता है - इस में कोई संदेह नहीं है ॥ २२-२४॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतबाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥ २५ ॥

जो लोग दूर्वा दल के समान श्याम वर्ण, कमलनयन, पीताम्बरधारी भगवान् राम का इन दिव्य नामों से स्तवन करते हैं, वे संसार चक्र में नहीं पड़ते ॥ २५ ॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं ।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं बिप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमुतिं ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लक्ष्मण जी के पूर्वज, रघुकुल में श्रेष्ठ, सीता जी के स्वामी अतिसुन्दर ककुत्स्थकुलनन्दन, करुणासागर, गुणनिधान, ब्राह्मणभक्त, परम धार्मिक, राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथपुत्र, श्याम और शान्तमूर्ति, सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रघुकुलतिलक, राघव और रावणारि भगवान् राम की मैं बन्दना करता हूँ ॥ २६ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ २७ ॥

राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरूप, रघुनाथ, प्रभु सीतापति को नमस्कार है ॥ २७ ॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम,
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम,
श्री राम राम शरणं भव राम राम ॥ २८ ॥

हे रघुनन्दन श्री राम ! हे भरताग्रज भगवान् राम ! हे रणधीर प्रभु राम ! आप मेरे आश्रय होइये ॥ २८ ॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि,
श्रीरामचन्द्ररणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि,
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥

मैं श्री रामचन्द्र के चरणों का मन से स्मरण करता हूँ, श्री रामचन्द्र के चरणों का वाणी से कीर्तन करता हूँ, श्री रामचन्द्र के चरणों को सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ तथा श्री

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामचन्द्र के चरणों की शरण लेता हूँ ॥ २९ ॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं में रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ ३० ॥

राम मेरी माता हैं, राम मेरे पिता हैं, राम मेरे स्वामी हैं और राम ही मेरे सखा हैं । दयामय रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं, उनके सिवा और किसी को मैं नहीं जानता-बिल्कुल नहीं जानता ॥ ३० ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥ ३१ ॥

जिनकी दायीं ओर लक्ष्मण जी, बायीं ओर जानकी जी और सामने हनुमान जी विराजमान हैं, उन रघुनाथ जी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३१ ॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥ ३२ ॥

जो सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रणक्रीडा में धीर, कमलनयन रघुवंशनायक, करुणामूर्ति और करुणा के भण्डार हैं उन श्री रामचन्द्र जी की मैं शरण लेता हूँ ॥ ३२ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिनकी मन के समान गति और वायु के समान वेग है जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्री रामदूत की मैं शरण लेता हूँ ॥ ३३ ॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ ३४ ॥

कवितामयी डाली पर बैठकर मधुर अक्षरों वाले राम-राम इस मधुर नाम को कूजते हुए वाल्मीकि रूप कोकिलकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३४ ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकभिरामं श्रीरामं भुयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ३५ ॥

आपत्तियों को हरने वाले तथा सब प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाले लोकाभिराम भगवान् राम को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ ॥ ३५ ॥

भर्जनं भववीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥ ३६ ॥

'राम-राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसार बीजों को भून डालने वाला, समस्त सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति कराने वाला तथा यमदूतों को भय-भीत करने वाला है ॥ ३६ ॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे,
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासाऽस्म्यहं,
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥ ३७ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजाओं में श्रेष्ठ श्रीराम जी सदा विजय को प्राप्त होते हैं । मैं लक्ष्मीपति भगवान् राम का भजन करता हूँ । जिन रामचन्द्र जी ने सम्पूर्ण राक्षस सेना का ध्वंस कर दिया था, मैं उनको प्रणाम करता हूँ । राम से बड़ा और कोई आश्रय नहीं है । मैं उन रामचन्द्र जी का दास हूँ । मेरा चित्त सदा राम में ही लीन रहे; हे राम ! आप मेरा उद्धार कीजिये ॥ ३७॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ ३८ ॥

(श्री महादेव जी पार्वती जी से कहते हैं -) हे सुमुखि ! राम नाम विष्णुसहस्रनाम के तुल्य है । मैं सर्वदा 'राम, राम, राम इस प्रकार मनोरम राम नाम में ही रमण करता हूँ ॥ ३८ ॥

इति श्रीबूधकौशिकमुनिविरचितं
श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना ।
कर बिनु करम करइ बिधि नाना ॥
आन रहित सकल रस भोगी ।
बिनु बानी बकता बड़ जोगी ॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा ।
गहइ घ्रान बिनु बास असेषा ॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी ।
महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री राम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥

कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दारथ-नंदन ॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानु-भुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजन।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ॥

श्री रामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन वनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

।। श्रीहनुमते नमः ।।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर विमल जसु जो दायक फल चारि ।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग वंदन ।।
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि सुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँधि गए अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ॥
अपना तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
सब कर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निंकदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रधुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसी दास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥ टेक
जाके बल से गिरिवर काँपै । रोग दोष जाके निकट न झाँपै ॥ १
अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ २
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ॥ ३
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ॥ ४
लंका जारि असुर सँहारे । सियारामजी के काज सँवारे ॥ ५
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्रान उवारे ॥ ६
पैठि पताल तोरि जम-कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ॥ ७
वायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ॥ ८
सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ॥ ९
कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अंजना माई ॥ १०
जो हनुमान (जी) की आरति गावै । वसि बैकुंठ परमपद पावै ॥ ११

श्री हनुमत्-स्तवन

सो.- प्रनवउँ पवन कुमार खल बन पावक ग्यानधन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वारयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्जनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥

यत्र यत्र रघुनाकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री गोविन्द दामोदर स्तोत्रम्

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।

वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनासा स्मरामि ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

विक्रेतुकामा किल गोपकन्या मुरारिपादार्पितचित्तवृत्ति ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गृहे गृहे गोपवधुकदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम् ।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविंद दामोदर माधवेति ॥

सुखं शयाना निलये निजेऽपि नामानि विष्णोःप्रवदन्ति मर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविंद दामोदार माधवेति ॥

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्तभक्तार्तिविनाशनानि गोविंद दामोदर माधवेति ॥

सुखावसाने इदमेव सारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम् ।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविंद दामोदर माधवेति ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीकृष्ण राधावार गोकुलेश गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति ॥

श्री कृष्ण को नमस्कार

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

गाय तथा ब्राह्मणों के हित के लिए, जगत् का कल्याण करने वाले ब्राह्मण ही जिनके देव हैं ऐसे श्री गोविन्द-कृष्ण को नमस्कार है ।

सूर्य को नमस्कार

आदि देव ! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥

हे आदिदेव सूर्यनाराण ! आपको नमस्कार है । भास्कर ! प्रकाश देने वाले आप मेरे पर प्रसन्न हों, हे दिनकर ! देव ! आपको मैं प्रणाम करता हूँ । विश्व में प्रकाश फैलाने वाले हे देव ! आप को नमस्कार हो ।

श्रुति स्मृति पुराणोक्त शुभ फल की प्राप्ति के लिए तथा शरीर की आयु-आरोग्यता की सिद्धि के लिए तथा श्री सूर्य नारायण की प्रीति के लिये प्रतिदिन प्रातःकाल में संकल्प करके श्री सूर्य का ध्यान तथा पूजन करना चाहिए ।

मंत्र-ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती,
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी,
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥

इस प्रकार ध्यान करके पात्र में जल लेकर उसमें गन्धाक्षत पुष्प डालकर हाथों में पात्र लेकर 'श्री सूर्यनारायणाय नमः' इस प्रकार प्रणाम करके सूर्य को अर्ध्य देवे ।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

हे हजारों किरणों वाले सूर्य ! पधारो । हे तेज के समूह ! जगत् के स्वामी ! मुझ पर कृपा करो । हे दिवाकर ! मेरे द्वारा दिया हुआ यह अर्घ्य स्वीकार करो । (तीन अर्घ्य; देवे) उसके बाद साष्टांग नमस्कार करे ।

सूर्य को द्वादश नमस्कार

ओम् मित्राय नमः । ओम् रवये नमः । ओम् सूर्याय नमः । ओम् खगाय नमः । ओम् पूष्णे नमः ओम् हिरण्यगर्भाय नमः । ओम् मरीचये नमः । ओम् आदित्याय नमः । ओम् सवित्रे नमः । ओम् अर्काय नमः । ओम् भास्कराय नमः । ॐ मानवे नमः ॥

ऐसे नमस्कार करके कहे कि हे सूर्य ! आप मुझ पर प्रसन्न हों **नमस्कार का फल**-जो आदित्य को प्रतिदिन नमस्कार करते हैं उनको हजारों जन्मों तक कभी दरिद्र नहीं होता तथा पुण्य और तेज बढ़ता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री गुरुदेव की आरती

जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी, गुरु.
जय-जय मोह विनाशक भव बंधनहारी, जय देव गुरु देव ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव गुरु मूरति धारी, गुरु.
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी, जय देव गुरु देव ॥ २ ॥
जप तप तीरथ संयम दान विविध दीने, गुरु.
गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीने , जय देव गुरु देव ॥ ३ ॥
माया मोह नदी जल जीव बहे सारे, गुरु.
नाम जहाज़ बिठाकर गुरू पल में तारे, जय देव गुरु देव ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारे, गुरु.
ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारे, जय देव गुरु देव ॥ ५ ॥
नाना पंथ जगत में निज निज गुण गावे, गुरु.
सबका सार बता कर गुरु मारग लावे, जय देव गुरु देव ॥ ६ ॥
गुरु-चरणामृत निर्मल सब पातक हारी, गुरु.
वचन सुनत तम नाशे सब संशय टारी, जय देव गुरु देव ॥ ७ ॥
तन मन धन सब अर्पण गुरु चरणन कीजै,गुरु.
ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति लीजे, जय देव गुरु देव ॥ ८ ॥

श्रीवासुदेव वन्दन तथा संन्यासी महात्माओं का पूजन

ओम् नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रना पादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥ १ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूत निवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ॥ ३ ॥

शंकरं शंकराचार्यं केशवं वादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥ ४ ॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने ।
व्योमवद् व्याप्त देहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥ ५ ॥

भगवान् के दो स्वरूप हैं एक 'चल' और दूसरा रूप है 'अचल' । सद्गरुदेव तथा संन्यासी-महात्मा भगवान् का चल रूप है तथा मंदिर में प्रतिष्ठित प्रतिमा यह भगवान् का अचल रूप है । इन दोनों का पूजन पुरुषसूक्त से षोडशोपचार की विधि से करना चाहिए अथवा ऊपर दिए हुए श्लोकों से यथासाध्य पूजन करे । इन श्लोकों का अर्थ नीचे दिया जाता है ।

हजारों चरण, आँख, शिर, उरु तथा भुजाओं वाले, हजारों नाम, वाले, अविनाशी, हजारों, करोड़ों युगों को धारण करने वाले, हजारों मूर्तस्वरूप धारी श्री पुरुषोत्तम अनन्त भगवान् को मेरा नमस्कार हो ॥ १ ॥ नाभि में कमल वाले विष्णु को नमस्कार, जल में शयन करने वाले नारायण को नमस्कार, हे केशव ! हे अनन्त ! आपको नमस्कार हो । हे वांसुदेव ! आपको नमस्कार ॥ २ ॥ वासुदेव के स्वरूप से तीनों लोक व्याप्त हैं, हे वासुदेव ! आप सब भूतों में वसते हैं। आपको नमस्कार है ॥ ३ ॥ शंकर रूप श्री शंकराचार्य विष्णु रूप श्री व्यास वे सूत्रकार श्री व्यास तथा भाष्यकार श्री शंकराचार्य दानों पूज्यों को पुनः २ वन्दन हो ॥ ४ ॥ ईश्वर, गुरु और अत्मा इस प्रकार की मूर्तियों के भेद से विभक्त होते हुए भी जो वास्तव में अविभक्त आकाश के समान व्यापक स्वरूप हैं, ऐसे श्री दक्षिणामूर्ति महादेव को नमस्कार है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विद्यातीर्थ महादेव को वन्दन

यस्य निःश्वसितो वेदाः यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ महेश्वरम् ॥

जिसके श्वास से वेद प्रकट हुए हैं । जिसने वेदों के ज्ञान से सम्पूर्ण जगत् का निर्माण किया है, ऐसे ज्ञानमय तीर्थरूप महेश्वर को वन्दन हो ।

श्री दत्तात्रेय को नमस्कार

आदौ ब्रह्मा ततो विष्णुरन्ते देवः सदाशिवः ।
मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥

प्रथम ब्रह्मा पश्चात् विष्णु और अन्त में सदाशिव देव, ऐसे मुर्तित्रयरूप हे दत्तात्रेय ! आपको नमस्कार हो ।

पीपल का पूजन

मूलतो ब्रह्मारूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ।
अग्रतः शिवरूपाय अश्वत्थाय नमो नमः ॥

जिसका मूल ब्रह्मारूप, मध्य विष्णुरूप और उपरि भाग शिवरूप है, ऐसे पीपल के वृक्ष को मैं नमस्कार करता हूँ ।

तुलसी वन्दन

तुलसी श्रीसखि शिवे पापहारिणि पुण्यदे ।
नमस्ते नारदनुते नमो नारायणप्रिये ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लक्ष्मी जी जिनकी सखी हैं, जो कल्याणस्वरूप, पाप हर कर पुण्य देने वाली हैं नारद जी भी जिन्हें नमन करते हैं, ऐसी नारायण भगवान् की प्रिया श्री तुलसी माता को मैं नमस्कार करता हूँ ।

गौ महत्व 'गो पूजन'

तुष्टास्तु गावः शमयन्ति पापं, दत्तास्तु गावस्त्रिदिवं नयन्ति ।
संरक्षिताश्चोपनयन्ति वित्तं, गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किञ्चित् ॥

वन्दनीयाश्च पूज्याश्च गावः सेव्यास्तु नित्यशः ।
गावः कृशातुराः पाल्याः श्रद्धया पितृमातृवत् ॥

सेवासे संतुष्ट हुई गौवं पाप को नष्ट करती हैं । योग्य अधिकारी को दान करने से दाता को स्वर्ग में ले जाती हैं । अच्छी तरह से सुरक्षित गौवें धन देती हैं अतः गौ के समान दूसरा कोई उत्तम धन नहीं है । गौवें वन्दनीय तथा पूजनीय हैं । कृश एवं रोगी गौवों की माता-पिता के समान बड़ी श्रद्धा से सेवा करनी चाहिए ।

गौ-सेवा से वंश वृद्धि तथा सुख, समृद्धि की वृद्धि होती है । भगवान् श्री राम तथा गोपालनन्दन भगवान् श्री कृष्ण ने हमारे सामने गौ सेवा का आदर्श स्थापित किया था । **'गावो मे अग्रतःसन्तु'** आदि श्लोक इस आदर्श के प्रमाण हैं । अस्तु-अब गाय का पूजन कीजिए ।

पंचगावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महार्णवे ।
तासां मध्ये तु या नंदा तस्यै धेन्वै नमो नमः ॥

समुद्र मंथन के समय पाँच गौवें उत्पन्न हुई उनमें नन्दा नाम की कामधेनु को मैं नमस्कार करता हूँ, पूजता हूँ ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गंगा पूजन

नमामि गङ्गे. (यह श्लोक स्नान प्रसंग में देखें)

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात्योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।।

हे गंगा जी, देवों एवं दैत्यों के द्वारा पूजित अलौकिक रूप वाले आपके चरण कमलों की मैं वन्दना करता हूँ । तुम मनुष्यों को उनकी भावना के अनुसार भोग तथा मोक्ष देती हो । जो मनुष्य गंगा जी से सौ योजन दूर रहकर **'गंगा-गंगा'** ऐसा बोलता है वह सब पापों से छूट जाता है और विष्णु के अमर पद को पाता है ।

शंख जल से मार्जन

शंख मध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।।

भगवान् के ऊपर घुमाया हुआ शंख का जल अंगस्पर्श से ब्रह्म-हत्या आदि पापों को नष्ट करता है ।

देवतीर्थ-चरणामृत

पूजन के बाद भगवान् विष्णु को चढ़ाई हुई तुलसी देह शुद्धि के लिए खानी चाहिए पूजन की तुलसी खाने से चान्द्रायण व्रत से भी अधिक पुण्यफल होता है । चरणामृत भी अवश्य लेना चाहिए ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।।

दुःख और दुर्भाग्य के विनाश के लिए तथा सब प्रकार के पापों की निवृत्ति के लिए विष्णु-शिव आदि देवों का चरणामृत पीना चाहिए तथा शिर पर धारण करना चाहिए।

नैवेद्य

भगवान् के नैवेद्य का भोजन जो तुलसीयुक्त है तथा भगवान् के चरणामृत जल को जो ग्रहण करता है उसको अनेक यज्ञों का फल मिलता है । इसलिए शिव-विष्णु आदि पंचदेव का नैवेद्य अवश्य ग्रहण करे ।

ब्राह्मण प्रार्थना

आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः ।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ।।

कठिन विपत्ति रूप अन्धकार को नष्ट करने के लिए हजारों सूर्यों के समान, इच्छित वस्तुओं को पूर्ण करने के लिए कामधेनु के समान, सब तीर्थों के पवित्र जल के समान पावन, पवित्र मूर्ति ब्राह्मण के चरण की रज मेरी रक्षा करे ।

निम्न मंत्र से ब्राह्मण को रक्षा बाँधे

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निम्न मंत्र से ब्राह्मण को तिलक करे-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय. ॥

यजमान को 'ओम् स्वस्ति न इन्द्रों. इस मंत्र से तिलक करे तथा निम्न मंत्र से रक्षा बाँधे-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

निम्न मंत्र से यजमान को आशीर्वाद देवे ।

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

सायंकाल में दीपक को नमस्कार करने का मंत्र-

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु से पापं सन्ध्यादीपं नमोऽस्तु ते ॥

दीपक की ज्योति परब्रह्मस्वरूप तथा जनार्दन रूप है । हे दीप ! मेरे पाप का नाश करो । मैं सन्ध्या कालीन दीपक को नमस्कार करता हूँ ।

हे दीप ! तू आरोग्य, सुख, सम्पत्ति प्रदान कर, कल्याण कर, किसी को शत्रु समझने की बुद्धि का नाश हो । मैं दीप ज्योति को नमस्कार करता हूँ ।

दीपावली पूजन

दीपक जलाकर पात्र में रखकर पूजन करके नीचे दी गई प्रार्थना करे-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भो दीप ! त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक ।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय ॥
ओम् दीपेभ्यो नमः ॥

आरती- चक्षुर्द सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।

हे दीपक ! तुम ब्रह्म रूप हो, अन्धकार के नाशक हो, मेरी इस पूजा को स्वीकार करो तथा तेज की वृद्धि करो । दीपक को मेरा नमस्कार हो । सब लोकों को प्रकाशित करने वाली तिमिर का नाश करने वाली यह आरती मैंने भक्ति पूर्वक अर्पण की है हे दीपावली परमेश्वरी ! इसे आप स्वीकार करें ।

कुबेर पूजन

पेटी में सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर आवाहन करके पूजन करे-

आवाहयामि देवत्वमिहायाहि कृपां कुरु ।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥

हे देव ! आप यहाँ पधारें, हे देव श्रेष्ठ कुबेर ! मेरे धर की नित्य वृद्धि तथा रक्षा करो-

शीतला पूजन

विस्फोटक की निवृत्ति के लिए शीतला माता का पूजन करना चाहिए-

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे शीतले ! तुम जगत् की माता हो, पिता हो, तुम ही जगत् को धारण कर रही हो । हे शीतला माता ! मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ ।

नवग्रह पूजन

बाँये हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से निम्न प्रत्येक मंत्र से चावल रखे-

सूर्य- मण्डल के मध्य में (लाल गोलाकार)

ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

हे सूर्य ! यहाँ पधारिए । यहाँ विराजिए ।

मंत्र-ओम् सूर्याय नमः ।

चन्द्र-अग्निकोण में (अर्धचन्द्र श्वेत)

ओम् इमं देवा असपत्नँ्सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठया महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रमममुष्ये पुत्रमस्यै विष एषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाँ्राजा ॥

हे चन्द्र ! यहाँ आइए । यहाँ विराजिए ।

मंत्र-ओम् सोमाय नमः ।

मङ्गल-दक्षिण में (त्रिकोण लाल)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्
अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति ॥

हे मंगल ! यहाँ आइए । यहाँ विराजिए ।

मंत्र-ओम् भौमाय नमः ।

बुध-ईशान कोण में (नीला धनुष)

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथा मयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

हे बुध ! यहाँ आइए । यहाँ विराजिए ।

मंत्र-ओम् बुधाय नमः ।

बृहस्पति-उत्तर में (पीला-अष्टदल)

बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

हे बृहस्पते ! यहाँ आहए । यहाँ विराजिए ।

मंत्र-ओम् बृहस्पतये नमः ।

शुक्र-पूर्व में (श्वेत पंचकोण)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ्शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।

हे शुक्र ! यहाँ आइये । यहाँ विराजिए

मंत्र-ओम् शुक्राय नमः ।

शनि-पश्चिम में (काला-पुरुष)

ओम् शन्नो देवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये ।
शं योरभिस्रवन्तु नः ॥

हे शनैश्चर ! यहाँ पधारिए । यहाँ विराजिए ।

मंत्र-ओम् शनैश्चराय नमः ।

राहु- नैर्ऋत्यकोण में (काला मकर) ।

ओम् कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठयावृता ॥

हे राहो ! यहाँ पधारें । यहाँ विराजें ।

मंत्र-ओम् राहवे नमः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

केतु-वायव्य कोण में (काला ध्वज)

ओम् केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः ॥

हे केतो ! यहाँ आइए । यहाँ विराजिए ।

ओम् केतवे नमः ।

ओम् सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः ।

गन्ध-अक्षत पुष्प आदि से पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे-

ओम् ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, और केतु ये सब देव तथा ग्रह सुख एवं शान्ति का विस्तार करने वाले हों ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पंच महायज्ञ

गृहस्थ के घर में चूल्हा, चक्की, झाड़ू, ऊखल-मूसल तथा पनिहारा ये पाँच हिंसा के स्थान हैं। ज्ञात-अज्ञात रूप से इन पाँच वस्तुओं का सेवन करने से छोटे मोटे जीवों की हिंसा होती रहती है इस हिंसा जनित दोष (पाप) की निवृत्ति के लिए क्रमश: महर्षियों ने पंचमहायज्ञों का विधान किया है जो प्रायश्चित्त रूप से प्रतिदिन करना आवश्यक है।

१. वेद, वेदाङ्ग, भक्तिशास्त्र एवं धर्मशास्त्र का नित्य-प्रति पठन-पाठन करना तथा नियमित ब्रह्मोपासना करना 'ब्रह्मयज्ञ' है।

२. श्राद्ध, तर्पण तथा बड़े-बूढ़ों की तथा माता पिता की सेवा करना 'पितृयज्ञ' है ।

३. देवताओं का पूजन और होम-हवन 'देवयज्ञ' है ।

४. बलि-वैश्वदेव करना 'भूत यज्ञ' है ।

५. अतिथि सत्कार 'मनुष्य यज्ञ' है ।

जो मनुष्य इन पंचमहायज्ञों को यथाशक्ति प्रतिदिन करता है वह घर में रहकर भी 'पंचसूना दोष' से बच जाता है तथा पुण्य प्राप्त कर महान् यश एवं ऐश्वर्य को पाकर सुखी समृद्ध होता है ।

बलि वैश्वदेव

भण्डार में अग्नि जिमाना एवं गाय, कुत्ता आदि पशुओं को अन्न का भाग देवा 'बलि वैश्वदेव' कहलाता है । भोजन तैयार होने पर बिना नमक मिर्च के पदार्थ मिष्ठान्न खीर, भात, रोटी आदि में घी व शक्कर आदि के द्वारा प्रथम अग्नि जिमावे यानी निम्न

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंत्रों के द्वारा गार्हपत्याग्नि में हवन करे । प्रत्येक मंत्र से एक-एक आहुति देवे ।

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥ अग्रणी परमात्मा के लिए यह आहुति है ।

ओम् सोमाय स्वाहा ॥ २ ॥ सब पदार्थों को उत्पन्न करने वाले सोम देवता के लिए यह आहुति अर्पण हो ।

ओम् अग्निसोमाभ्यां स्वाहा ॥ ३ ॥ अग्नि तथा सोम देवता के लिए यह आहुति अर्पण हो ।

ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ विश्वेदेव के लिए यह आहुति समर्पित हो ।

ओम् धन्वन्तरये स्वाहा ॥ ५ ॥ भगवान् धन्वन्तरि के लिए यह आहुति प्राप्त हो ।

ओम् कुन्हे स्वाहा ॥ ६ ॥ अमावस्या-यज्ञपति के लिए यह आहुति अर्पण हो ।

ओम् अनुमत्यै स्वाहा ॥ ७ ॥ पूर्णिमा-चितिशक्ति के लिए यह आहुति अर्पण हो ।

ओम् प्रजापतये स्वाहा ॥ ८ ॥ प्रजापति के लिए यह आहुति है ।

ओम् द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥ ९ ॥ द्युलोक तथा पृथ्वी पति परमात्मा के लिए यह आहुति समर्पित है ।

ओम् स्विष्टकृते स्वाहा ॥ १० ॥ सुख स्वरूप तथा सुख देने वाले परमात्मा के लिए यह आहुति समर्पित है ।

इस प्रकार हवन करने के बाद क्रमशः इन्द्र, यम, वरुण, सोम, तथा उनके अनुयायियों को तत्तद्दिशा में तथा मरुत् को द्वार में जल को जल में, वनस्पति को ऊखल-मूसल में बलि देवे । वास्तुपति, लक्ष्मी, महाकाली, ब्रह्मा और विश्वेदेवों को दिनचर प्राणियों तथा रात्रिंचर प्राणियों को बलि प्रदान करे । (यहाँ बलि शब्द का अर्थ भोजन है) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गाय, कुत्ता, कौवा तथा पतित, श्वपच, पापरोगी, चींटी, मकौड़ा आदि जीव-जन्तुओं को जमीन पर धीरे से अन्न का भाग दे । इस प्रकार बलि वैश्वदेव यज्ञ करके प्रथम अतिथि को भोजन करावे फिर संन्यासी तथा ब्रह्मचारियों को उचित सम्मान के साथ भिक्षा देवे । विद्वान् और तपस्वी ब्राह्मणों की मुखाग्नि में दिया हुआ हव्य-कव्य इस लोक के समस्त संकटों से तथा परलोक के समस्त पापों से बचाता है तथा परम सुख प्रदान करता है । **ओम् शम् ।**

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ

अथ हवन विधि प्रारम्भः

हवन करने के लिए हवन के उपयोगी सामान पहले एकत्रित कर ले फिर हवन करने बैठे। जैसे-कुण्ड-वेदी या ताम्बा का कुण्ड बनवाले। कलश, लोटा, पंचपात्र, आचमनी, एक घृत पात्र, शाकल्य पात्र, स्रुवा, चिमटा, पंखा, समिधा (लकड़ी के टुकड़े), अग्नि या घी में भीगी हुई बत्ती या कपूर, दियासलाई की डिब्बी-इत्यादि साधन एकत्रित कर ले। एक दो तरभाणे (तष्टा) या रकेबी रख लेवे।

समिधा

पलास, आम, पीपल, बड़, बेल, तुलसी, अपामार्ग, गूलर आदि वृक्षों की समिधायें लेनी चाहिए। परन्तु समिधा कृमि (कीड़ा) लगी, घुनी हुई, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हुई आदि दूषित न हो। उनमें जीव आदि भी न चढ़े हों। भली प्रकार देख लेना चाहिए।

हवन-सामग्री

हवन करने के लिए सबसे उत्तम पदार्थ घी है। कोई दूसरी सामग्री उपस्थित न हो तो केवल घी से ही हवन करना चाहिये। सामग्री के पदार्थों में तिल से आधे चावल, चावल से आधे जव, जव से आधी शक्कर एवं चारों का चतुर्थ भाग घी डाले। इसमें कपूर, काचरी, नागरमोथा, बालछड़, छार, छरीला, चन्दन का चूरा, राल, धूप, गूगल, बड़ी इलायची, बेलगिरि, केशर, कपूर, ब्राह्मी, गुलाब, जाई, जूई, चमेली, मोगरा, जासोदं के फूल, सूखा मेवा, ताजे फल इत्यादि वस्तु साफ कर, कूटने योग्य चीजों को कूट कर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिला लें । प्रतिदिन काम की सांमग्री लेकर हवन करें । पंचामृत बना लें । थोड़ा मधु हवन सामग्री में भी डालें । केशर चन्दन के साथ घिस कर सामग्री में मिलावें । अगरबत्ती एवं घी का दीप जला लें । फिर हवन करने के लिए शान्त प्रसन्न मन से बैठें । पहले आचमन अङ्गस्पर्शादि करें ।

हवन विधि

आचमनम्

पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख या जैसी अनुकूलता हो आसन पर बैठ कर निम्न मंत्रों से तीन आचमन करे ।

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥
ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

अङ्गस्पर्शः

बाएँ हाथ में थोड़ा सा जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से निर्दिष्ट अङ्गों का स्पर्श करें और मानसिक भावना करें कि मेरे सब अङ्ग प्रत्यङ्ग शक्ति-शाली, तेजस्वी एवं यशस्वी हो रहे हैं । एवं विशुद्ध हो रहे हैं ।

ओम् वाङ् मे आस्येऽस्तु ॥ १ ॥ (मुख में जल स्पर्श करे) ।

अर्थ-हे (ओम्) परमात्मन् ! (मे आस्ये) मेरे मुख में (वाक्) वक्तृत्व शक्ति (अस्तु) होवे (स्थिर रहे) ।

ओम् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ २ ॥ (दोनों नासारन्ध्रों में)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थ-हे प्रभो ! मेरी दोनों नासिकाओं में प्राणशक्ति स्थिर रहे ।

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ ३ ॥ (दोनों नेत्रों में) ।

अर्थ-हे दिव्य दृष्टिप्रद ! मेरी दोनों आँखों में दृष्टि रहे ।

ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ ४ ॥ (दोनों कानों में) ।

अर्थ-हे स्वामिन् ! मेरे दोनों कानों में श्रवण शक्ति रहे ।

ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ ५ ॥ (दोनों भुजाओं में) ।

अर्थ-हे परमेश्वर ! मेरी दोनों बाहुओं में बल होवे ।

ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ ६ ॥ (दोनों जंघाओं में) ।

अर्थ-हे प्रजेश्वर ! मेरी दोनों जंघाओं में सामर्थ्य रहे ।

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ ७ ॥

(सारे शरीर पर)

अर्थ-हे परमेश्वर ! मेरे सब अवयव (अरिष्टानि) कृश न होते हुए अथवा (अरिष्टानि) हृष्ट-पुष्ट होते हुए (मे तन्वा सह) मेरे शरीर के साथ (तनुः) शरीर के सब अवयव उत्तम अवस्था में (सन्तु) रहें ।

अब सप्रणव शीर्ष सहित गायत्री मन्त्र से तीन प्रणायाम करके अग्नि स्थापन करे ।

अरणी नामक लकड़ियों का संघर्षण करके यज्ञाग्नि प्रकट करे । अथवा प्रतिदिन के देव यज्ञ में निम्न प्रकार से अग्नि स्थापन करे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि-स्थापन प्रकार

किसी ताँबा*, पीतल के पात्र में अग्नि रख कर दूसरे पात्र से ढक कर आहवनीय अग्नि लावे अथवा कुंड में घी की बत्ती बना कर रख दे या कपूर की डली रख दे और उसे दीपक से अगरबत्ती* जलाकर निम्न मन्त्र से दीप्त कर अग्नि स्थापन करे ।

मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव व्वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥ १ ॥

(यजु. ३-५)

शब्दार्थ- (ओम्) है परमेश्वर ! आप (भूर्भूवः स्वः) सच्चिदानन्द स्वरूप से सबके आधार हैं । (द्यौः- इव) आकाश के समान व्यापक महान् विस्तृत तथा (पृथिवीव) पृथ्वी के समान फैले हुए हैं । हे भगवन् ! यह पृथ्वी सौन्दर्य से परिपूर्ण हो जाए । हे देवताओ ! यज्ञभूमि पृथ्मी माता ! मैं (ते पृष्ठे) तेरे पृष्ठ (पीठ) पर (जहाँ ऐश्वर्य प्रकट करना चाहता हूँ) वहाँ (अन्नाद) अग्नि का स्थापन करता हूँ ।

निम्न मंत्र बोलकर पंखे से अग्नि को अच्छी तरह प्रज्वलित करें । (मुख से या भूंगली से न फूकें) ।

ओम् उद्बुध्यस्वाऽग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसँसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥ २ ॥

(यजु. १५-५४)

---

* लोहे का पात्र निषिद्ध है । * दियासलाई की कड़ी लगाना निषेध है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थ- हे ज्ञानाग्ने ! उत्तम रीति से चैतन्य को प्राप्त होवो, और जागृत होवो । इस यज्ञ में यज्ञमान और शुभ कर्मों से संसर्ग करो । तथा प्रसन्न होवो । हे विद्वानो ! तुम सब इस कर्म में अधिकार पूर्वक बैठो (कर्म करो) । फिर खूब प्रज्वलित अग्नि में नीचे के तीन मंत्रों से तीन समिधा यानी १-१ मंत्र से १-१ समिधा घी में डुबो-डुबो कर आहुति करें (अग्नि में चढ़ावें) ।

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे न मम ।।

अर्थ- हे सर्वज्ञाग्ने ! मेरा आत्मा तेरे लिए इन्धन रूप है । तू इससे प्रदीप्त हो और बढ़ तथा हमको भी प्रदीप्त कर एवं बढ़ा । प्रजा से, पशुओं से, ब्रह्मतेज से, अन्नादि से समृद्ध करें । यह सुन्दर आहुति जातवेद अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं । निम्न दो मंत्रों से दूसरी समिधा चढ़ावें -

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ।। १ ।। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा ।। २ ।। इदमग्नये जातवेदसे न मम ।

(यजु. ३- १।२)

अर्थ-हे मनुष्यो ! तुम सब समिधा एवं घी से इस अतिथि रूप अग्नि को प्रज्वलित करो तथा भक्ति भाव से पूजन करो । एवं हवन सामग्री को यथाविधि हवन करो ।। १ ।। अच्छी तरह प्रदीप्त हुए जगमगाते हुए पदार्थों में तपाया हुआ घृत तुम चढ़ाओ । यह सुन्दर आहुति है । परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं ।

तीसरी समिधा निम्न मंत्र से चढ़ावें ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् तन्त्वासमिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ ३ ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम ॥

(यजु. ३-३)

अर्थ- हे सर्व अङ्गों में व्यापक ज्ञानाग्ने ! उस तेरे सामर्थ्य एवं बल को समिधा तथा घृत से बढ़ाता हूँ । तू बृहद् हो । यह सुन्दर आहुति है । यह आहुति ज्ञान रूप अग्नि के लिए है यह मेरे लिए नहीं ।

घृताहुति

ओम् अयन्त इध्म आत्मा. । (पृष्ठ १७२) इस मन्त्र से पाँच घृत की आहुति देवें ।

जल प्रसेचनम्

(दाहिने हाथ में पानी लेकर निम्न मंत्रों से यज्ञ कुण्ड के चारों ओर पानी छिड़क दें ।)

ओम् अदितेऽनु मन्यस्व । (पूर्व दिशा में)

अर्थ - हे परमतेजस्वी आदित्य ! हमें अनुकूल मति दीजिए ।

ओम् अनुमतेऽनु मन्यस्व । (पश्चिम में)

अर्थ-हे बोधमय बुद्धिप्रदेश्वर ! हमें ज्ञानमयी मति दीजिए ।

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व । (उत्तर में)

अर्थ- हे सब विद्याओं के भण्डार ! सरस्वती ! ज्ञान विज्ञानमयी मति के साथ हमें प्रसन्नता दीजिए ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् देव सवितः प्रमुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा ॥

(यजुः ९-१)

इससे दक्षिण में छिड़क कर चारों ओर जल छिड़कें ।

अर्थ- हे दिव्य गुण युक्त जगदुत्पादक परमेश्वर यज्ञ को बढ़ाइये । (विस्तृत कीजिए) यज्ञपति । (यज्ञकर्ता) को ऐश्वर्य के लिए प्रवृद्ध कीजिए । हे सर्वाधार बुद्धि शोधक प्रभो ! हम सब की बुद्धि को शुद्ध कीजिए । हे विद्याधिपते ! हम सब की विद्या एवं वाणी मधुर कीजिए ।

*आघाराज्याहुति

ओम् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥

(वेदी के उत्तर भाग में)

ओम् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदन्न मम ॥

(दक्षिण में) (दक्षिणाग्नि प्रदीप्त प्रसन्न होवे)

अर्थ- हे व्यापकेश्वर ! यह आहुति सौम्य स्वभाव वाले देव के लिए है, मेरे लिए नहीं ।

निम्न दो मन्त्रों से वेदी के मध्य में आहुति देवें ।

* यह चार आहुतियाँ घी की दें । यदि अधिक जन हवन करने बैठे हों तो घी और सामग्री की आहुति दें ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् प्रजापतये स्वाहा । इदम्प्रजापतये इदन्न मम ॥

अर्थ- हे प्रजापते परमेश्वर ! यह सुन्दर आहुति आपके लिए है, मेरे लिए नहीं ।

ओम् इन्द्राय स्वाहा । इदमिंद्राय इदन्न मम ॥

अर्थ-हे परमैश्वर्यवान् ! यह आहुति इन्द्र के लिए है, मेरे लिए नहीं ।

प्रातः काल अग्निहोत्र के मन्त्र

ओम् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥

अर्थ-ज्योतिस्वरूप परमात्मा जो सूर्यादि ज्योतियों का भी प्रकाशक है उसके लिए सुन्दर आहुति है ।

ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

अर्थ-ब्रह्मज्ञान विद्या बोधप्रद तेजस्वी परमात्मा को हम आहुति देते हैं ।

ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

अर्थः जो स्वयं प्रकाशवान् है । सर्व जगत् का प्रकाशक हैं । सूर्य जगदात्मा है उसकी अनुमति से यह आहुति है ।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्योवेतु स्वाहा ॥

अर्थ-सर्वोत्पादक स्वयं प्रकाशतुल्य प्रीतिसे सम्मिलित होते हुए ऐश्वर्यवान् प्रातःकाल के साथ मिलते हुए प्रीतिपूर्वक वर्तमान सूर्य प्राप्त हो । इसके लिए यह सुन्दर आहुति देते है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सायंकाल में हवन के मंत्र

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

अर्थ-ज्ञान-स्वरूप ज्योति जो स्वयं प्रकाशमान है उसके निमित्त हम यह आहुति देते हैं ।

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

अर्थ-ज्ञान-स्वरूप दीप्तिमान परमेश्वर के निमित्त हम यह आहुति देते हैं ।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

अर्थ-सर्वप्रकाशक ज्ञानस्वरूप ईश्वर के लिए यह आहुति है ।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्रेन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥

अर्थ-परम तेजस्वी विश्व प्रेरक प्रभु की सायंकाल के सूर्य के रूप में वर्तमान विभूति के साथ एवं एश्वर्य युक्त रात्रि के साथ प्रकाशवान् प्रभु प्राप्त हों और हमारा यज्ञ-कर्म सफल हो । उसके निमित्त यह आहुति है ।

यदि सायंकाल में हवन न करना हो तो इन उपर्युक्त चार मंत्रों से घी एवं सामग्री दोनों से प्रातःकाल के हवन में ही आहुतियाँ देनी चाहिए । अथवा दोनों समय इन मन्त्रों की आहुतियाँ दे सकते हैं ।

निम्न आठ मन्त्रों से दोनों काल में घी एवं साकल्य की आहुति दें ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।। १ ।। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ।

अर्थ-हे सर्वाधार परमेश्वर ! अग्नि के उत्तम प्रभाव और भीतर जाने वाले श्वास की स्वस्थता के लिए अर्थात् प्राण वायु के लिए यह सुन्दर आहुति है । मेरे लिए नहीं है ।

ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ।

अर्थ-हे सर्व व्यापक परमात्मन् ! बाहर आने वाले प्रश्वास की स्वस्थता के लिए अर्थात् अपान-वायु के लिए यह सुन्दर आहुति हैं । मेरे लिए नहीं है ।

ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा । इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ।

अर्थ-हे आनन्द स्वरूप प्रभो ! सूर्य के दिव्य तेज एवं सब शरीर में विचरने वाले व्यान-वायु की स्वस्थता के लिए यह सुन्दर आहुति है । मेरे लिए नहीं है ।

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणाऽपानव्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणाऽपानव्यानेभ्यः इदन्न मम ।

अर्थ- हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन् ! अग्नि, वायु, सूर्य के उत्तम प्रभाव के लिए तथा प्राण, अपान एवं व्यान के लिए यह सुन्दर आहुति है । मेरे लिए नहीं है ।

ओम् आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् स्वाहा ।

अर्थ-जलरूप, स्वयं ज्योति स्वरूप, सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म ओंकार परमेश्वर के लिए यह आहुति रूप आदर है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।

अर्थ-हे परमेश्वर ! जिस ज्ञानमयी उत्तम बुद्धि का देवगण तथा पितर सेवन करते हैं । हे ज्ञानाग्ने तेजस्वी प्रभो ! आज मुझे उसी ऋतंभरा प्रज्ञा (ज्ञानमयी बुद्धि) वाला बनाइये । मैं स्वार्थ त्याग करता हूँ ।

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्न आसुव स्वाहा ॥

अर्थ-हे सकल जगत् के देव ! हम सबसे पापों को दूर करो और जो कल्याणकारक गुण हों सो सब हम सबको प्रदान करो ।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम । स्वाहा ।

अर्थ-हे ज्ञानाग्ने ! हम सबको ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए धर्ममय कल्याणकारी मार्ग में ले जाइये और हमसे कुटिलता पाप आदि को दूर कीजिए ।

पूर्वोक्त प्रकार से नित्य देव यज्ञ के बाद यथाशक्ति विशेष आहुति देनी हो तो निम्न मन्त्र से सात बार आहुति देवे-

ओम् भूर्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुः. (गायत्री मंत्र) ओम् आपो ज्योतिरसो. ॥ १ ॥

इस प्रकार सप्त व्याहृतियुक्त शीर्षसहित गायत्री मन्त्र की सात आहुति देने के बाद तीन व्याहृति युक्त शीर्ष रहित गायत्री मन्त्र का जितना जप करते हों उसके दशांश की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आहुति देवें। अथवा कम से कम ११ या २४ आहुति देवें। आहुति देते समय "स्वाहा" बोलें और भावना करें कि यह सुन्दर आहुति परमात्मा के लिए है।

षडक्षर **'ओम् नमः शिवाय'** मन्त्र का जप करने वाले निम्न मन्त्र की यथाशक्ति या जप का दशांश आहुति देवें।

ओम् नमः शम्भवायः. ॥ यदि पूरे मन्त्र की आहुति नहीं दे सकें तो केवल **ओम् नमः शिवाय स्वाहा** ॥ इस मन्त्र से ११ आहुति देवें।

अर्थ-हे कल्याणमय शान्त प्रभो! आपकेलिए आदर सहित यह सुन्दर आहुति है।

सरस्वती मन्त्र

विद्या प्राप्ति की इच्छा वाले यथाशक्ति शुद्धता से निम्न मन्त्र का जप करने के बाद दशांश हवन करें।

"षावकानः" इस मन्त्र के मधुच्छन्दा ऋषि हैं गायत्री छन्द है सरस्वती देवता हैं। 'श्रीं' यह बीज है इष्ट सिद्धि में विनियोग है **"श्रीं" पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती** ॥ **यज्ञं वष्टु धिया वसुः** ॥ हवन करते समय स्वाहा जोड़ दें।

अर्थ-श्री-जो सबको पवित्र करने वाली, अन्न सम्पन्न तथा कर्मों द्वारा प्राप्त होने वाली धन कीं उपलब्धि में कारण है, वे सरस्वती देवी हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा करें और हम सबको विद्या-बुद्धि-पवित्र वाणी से भूषित करें। अथवा यह मन्त्र याद न हो सके तो उपर्युक्त मन्त्र के स्थान में **ओम् श्रीं सरस्वत्यै नमः**-का जप करें और हवन करते समय अन्त में "स्वाहा" पद जोड़ दें।

चारों वेदों के चारों प्रथम मन्त्रों से १-१ आहुति देवें-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऋग्वेद का पहला मन्त्र-**ओम् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातम् ॥**

यजुर्वेद का पहला मन्त्र-**ओम् इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण आप्यायध्वमध्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघ शँ सोध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥**

सामवेद का पहला मन्त्र-**ओम् अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्षि बर्हिषि ॥**

अथर्ववेद का पहला मन्त्र-**ओम् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥**

मृत्यु के ऊपर विजय चाहने वाले निम्न मन्त्र का जप एवं यथा शक्ति हवन करें-

महामृत्युंजय मंत्र

ओम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

(युज, ३-६०)

शब्दार्थ- ओम् हे परमेश्वर ! आप (त्र्यम्बकं) सूर्य चन्द्र एवं अग्नि रूपी तीन नेत्र वाले हैं अतः आप को (यजामहे) हम पूजते हैं । आप (सुगन्धिं) पुण्य-यश रूपी सुगन्धि एवं (पुष्टि वर्धनम्) धनधान्यैश्वार्यादि रूप पुष्टि के बढ़ाने वाले है । हे प्रभो ! मुझे (मृत्योःबन्धनात्) अविद्या-माया रूप मृत्यु के बन्धन से (उर्वारुकम् इव) जैसे पकने पर फल (खरबूजा) वृक्ष (बेल) से सर्वदा के लिए छूट जाता है वैसे ही (मुक्षीय) (मुञ्चस्व) छोड़ दो या छुड़ा दो । (अमृतात् मा मुक्षीय) अमृत यानी स्वस्वरूप रूप स्थिति से च्युत

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न करें, नहीं छोड़ें । आशय यह कि हे प्रभो ! हम आप का सत्कार करते हैं । आप की कृपा से हम जन्म-मरण रूप मृत्यु के संकट से छूटकर सदा के लिए अजरामर अभय अविनाशी पद प्राप्त करें ।

लक्ष्मी की कामना करने वाले निम्न मन्त्र का जप हवन करें-

ओम् हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह । स्वाहा । (ऋ. श्रीसूक्त)

शब्दार्थ-(जातवेदः) हे विश्वप्रज्ञ ज्ञानाग्ने ! (हिरण्यवर्णां) सुवर्ण सदृश वर्ण स्वरूप वाली (हरिर्णीं) हल्दी से निर्मित मूर्ति या हरिणी रूप धारिणी (सुवर्णरजतस्रजाम्) सोने के सदृश वर्ण तथा चाँदी के सदृश क़मल पुष्पों की माला धारिणी तथा सोने चाँदी के अलंकारों से विभूषित (चन्द्रां) चन्द्रमा के समान जगत् को आह्लादित करने वाली (हिरण्मयीं) सुवर्णस्वरूपिणी यानी सुवर्ण ही है विग्रह जिनका ऐसे उक्त लक्षणों वाली (लक्ष्मीं) शुभ लक्षणों से सम्पन्न लाभप्रदा देवी श्री को (मे) मेरे लिए वरदान प्राप्त्यर्थ या मेरे घर में निरन्तर निवास करने के लिए (आवह) बुला लाओ । आशय यह कि हे यज्ञनारायण ! आप की कृपा प्रेरेणा से मदनुग्रहार्थ मेरे घर में सदालक्ष्मी स्थिर रहे । मैं कभी भी निर्धन नहीं होऊँ ।

पुण्य पर्वों में भिन्न-भिन्न मांगलिक मन्त्रों से हवन किया जा सकता है ।

अब निम्न मन्त्र से एक स्विष्टकृत् होमाहुति घी की देवें । या साथ में साकल्य भी छोड़ें ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा नूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुत हुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय । स्वाहा ॥ इदमग्नये इदन्न मम ॥

अर्थ-इस यज्ञ कर्म में जो विधि से अधिक या कम कर्म हुआ हो उस मेरे कर्म को यज्ञदेव स्विष्ट- (स्व-इष्ट) करें और स्विष्टकृत जानें । काम्य एवं प्रायश्चित्त निमित्ताहुतियों के बढ़ाने वाले सुन्दर हुत द्रव्य के स्वीकार करने वाले अग्नि के लिए यह आदर है । हे यज्ञदेव ! हम सब के सब मनोरथ बढ़ाओ यानी सफल बनाओ ।

पूर्णाहुति

ओम् सर्वं वै पूर्ण्ँ स्वाहा ।

अर्थ-हे परमेश्वर ! आप की कृपा से सब पूर्ण है । यह मेरा आत्मा कहता है । अथवा आप सब हैं । अतः आप की पूर्णता से सब परिपूर्ण है ।

आरती पुष्पांजलि करके-

ओम् शन्नो मित्रः शं नोवरुणः । शं भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ।

आदि प्रार्थनानन्तर पूर्णाहुति से शेष घृत जो पात्र में बचा हो उसे दोनों हाथों की हथेलियों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में चुपड़ कर हथेलियों को यज्ञाग्नि में तपाते हुए निम्न मन्त्र बोले-

ओम् तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ।। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ।।

(यजु. ३-१७)

अर्थ-हे शरीर रक्षकेश्वर ! आप मेरे शरीर की रक्षा कीजिए । हे आयुप्रदेश्वर ! मुझे आयु प्रदान कीजिए । हे तेज द्युतिप्रदेश्वर ! मुझे तेज दें । हे अग्ने ! मेरे शरीर में जो कमी है उसकी पूर्ति कीजिए ।

ओम् मेधां मे देवः सविता आदधातु ।।
हे सविता देव ! मुझे उत्तम बुद्धि दीजिये ।
ओम् मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ।।
हे सरस्वती देवी ! मुझे मेधावी बुद्धि दो ।
ओम् मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ।।
हे ऐश्वर्यवान् देव ! मुझे धारणावती बुद्धि दीजिए ।

इन मन्त्रों से अग्नि पर तप्त हथेलियों को अपने सिर-नेत्र मुख यानी सिर से लेकर पैर तक के सभी अंगों पर मलें और जो अंग विकृत हों उस पर अधिक मलें तथा उसके स्वस्थ होने की भावना करें । इससे मन्त्रों में कथित आयु-बल-तेज एवं बुद्धि की शुद्धि वृद्धि होगी तथा शारीरिक-मानसिक दोष दूर होंगे और आप के शरीर में दिव्य शक्ति का संचार होगा । अब थोड़ा सा ध्यान कीजिए तथा दीर्घ श्वास-प्रश्वास करें । श्वास बाहर छोड़ते समय भावना करें कि दूषित प्राण वायु एवं दोष सब बाहर निकल रहे हैं और अन्दर श्वास लेते समय ओंकार के स्मरण के साथ भावना करे कि शुद्ध प्राण वायु सभी दिव्य गुणों के साथ अन्दर प्रवेश कर रहा है । मैं सर्वतः शुद्ध एवं सुखमय हो गया हूँ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्तुति प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ १ ॥

(युज. २२-२२)

अर्थ-हे ब्रह्मन् ! आप की कृपा से संसार में ब्रह्मतेज सम्पन्न ब्राह्मण हों, राष्ट्र में शूर वीर महारथी क्षत्रिय हों । खूब दूध देने वाली गायें एवं भारवाही बैल हों । शीघ्रगामी घोड़े हों । देश की धुरीण (आधार) स्त्रियाँ सुन्दर यशवती चरित्रशीला हों ? रथस्थित योद्धा शत्रु को जीतने वाले एवं शिक्षित सभ्य हों । पुत्र यशस्वी तथा बुद्धिमान् हों । हमारे लिए समय-समय पर वर्षा हो । पृथ्वी अन्न-धन से युक्त हो । वृक्ष फल फूल औषधियों से लदे हों हमारा योग-क्षेम स्वतंत्रता से चलता रहे ।

ओम् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

(यजु. २५-१३)

अर्थ-जो परमेश्वर आध्यात्मिक विद्या-गुण ज्ञान का देने वाला है जो शारीरिक-मानसिक-आत्मिक बलप्रद है । देव भी जिसकी आज्ञा में रहते हैं । जिसकी सब उपासना करते हैं । जिसकी छाया-आश्रय ही अमृत यानी मुफित है । जिससे दूर रहना ही मृत्यु है उस सुख स्वरूप परमेश्वर का हम आत्मत्याग द्वारा पूजन करते हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥ ३ ॥

(ऋ. १-१७१-२)

अर्थ-हे प्रभो ! हम सब मिलकर प्रगति करें, सब मिल-कर सुन्दर भाषण करें । सबके मन संस्कार-सम्पन्न हों पूर्वकालीन देव यानी विद्वान ज्ञानी पुरुष जिस प्रकार अपने कर्तव्य का पालन करते आए हैं उसी प्रकार हम सब भी यथावत् कर्तव्य पालन में तत्पर रहें ।

ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्. ॥ ४ ॥ (पृष्ठ ७२)

ओम् विश्वानि देव सवितः. ॥ ५ ॥ (पृष्ठ १७८)

आत्म शुद्धि

पुष्प से जल छिड़कते जायें-

ओम् प्राणापानव्यानोदानसमाना मे शुद्धयन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ॥ १ ॥

अर्थ- हे परमेश्वर ! आप की कृपा से मेरे प्राणादि पंच शुद्ध हो जायें । मैं प्रकाश स्वरूप हूँ, निष्कलंक और निष्पाप होऊँ, यह मेरी इच्छा है ।

ओम् पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशा मे शुद्धयन्तां ज्योतिरहम्- शेष पूर्ववत् ॥ २ ॥

अर्थ-पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश मुझ में स्थित ये पाँचो तत्त्व शुद्ध हों । मैं प्रकाश हूँ ।

ओम् शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्धयन्तां ज्योतिरहम् - शेष पूर्ववत् ॥ ३ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थ-जो मेरे पाँच तत्त्वों में स्थित शब्दादि पाँच तन्मात्रायें हैं वे शुद्ध हो जायें । मैं प्रकाश हूँ ।

ओम् मनोवाक्कायकर्माणि मे शुद्धयन्तां ज्योतिरहम्- (शे. पू.) ॥ ४ ॥

अर्थ- मेरा मन-वाणी-शरीर एवं उनसे होने वाले सब कर्म शुद्ध हों ।

ओम् अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयआनन्दमया मे शुद्धयन्तां ज्योतिरहम्- (शे.पू.) ॥ ५ ॥

अर्थ-मेरे अन्नमयादि पाँचों कोश शुद्ध हों ।

ओम् आत्मा मे शुद्धयतां ज्योतिरहम्-(शे.पू.) ॥ ६ ॥

अर्थ- मेरा आत्मा शुद्ध हो ।

ओम् अन्तरात्मा मे शुद्धयतां ज्योतिरहम्- (शे.पू.) ॥ ७ ॥

अर्थ-मेरा जीवात्मा शुद्ध (मायारहित) हो ।

ओम् परमात्मा मे शुद्धयतां ज्योतिरहम्- (शे. पू.) ॥ ८ ॥

अर्थ-मेरा परमात्मा शुद्ध हो । मैं ज्योति हूँ ।

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ९ ॥

(यजु. ३६-१७)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थ- हे सर्व दु:खों को शान्त करने वाले परमात्मन् ! आप की कृपा से हमारे लिए आकाश, अन्तरिक्ष, वायु, पृथ्वी, जल औषधियाँ तथा वनस्पतियाँ शान्ति (निरुपद्रव) सुखकारक हों । सूर्य चन्द्रादि ज्ञान देवता तथा इन्द्रादि कर्म देवता सुखप्रद हों तथा विद्वान् भी शान्ति के देने वाले हों । ब्रह्म शान्ति (मुक्ति) प्रद हो । सब उपद्रव शान्त हो जायें । शान्ति (मुक्ति) भी सच्ची शान्ति हो यानी आवागमन वाली ब्रह्मलोकादि की मुक्ति नहीं हो परन्तु जो परब्रह्म की प्राप्ति रूप शान्ति है वह मुझे प्राप्त हो ॥ १० ॥

ओम् आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

अर्थ-प्रकाश मन्द जलता है, वह प्रकाश मैं हूँ । ब्रह्म की ज्योति जलती है, वह मैं हूँ । जो कुछ मैं हूँ, मैं ब्रह्म हूँ । मैं, हूँ मै ब्रह्म हूँ । मैं ही, मैं हूँ । मैं अपने को होम देता हूँ। यही मेरी आहुति है ।

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

॥ओम् तत्सच्छिवार्पणमस्तु ॥

''इति श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्य अनन्तश्री श्रीस्वामीदयानन्दजी
महाराज-वेदपाठिना लिखिता वैदिक-सन्ध्या
एवं हवन-विधिःभाषाटीकासमेता समाप्ता ।''

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भोजन

भोजन करना भी एक यज्ञ ही है । यह शरीर अग्निहोत्र की वेदी है । सब जीवों के मुख अग्नि कुण्ड हैं । सब में रमा हुआ वैश्वानर परमात्मा ही अग्नि है । भोजन के लिए उपयुक्त विद्यमान पदार्थ ही हविष्यान्न है । इस अन्न को यज्ञ (मुख) में आहुति (ग्रास) रूप से अर्पण करना चाहिए । शुद्ध सात्विक न्याय की कमाई से प्राप्त अन्नादि पदार्थ शुद्ध माने जाते हैं । शुद्ध अन्न से मन शुद्ध होगा, शुद्ध एवं सात्विक मन ही ध्यान धारणा से लेकर समाधि का लाभ कराकर ब्रह्म साक्षात्कार में सहायक होता है अतः प्रयत्नपूर्वक शुद्ध आहार सम्पादन करना चाहिए । हाथ पैर धोकर भोजनशाला में जाय, लिपी-पुती हुई स्वच्छ भूमि पर पाटला या उचित आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे, आचमन करके उत्तरीय वस्त्र लेकर अपने दाहिने तरफ जल पात्र रख कर अपने सामने भूमि पर जल से एक बिलस्त चतुष्कोण यंत्र बनाकर उस कर भोजन का पात्र या पत्तल रखे । घी से युक्त अन्न, पायस, भक्ष्य-भोज्य शाकादि को देखकर हाथ जोड़कर 'हमें ऐसा ही भोजन नित्य प्राप्त हो' इस प्रकार भक्ति से अन्न को प्रणाम करके गायत्री मंत्र से अन्न का प्रोक्षण करके **ओम् पितुन्नु.** से स्तुति करके अर्थचिन्तनपूर्वक निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करे ।

ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्रदातारन्तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

हे अन्नपते परमात्मन् ! हम सब को निरामय एवं बलयुक्त अन्न का भाग दीजिए । हे भगवन् ! हमारे पुत्र पौत्र भृत्यादि द्विपाद एवं गवाश्वादि चतुष्पाद प्राणियों के लिए बलप्रद अन्न दीजिए । भाव यह है कि निरन्तर देते रहिए । अन्न की कमी-कभी न रहे । फिर मन ही मन ईश्वर का ध्यान करते हुए भोजन पात्र को दिन में **ओम् सत्यं त्वर्तेन परिषिंचामि** तथा रात्रि में **ओम् ऋतं त्वा सत्येन परिषिंचामि** इस मंत्र से भोजन पात्र को चारों और जल से प्रदक्षिणा करके प्रोक्षण करे फिर भोजन पात्र में से घी युक्त चावल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेकर निम्न मंत्रों से तीन बलि देवे । दाहिने तरफ रखें-

ओम् भूः पतये नमः-

हे भूपति परमात्मदेव ! यह ग्रास आपके द्वारा उत्पादित भूर्लोकस्थ प्राणियों की तृप्ति के लिए है ।

ओम् भुवनपतये नमः-

हे चराचर भुवनेश्वर ! यह भाग सब भुवनों के प्राणियों की तृप्ति के लिए है ।

ओम् भूतानां पतये नमः

पृथिव्यादि पंचभूत तथा तज्जन्य प्राणियों के पालक परब्रह्म परमात्मा के लिए यह आदर है, सब की तृप्ति हो ।

फिर जल देकर हाथ धोकर 'आपोशन' करे । दाहिने हाथ में पानी लेकर बाएँ हाथ की मध्यमा अनामिका तथा अंगुष्ठ के द्वारा भोजन पात्र का स्पर्श करे तथा निम्न श्लोक बोले-

अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वर : ।
एवं ज्ञात्वा तु यो भुंक्ते अन्नदोषैर्न लिप्यते ।।

अन्न ब्रह्मा है, रस विष्णु है, भोक्ता महेश्वर है । ऐसा जानकर जो भोजन करता है वह अन्न-भक्षण रूप दोष से लिप्त नहीं होता (भोजन करते समय अन्न की निन्दा न करे समय पर जो मिले उसी में संतुष्ट रहे) मौन होकर भोजन करे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा-

इस मंत्र से वह दाहिने हाथ वाला जल शब्द किए बिना पी ले फिर पंच प्राणाहुति का मुख में होम करें ।

ओम् प्राणाय स्वाहा । ओम् अपानाय स्वाहा ।
ओम् व्यानाय स्वाहा । ओम् समानाय स्वाहा ।
ओम् उदानाय स्वाहा ।

इसके बाद हाथ धोकर दोनों नेत्रों को जल का स्पर्श करके शिखा खोलकर इष्टदेव का स्मरण करते हुए यथेष्ट भोजन करे । भोजन करके भुक्तशेष किंचित् अन्न का अंश लेकर सूँघकर

मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुंजन्ति पितरोऽधमाः ।
तेषामन्नं मयादत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ।।

इस मंत्र से पितृतीर्थ से भोजन पात्र से बाहर दक्षिण में रख दे ।

उत्तरापोशन - हाथ में जल लेकर-

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा-

इस मंत्र से आधा पानी पीकर आधा पितृतीर्थ से छोड़ दे फिर मौन होकर बाएँ हाथ से शिखा बाँधकर बलि-आहुति लेकर खड़ा होकर वह अन्न कौवों को देकर मिट्टी तथा पानी के द्वारा हाथ-मुख साफ करे । सोलह कुल्ला करे । फिर अंगुष्ठमात्र आत्मा के स्वरूप का विचार करें और प्रभु तृप्त हों ऐसी भावना करे तथा-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥

श्री भगवान् जी कहते हैं कि प्राणियों के देह में मैं जठराग्नि के रूप में रहकर प्राण तथा अपान को नियम में रखकर प्राणियों द्वारा खाए गए भक्ष्य, भोज्य आदि चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ

फिर पेट का स्पर्श करते हुए निम्न श्लोक बोले-

अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च वडवानलम् ।
आहारपचनार्थाय स्मरेद् भीमं च पंचमम् ॥

खाया हुआ अन्न पचाने के लिए अगस्त्य मुनि, कुम्भकर्ण राक्षस, शनि देव, वडवानल अग्नि और पाँचवें भीम का स्मरण करना चाहिए । फिर भगवान् का निर्माल्य तुलसीदल ताम्बूल आदि खाकर शतपद चले । वाम पार्श्व निद्रा रहित शयन करे । फिर इतिहास-पुराण-धर्म शास्त्र आदि का अभ्यास करे और अपने व्यावहारिक कार्य करे । दिन में निद्रा तथा स्त्री का त्याग करे ।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । (गीता)

यज्ञशेष अन्न का भोजन करने वाले सब पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुछ बोध वचन

१. विद्या के समान अन्य कोई चक्षु नहीं, अर्थात् विद्या ही यथार्थ में चक्षु है, सारासार तत्त्व का दर्शक है । सत्य के समान अन्य कोई तप नहीं, अर्थात् सत्य का आचरण ही यथार्थ रूप में तप है । राग के समान अन्य कोई दु:ख नहीं, अर्थात् राग ही वास्तव में समस्त दु:खों का मूल कारण है । तथा त्याग (विराग) के समान अन्य कोई सुख नहीं, अर्थात् त्याग ही निर्मल-शाश्वत-सुख का प्रयोजक है ।

२. प्रारब्ध अनुकूल है तो भी यथाशक्ति दान देना ही चाहिये, क्योंकि दान देने पर ही श्रीहरि भण्डार भरपूर रखेगा, कमी नहीं आने देगा । प्रारब्ध प्रतिकूल है, तो भी दान देना चाहिये, क्योंकि प्रतिकूल प्रारब्ध, जो कुछ है वह सब ही हर लेगा, अत: इसकी अपेक्षा परोपकारादि-सत्कार्य में दान देकर पुण्य कमाना अच्छा है ।

३. लो में सबका जीवन अस्थिर (क्षणभंगुर) है, धन एवं यौवन भी अस्थिर है । स्त्री पुत्र भी अस्थिर है । धर्म एवं कीर्ति ये दो ही स्थिर है ।

४. भद्र (सुख शान्तिकर-सत्य-प्रिय) वचन ही सदा बोले । भद्र कल्याण रूप परमात्मा का ही सदा चिन्तन करे । भद्रों (सज्जन-महापुरुषों) का ही संग करे, अभद्रों (अशिष्ट-दुर्जन-मनुष्यों) का कभी संग न करे ।

सत्य सनातनधर्म

सद्विचारसदाचारौ, धर्मः सत्यः सनातनः ।
सर्वं तद्व्यतिरेकेण, साधनं स्यादसाधनम् ।।

सद्विचार एवं सदाचार ही सत्य सनातनधर्म है, जिसके बिना, तप, जप, देवार्चनादि अन्य सब साधन, असाधन अर्थात् निष्फल हो जाते हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माऽस्तु स्वार्थान्धता लोके, भ्रष्टाचारोऽपि नश्यतु।
पश्यन्तु स्वमिवान्यांश्च, वैदिके वर्त्मनि स्थिताः ।।

लोक में स्वार्थान्धिता मत हो, भ्रष्टाचार का भी नाश हो, ऐसा कब हो सकता है ? जब कि-सभी लोग वैदिक सनातन धर्म के पवित्र उपदेशों को सुनकर धारण करेंगे और अपने समान अन्यों के सुख-दुःखों को भी समझने लगेंगे । निर्वाह के लिए प्रशस्त कर्म करें, नीति से धन कमायें । जीवन-रक्षा के लिए आहारादि करें । अर्थात् जीवन के लिए खाना-पीना है, खाने-पीने के लिए जीवन नहीं, ऐसा समझें एवं जीवन की रक्षा तत्त्व-जिज्ञासा के लिए है मोक्ष-प्राप्ति के लिए है । अतः उस ईश्वर तत्त्व को जान लेना चाहिए कि जिससे पुनः भव-दुःख न भोगना पड़े ।

हे मनुष्य ! सद्गुणों के द्वारा तुझे अपना ऊर्ध्व-गमन सम्पादन करना चाहिए दुर्गुणों के द्वारा अधोगमन नहीं । बह्मचर्य ही महान् तप है, उसके द्वारा देवों ने मृत्यु का विध्वंस किया । तुम्हारी वाणी ओजस्विनी एवं मधुमती होनी चाहिए एवं कान, कल्याणकारी शब्दों के सुनने वाले ही होने चाहिएँ । सैकड़ों हाथों के उत्साह द्वारा तू धन कमा, और हजारों हाथों की उदारता द्वारा उसका सदुपयोग कर ।

तैत्तिरीयोपनिषद् में वेद पढ़ाने के बाद का आचार्य गुरुदेव का दिया गया शिष्यों को उपदेश अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं आचरणीय है उसका अनुवाद यहाँ दिया जाता है पढ़िए और पालन कीजिए-

सत्यं वद । धर्मं चर-

सत्य बोल । धर्म का आचरण कर । स्वाध्याय से प्रमाद न कर । आचार्य के लिए अभीष्ट धन लाकर दे (उसकी आज्ञा से स्त्री परिग्रह कर और) सन्तान परम्परा का छेदन न कर। सत्य से प्रमाद नहीं करना चाहिये । धर्म से प्रमाद नहीं करना चाहिये । कुशल (आत्म रक्षा में उपयोगी) कर्म से प्रमाद नहीं करना चाहिये । ऐश्वर्य देने वाले माङ्गलिक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर्मों से प्रमाद नहीं करना चाहिये । स्वाध्याय और प्रवचन से प्रमाद नहीं करना चाहिये ॥ १ ॥ देवकार्य और पितृकार्यों से प्रमाद नहीं करना चाहिये । तू मातृदेव (माता ही जिसका देव है ऐसा) हो, पितृदेव हो, आचार्यदिव हो और अतिथिदेव हो । जो अनिन्द्य कर्म है उन्हीं का सेवन करना चाहिये-दूसरों का नहीं । हमारे (हम गुरुजनों के) जो शुभ आचरण हैं तुझे उन्हीं की उपासना करनी चाहिये ॥ २ ॥ दूसरे प्रकार के कर्मों की नहीं । जो कोई (आचार्यादि धर्मों से युक्त होने के कारण हमारी अपेक्षा भी श्रेष्ठ पुरुष हैं उनका आसनादि के द्वारा तुझे आश्वासन (श्रमापहरण) करना चाहिये । श्रद्धापूर्वक देना चाहिये । अश्रद्धापूर्वक नहीं देना चाहिये । अपने ऐश्वर्य के अनुसार देना चाहिये । लज्जापूर्वक देना चाहिये । भय मानते हुए देना चाहिये । संवित्-मैत्री आदि कार्य के निमित्त से देना चाहिये । यदि तुझे कर्म या आचार के विषय में कोई सन्देह उपस्थिह हो ॥ ३ ॥ तो वहाँ जो विचारशील, कर्म में नियुक्त (स्वेच्छा से कर्मपरायण) अरूक्ष (सरल मति) एवं धर्माभिलाषी हों, उस प्रसङ्ग में वे जैसा व्यवहार करें वैसा ही तू भी किया कर । इसी प्रकार जिन पर संशययुक्त दोष आरोपित किए गए हों उनके विषय में, वहाँ जो विचारशील कर्म में नियुक्त अथवा आयुक्त दूसरों से प्रेरित न होकर स्वतः कर्म में परायण सरल हृदय और धर्माभिलाषी हों, वे जैसा व्यवहार करें तू भी वैसा ही कर । यह आदेश है, विधि है, यह उपदेश है, यह वेद का रहस्य है और (ईश्वर की) आज्ञा है । इसी प्रकार तुझे उपासना करनी चाहिये । ऐसा ही आचरण करना चाहिये ।

सज्जनों का स्वभाव

वित्ते त्यागः, क्षमा शक्तौ, दुःखे दैन्यविहीनता ।
निर्दम्भता सदाचारे, स्वभावोऽयं महात्मनाम् ॥

धन में शुभ कार्य के लिए त्याग के भाव, सामर्थ्य होने पर भी क्षमा के भाव, दुःख-संकट के समय अदीनता के भाव एवं अपने शुभाचरणों में निर्दम्भता के भाव, यह सब महान् आत्माओं का सहज-स्वभाव है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जगत् में तीन दुर्लभ वस्तुएँ

दुर्लभं त्रयमेवैतद्, देवानुग्रहहेतुकम् ।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं, महापुरुषसंश्रयः ।।

जगत् में ये तीन वस्तुएँ दुर्लभ हैं, भगवान् के अनुग्रह से ही प्राप्त होती हैं । एक मुनष्यता, अर्थात्-मानव जन्म । या मानवता क्या है ? उसे समझ कर राक्षसता एवं पशुता हटाकर मानवता प्राप्त करना । द्वितीय-मुमुक्षुता अर्थात् मोक्ष प्राप्त करने की तीव्र इच्छा । तृतीय-महापुरुष-महात्मओं का आश्रय अर्थात् सत्संग ।

शयन

रात्रि में सोते समय दिन में किए गए सब कर्मों का स्मरण करे, जो कोई अनुचित पाप कर्म हो गया हो तो उसके प्रायश्चित्त के लिए भगवान् के नाम का स्मरण करे, प्रार्थना करे, क्षमा माँगे और भविष्य में ऐसा पाप-कृत्य नहीं करने की प्रतिज्ञा करे । सायंकालीन सन्ध्या, स्तुति-प्रार्थना भोजनादि से निवृत्त होकर सोने से पहले धार्मिक ग्रन्थों का अभ्यास-पाठ करे । प्रभु का चिन्तन करे । फिर हाथ पैर धोकर स्वच्छ तौलिये से सुखा डाले, कुल्ला आदि करके मुख शुद्धि करके अपने शयन स्थान में शिर की तरफ जल से भरा हुआ ताम्र पात्र रखे और रात्रि सूक्त का पाठ करे ।

रात्रि-सूक्त दो प्रकार के हैं एक वैदिक और दूसरा तान्त्रिक । वैदिक रात्रि-सूक्त ऋग्वेद की ऋचाएँ हैं और तान्त्रिक रात्रि सूक्त दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में आया हुआ है । रात्रि-देवता के स्वरूप और माहात्म्य के प्रतिपादक सूक्त को ही रात्रि-सूक्त कहा है । यह रात्रि-देवी दो प्रकार की है एक जीव-रात्रि तथा दूसरी ईश्वर-रात्रि । जीव-रात्रि वही है, जिसमें जगत् के साधारण जीवों के प्रतिदिन के व्यवहार का लोप होता है तथा दूसरी ईश्वर-रात्रि वह है जिसमें ईश्वर के जगत् रूप व्यवहार का लोप होता हैं इसे ही काल-रात्रि अथवा महाप्रलय-रात्रि कहते हैं । उस समय केवल ब्रह्म और उसके

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आश्रय में उसकी 'महाशक्ति', जिसे अव्यक्त प्रकृति कहते हैं, वही शेष रहती है। देवी पुराण में उसकी अधिष्ठातृ देवी 'भुवनेश्वरी' कही है। रात्रि-सूक्त में उसी महादेवी 'भुवनेश्वरी' की स्तुति की जाती है। यहाँ वैदिक रात्रि-सूक्त तथा तान्त्रिक रात्रि-सूक्त अर्थ के साथ दिया जा रहा है आप अर्थ चिन्तन पूर्वक पाठ करें और मातेश्वरी की गोद में निर्विघ्न शयन करें।

अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्

ओम् रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वाभारद्वाजो ऋषिः रात्रिर्देवता गायत्री छन्दः देवीमाहात्म्यपाठे विनियोग :।

ओम् रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः ।
विश्वा अधि श्रियोऽधित ।। १ ।।

महत्तत्त्वादि रूप व्यापक इन्द्रियों से सब देशों में समस्त वस्तुओं को प्रकाशित करने वाली ये रात्रि रूपा देवी अपने उत्पन्न किए गए जगत् के जीवों के शुभाशुभ कर्मों को विशेष रूप से देखती हैं और उनके अनुरूप फल की व्यवस्था करने के लिए समस्त विभूतियों को धारण करती हैं ।। १ ।।

ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः ।
ज्योतिषा बाधते तमः ।। २ ।।

ये देवी अमर हैं और सम्पूर्ण विश्व को नीचे फैलने वाली लता आदि को तथा ऊपर बढ़ने वाले वृक्षों को भी व्याप्त करके स्थिते हैं; इतना ही नहीं, ये ज्ञानमयी ज्योति से जीवों के अज्ञानान्धकारका नाश कर देती हैं ।। २ ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती ।
अपेदु हासते तमः ॥ ३ ॥

परा चिच्छक्तिरूपा रात्रिदेवी आकर अपनी बहिन ब्रह्मविद्यामयी उषा देवी को प्रकट करती हैं, जिससे अविद्यामय अन्धकार स्वत: नष्ट हो जाता है ॥ ३ ॥

सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि ।
वृक्षे न वसतिं वयः ॥ ४ ॥

वे रात्रि देवी इस समय मुझ कर प्रसन्न हों, जिनके आने पर हम लोग अपने घरों में सुख से सोते हैं - ठीक वैसे ही, जैसे रात्रि के समय पक्षी वृक्षों पर बनाए हुए अपने घोंसलों में सुख पूर्वक शयन करते हैं ॥ ४ ॥

नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः ।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥ ५ ॥

उस करुणामयी रात्रि देवी के अङ्क में सम्पूर्ण ग्रामवासी मनुष्य, पैरों से चलने वाले गाय, घोड़े आदि पशु, पंखों से उड़ने वाले पक्षी एवं पतंग आदि, किसी प्रयोजन से यात्रा करने वाले पथिक और बाज आदि भी सुख पूर्वक सोते हैं ॥ ५ ॥

यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये ।
अथा नः सुतरा भव ॥ ६ ॥

हे रात्रिमयी चिच्छकित ! तुम कृपा करके वासनामयी वृकी तथा पापमय वृक को हमसे अलग करो । काम आदि तस्कर समुदाय को भी दूर हटाओ ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदनन्तर हमारे लिए सुख पूर्वक तरने योग्य हो जाओ-मोक्षदायिनी एवं कल्याणकारिणी बन जाओ ॥ ६॥

उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्ति ।
उष ऋणेव यातय ॥ ७ ॥

हे उषा ! हे रात्रि की अधिष्ठात्री देवी सब ओर फैला हुआ यह अज्ञानमय काला अन्धकार मेरे निकट आ पहुँचा है । तुम इसे ऋण की भ्राँति दूर करो-जैसे धन देकर अपने भक्तों के ऋण दूर करती हो, -उसी प्रकार ज्ञान देकर इस अज्ञान को भी हटा दो ॥ ७ ॥

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिव : ।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥ ८ ॥

हे रात्रि देवी ! तुम दूध देने वाली गौ के समानं हो । मैं तुम्हारे समीप आकर स्तुति आदि से तुम्हें अपने अनुकूल करता हूँ । परम व्योमस्वरूप परमात्मा की पुत्री, तुम्हारी कृपा से मैं काम आदि शत्रुओं को जीत चुका हूँ, तुम स्तोत्र की भाँति मेरे इस हविष्य को भी ग्रहण करो ॥ ८ ॥

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥

जो इस विश्व की अधीश्वरी, जगत् को धारण करने वाली तथा तेजः स्वरूप भगवान् विष्णु की अनुपम शक्ति हैं, उन्हीं भगवती निद्रादेवी की भगवान् ब्रह्मा स्तुति करने लगे-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वाधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामाहा च भवती महादेवी महासुरी ॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तुयसे तदा ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥
विष्णुःशरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥

ब्रह्माजी ने कहा-देवि ! तुम्हीं स्वाहा, स्वधा और तुम्हीं वषट्कार हो । स्वर भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं । तुम्हीं जीवन दायिनी सुधा हो । नित्य अक्षर प्रणव में अकार-उकार, मकार-इन तीन मात्राओं के रूप में तुम्हीं स्थित हो तथा इन तीन मात्राओं के अतिरक्ति जो बिन्दुरूपा नित्य अर्धमात्रा है, जिसका विशेष रूप से उच्चारण नहीं किया जा सकता, वह भी तुम्हीं हो । देवि ! तुम्हीं संध्या, सावित्री तथा परम जननी हो । देवि ! तुम्हीं इस विश्व-ब्रह्माण्ड को धारण करती हो । तुम से ही इस जगत् की सृष्टि होती है । तुम्हीं से इसका पालन होता है और सदा तुम्हीं कल्प के अन्त में सबको अपना ग्रास बना लेती हो । जगन्मयी देवि ! इस जगत् की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो, पालन-काल में स्थिति रूपा हो तथा कल्पान्त के समय संहार रूप धारण करने वाली हो । तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहरूपा, महादेवी और महासुरी हो । तुम्हीं तीनों गुणों को उत्पन्न करने वाली सब की प्रकृति हो । भयंकर कालरात्रि, महारात्रि और भी तुम्हीं हो । तुम्हीं श्री, तुम्हीं ईश्वरी, तुम्हीं ह्री और तुम्हीं बोधस्वरूपा बुद्धि हो । लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शन्ति और क्षमा भी तुम्हीं हो । तुम खड्गधारिणी, शूलधारिणी, घोररूपा तथा गदा, चक्र, और धनुष धारण करने वाली हो । बाण, भुशुण्डी और परिघ-ये भी तुम्हारे अस्त्र है । तुम सौम्यतर हो । इतना ही नहीं जिसने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं, उन सबकी अपेक्षा तुम अत्यधिक सुन्दरी हो । पर और अपर सबसे परे रहने वाली परमेश्वरी तुम्हीं हो । सर्वस्वरूपे देवि! कहीं भी सत्-असत् रूप जो कुछ वस्तुएँ हैं और उन सबकी जो शक्ति है वह तुम्हीं हो । ऐसी अवस्था में तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है । जो इस जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं, उन भगवान् को भी जब तुमने निद्रा के अधीन कर दिया है, तब तुम्हारी स्तुति करने में यहाँ कौन समर्थ हो सकता है । मुझको, भगवान् शंकर को तथा भगवान् विष्णु को भी तुमने ही शरीर धारण कराया है, अतः तुम्हारी स्तुति करने की शक्ति किस में है ? देवि ! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसित हो । ये दोनों दुर्धर्ष असुर मधु और कैटभ हैं, इनको मोह में डाल दो और जगदीश्वर भगवान् विष्णु को शीघ्र ही जगा दो । साथ ही इनके भीतर इन दोनों महान् असुरों को मार डालने की बुद्धि उत्पन्न कर दो ।

रात्रि में दुःस्वप्न नाश के लिए इष्टदेव का चिन्तन व प्रार्थना करे । चोर की निवृत्ति के लिए नन्दीश्वर कफल्लक का चिन्तन, सर्पादि की निवृत्ति के लिए आस्तीक का व शान्ति के लिए विष्णु का चिन्तन करे । पूर्व दिशा की ओर शिर करके सोना श्रेष्ठ माना गया है इससे विद्या तथा दक्षिण में शिर करके सोने से आयु की वृद्धि, पश्चिम में चिन्ता, हानि और उत्तर में मृत्यु होती है ।

प्रातः काल में उठकर पूर्ववत् नित्य कर्म में लग जाय ।

कर्म

नित्य, नैमित्तक, काम्य और **त्याज्य** ऐसे चार प्रकार के कर्म हैं । स्नान, संन्ध्या आदि **नित्य कर्म** है जिनके न करने से पाप लगता है, करने से पुण्य होता है अतः नित्य कर्म का कभी लोप न करे ।

किसी निमित्त के प्राप्त होने पर जो कर्म किया जाय वह **नैमित्तिक कर्म** कहा जाता है जैसे श्राद्ध आदि । पर्व-त्योंहारों पर किए जाने वाले स्नान, दान, देव दर्शन, यज्ञ-महोत्सव आदि भी नैमित्तिक कर्म हैं । दीपावली, गीता जयन्ती, शिवरात्रि, रामनवमी,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृष्ण जन्माष्टमी, गुरु पूर्णिमा, नवरात्र, दशहरा, होली वसन्तोत्सव, हनुमान् जयन्ती, श्री शंकराचार्य जयन्ती, देव मूर्तियों की स्थापना-पाटोत्सव (वार्षिक) उत्सव आदि के समय पर जो अनेकविध धार्मिक व सामाजिक या राष्ट्रीय उत्सव मनाए जाते हैं वे सब भी नैमित्तिक हैं । निमित्त के प्राप्त होने पर नैमित्तिक कर्म अवश्य करने चाहियें ।

किसी कामना (लौकिक या पारलौकिक फल की इच्छा) को लेकर जो कर्म किया जाय वह **काम्य कर्म** हैं जैसे वर्षा की कामना से किया जाने वाला, 'कारिरी यज्ञ' । पुत्र की कामना से किया जाने वाला 'पुत्रेष्टि यज्ञ' स्वर्ग की कामना से किया जाने वाला, 'अग्निहोत्र' आदि ।

यद्यपि वेदान्त शास्त्र में सकाम कर्म करने का निषेध है तथापि कर्म-काण्ड में यज्ञ, दान, जप, तप, आदि कर्म सकाम भाव से भी करने का विधान है । अतः जितने भी सकाम कर्म हैं उनमें संकल्प की प्रधानता है । अतः सकाम कर्म संकल्पपूर्वक ब़ड़े संयम एवं साधानी के साथ करने पर इच्छित फल अवश्य मिलता है ।

त्याज्य कर्म

हिंसा, परद्रोह, चोरी, मांसभक्षण, मद्यपान, परस्त्रीगमन आदि कर्म निन्दित हैं इनका त्याग करना चाहिए । शास्त्र में कहा है कि-

'अकृत्वा विहितं कर्म निन्दितं च समाचरन्'
नरः किल्बिषमश्नुते ।

शास्त्र में बताये हुए कर्म को न करके, शास्त्र द्वारा निन्दित कर्म को करता हुआ मनुष्य पाप का ही भागी बनता है ।

अतः कल्याण की कामना करने वाले मानवों को सदैव शास्त्र विहित कर्म ही करना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिशिष्ट

पार्थिवलिङ्ग के निर्माण की रीति तथा वेद-मन्त्रों द्वारा उसके पूजन की संक्षिप्त विधि का वर्णन-

श्रद्धा भक्ति रखने वाले साधकों को वेदोक्त मार्ग से ही पार्थिव लिङ्ग की पूजा करनी चाहिए। यह पूजा भोग-मोक्ष दोनों ही देने वाली है। कर्तव्य बोध में बताई विधि के अनुसार विधि पूर्वक स्नान, सन्ध्योपासना करके पहले ब्रह्मयज्ञ करे। फिर देवताओं ऋषियों, सनकादि मनुष्यों और पितरों का तर्पण करे। नित्य कर्म को पूर्ण करके शिवस्मरणपूर्वक भस्म तथा रुद्राक्ष धारण करे फिर उत्तम भक्ति भावना के साथ पार्थिव लिङ्ग की वेदोक्त विधि से पूजा करे।

शिव लिङ्ग बनाने के लिए शुद्ध मिट्टी लाकर उस शुभ मिट्टी को शुद्धतापूर्वक जल से सान कर पिण्डी बना ले और सुन्दर शिव-पार्थिव लिङ्ग बनावे। **'ओम् नमः शिवाय'** इस मंत्र से पूजन-सामग्री का प्रोक्षण करे यानी जल छिड़के। फिर शिवपुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय १९ में वर्णित विस्तृत वैदिक विधि से पूजन करे। संक्षिप्त पूजा की विधि यहाँ बताई जाती है-

ओम् सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

इस मंत्र से पार्थिवलिङ्ग बनाने के लिए मिट्टी ले आये। फिर नीचे का मंत्र बोलकर उसमें जल डाले-

ओम् वामदेवाय नमो ज्योष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

जब मिट्टी सनकर तैयार हो जाय तब निम्न मंत्र से लिङ्ग का निर्माण करे-

ओम् अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर निम्न मंत्र से उस में भगवान् शिव का आवाहन करे-

ओम् तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

तदनन्तर निम्न मंत्र से भगवान् शिव को वेदी पर स्थापित करे -

ओम् ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

इसके बाद **'ओम् नमः शिवाय'** इस मंत्र से या गुरु के दिए हुए मंत्र से षोडशोपचार से पूजन करे । भक्तिभाव से ही शिव प्रसन्न होते हैं अतः भावपूर्वक शिव को प्रणाम करके स्तुति करे ।

सर्व साधारण के लिए शिव के नामों से ही पार्थिवलिङ्ग की पूजा करने का विधान है वह सर्वोपयोगी होने से यहाँ दिया जा रहा है-

हरो महेश्वरः शम्भुः शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव इति क्रमात् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ये क्रमशः शिव के आठ नाम कहे गए हैं । इनके द्वारा क्रमशः निम्न प्रकार पूजन करे-

ओम् हराय नमः - इस मंत्र से पार्थिवलिङ्ग बनाने के लिए मिट्टी लाए ।

ओम् महेश्वराय नमः - इससे लिङ्ग का निर्माण करे ।

ओम् शम्भवे नमः - बोलकर पार्थिव लिंग की प्रतिष्ठा करे ।

ओम् शूलपाणये नमः - कह कर उस पार्थिव लिंग में भगवान् शिव का आवाहन करे।

ओम् पिनाकधृषे नमः - मंत्र बोलकर शिव लिंग को स्नान करावे ।

ओम् नमः शिवाय - इस मंत्र से पूजन करे ।

ओम् पशुपतये नमः - कहकर क्षमा-प्रार्थना करे । तथा अन्त में-

ओम् महादेवाय नमः-कहकर पार्थिव लिङ्ग का विसर्जन कर दे ।

इस प्रकार बड़े आनन्द के साथ पूजन का कार्य सम्पन्न करे । पार्थिवलिङ्ग का पूजन करने के बाद पंचाक्षर मंत्र का जप करे-

शिव-पंचाक्षर-स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥१॥

जिनके कण्ठ में सर्पों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अङ्गराग (अनुलेपन) है, उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर 'न' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है ।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥

गङ्गा जल और चन्दन से जिनकी पूजा हुई है, मन्दार (आक) पुष्प तथा अन्य बहुत

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुष्पों से जो विशेष रूप से पूजित हैं, उन नन्दी के अधिपति प्रमथ गणों के स्वामी महेश्वर 'म' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है ।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३॥

जो कल्याण स्वरूप हैं, पार्वती जी के मुख कमल को विकसित करने के लिए जो सूर्य स्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं जिनकी ध्वजा में बैल का चिह्न है, उन शोभाशाली नीलकण्ठ 'शि' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है ।

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४॥

वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की हैं, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन 'व' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है ।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

जिन्होंने यक्ष रुप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक (धनुष) है, जो दिव्य सनातन पुरुष है, उन 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है ।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवने सह मोदते ॥ ६ ॥

जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षर स्तोत्र का पाठ करता है वह शिवलोक को प्राप्त करता है और शिव के साथ आनन्दित होता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नर्मदे हर !

भगवत्पाद श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यस्वामिविरचितं-

श्री नर्मदाष्टकम्

सबिन्दुसिन्धुसुस्खलत्तरङ्गभङ्गरञ्जितं,
द्विषत्सु पापजातजातकारिवारिसंयुतम् ।
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारि वर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ १ ॥

अपने जल बिन्दुओं से सिन्धु की उछलती हुई तरङ्गों में मनोहरता लाने वाली तथा शुत्रओं के भी पाप समुदाय के विरोधी, काल रूप यमदूतों के भय को हरने वाली, अतएव सब भाँति रक्षा करने वाली हे देवि नर्मदे ! तुम्हारे जल संयुक्त उन चरण कमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसम्प्रदायकं,
कलौ मलौघभारहारिसर्वतीर्थनायकम् ।
सुमच्छकच्छनक्रचक्रचक्रवाकशर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ २ ॥

तुम्हारे जल में लीन हुए उन दीन हीन मीनों को अन्त में स्वर्ग देने वाली समस्त तीर्थों में अग्रगण्य, अत: मच्छ, कच्छ आदि जलचरों तथा चकई चकवा आदि नभचर प्राणियों को सदैव सुख देने वाली हे देवि नर्मदे ! तुम्हारे चरणारविन्दों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महागभीरनीरपूरपापधूतभूतलं,
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम्।
जगल्लये महाभये मृकण्डुसूनुहर्म्यदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ३ ॥

महान् भयंकर संसार के प्रलय काल में महर्षि माकण्डेय को आश्रय प्रदान करने वाली हे देवी नमदि ! अत्यन्त गम्भीर नीर के प्रभाव से पृथ्वीतल के पापों को धोने वाले तथा समस्त पातकरूप शत्रुओं को ललकारते हुए विपत्तिरूप पर्वतों को विदीर्ण करने वाले तुम्हारे पादपद्मों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

गतं तदैव में भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा,
मृकण्डुसूनुशौनकासुरारिसेवितं सदा।
पूनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ४ ॥

सदैव मार्कण्डेय शौनकादि मुनि तथा सुरगण सेवित जब आपके दिव्य जल का दर्शन किया, तभी संसार में बारम्बार जन्म मरणादि से उत्पन्न होने वाले मेरे सभी भय भाग गए। अतएव भवसिन्धु के दुःखों से बचाने वाली हे देवि नमदि ! तुम्हारे पादपद्मों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

अलक्षलक्षकिन्नरामरासुरादिपूजितं,
सुलक्षनीरतीरधीरपक्षिलक्षकूजितम्।
वसिष्ठशिष्टपिप्पलादिकर्दमादिशर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ५ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महर्षि वसिष्ठ श्रेष्ठ पिप्पलादि कर्दम आदि प्रजापतियों को सुख देने वाली हे देवि नर्मदि ! अदृश्य लाखों किन्नरों सुरों और नरों से पूजित हुए तथा प्रत्यक्ष तुम्हारे तीर पर निवास करने वाले लाखों धीर पक्षियों की सुरीली ध्वनि से गुञ्जायमान आपके चरण कमलों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै-
र्धृतं स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदैः ।
रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ६ ॥

सूर्य, चन्द्र, इन्द्र आदि देवताओं को तथा रन्तिदेव नृपति को कर्म का निर्देश कर सुख प्रदान करने वाली हे देवि नर्मदे ! सनत्कुमार नाचिकेत कश्यप अत्रि तथा नारदादि ऋषि मुनिगणरूप भ्रमरों द्वारा निज मानसतल में धारण किए गए आपके चरणारविन्दों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

अलक्षलक्षलक्षपापलक्षसारसायुधं-
ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् ।
विरञ्चिविष्णुशंकरस्वकीयधामवर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ७ ॥

ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश को निज-निज पद या अपनी निज शक्ति देने वाली हे देवि नर्मदि ! अगणित दृष्ट-अदृष्ट लाखों पापों का लक्षभेद करने में अमोध शस्त्र के समान और तुम्हारे तट पर बसने वाली छोटी बड़ी सभी जीव परम्परा को भोग और मोक्ष देने वाले तुम्हारे पादपंकजों को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहोऽमृतं स्वनं श्रुतं महेशकेशजातटे,
किरातसूतवाडवेषु पण्डिते शठे नटे ।
दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मदे,
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ८ ॥

हम लोगों ने शिवजी की जटाओं से प्रगट हुई रेवाजी के किनारे भील, भाट, ब्राह्मण, विद्वान्, और धूर्त नटों के बीच घोर पापताप हरने वाला अहह ! अमृतमय यशोगान श्रवण किया, अतः प्राणिमात्र को सुख देने वाली हे देवि नर्मदे ! तुम्हारे चरण-कमलों को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥

इदन्तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा,
पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा ।
सुलभ्यदेहदुर्लभं महेशधामगौरवं,
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम् ॥ ९ ॥

निस्संदेह जो मनुष्य इस नर्मदाष्टक का तीनों समय सदैव पाठ करते हैं वे कभी भी दुर्गति को प्राप्त नहीं होते, अर्थात् पुनर्जन्म से रहित हुए रौरव नरक नहीं देखते किन्तु अन्य प्राणियों को दुर्लभ देह भी उन्हें सुलभ होकर शिव लोक का गौरव प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अब यहाँ 'रुद्राष्टाध्यायी', 'शिव महिम्नः स्तोत्रम्', 'विष्णु सहस्रनाम', 'शिव सहस्रनाम' स्तोत्र आदि का पाठ करे 'शतरुद्र' तथा 'शिवशतनाम स्तोत्र' का पाठ करके भगवान् को साष्टाङ्ग प्रणाम करे । फिर कीर्तन-भजन गीत-वाद्य आदि करके भगवान् को संतुष्ट करे । मन को भगवान् के चरणों में विलीन करके आत्मानन्द प्राप्त करे । अखण्ड प्रभु का स्मरण करता रहे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

हरिः ॐ

श्री पुष्पदन्त उवाच

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्= कैथ और जामुन के सुन्दर फलों को खाने वाले, गजानम्=हाथी के मुख वाले, भूतगणाधिसेवितम्=भूतगणों से पूजित, उमासुतम्=पार्वती के पुत्र (गणेशजी) को नमामि=मैं नमस्कार करता हूँ । शोकविनाशकारकम्=संसार रूपी शोक को नष्ट करने वाले विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्=गणेश जी के चरणकमलों को नमामि= मैं नमस्कार करता हूँ ।

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनमपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर ! निरपवादः परिकर : ।। १ ।।

(सान्वयार्थः)

हर ! = हे पापों को हरने वाले ! **ते** = आपकी, **महिम्नः**=महिमा की, **परम**= अन्तिम **पारम्**=सीमा को, **अविदुषः**=नहीं जानने वाले की **स्तुतिः**= स्तवन यदि=अगर **तादृशी**=जैसा होना चाहिए वैसा नहीं है, **तद्** = तो **ब्रह्मादीनाम्** = ब्रह्मा, विष्णु, इंद्रादिक की, **अपि**=भी **गिरः**= स्तवन **त्वयि**= आपके **अवसन्नाः**=अयोग्य ही है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(क्योंकि वे भी आप को पूर्ण रूप से नहीं जानते) **अथ**=यदि (ऐसा कहा कि) **सर्वः**=सभी लोग, **स्वमतिपरिणामावधि**= अपनी बुद्धि की पहुँच तक, **गृणन्** = स्तवन करने पर, **अवाच्यः**= दोष देने योग्य नहीं है, **मम अपि**= (तब तो) मेरा भी, **स्तोत्रे**-स्तवन करने का, **एषः**= यह, **परिकरः**= प्रयत्न, **निरपवादः**=दोषरहित ही है ।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
सः कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥

(सान्वयार्थः)

तव= आपकी, **महिमा**=बड़ाई, **वाङ्मनसयोः**= वाणी और मन की, **पन्थानम्**=पहुँच से, **अतीतः**= दूर है, **च**=ही (क्योंकि), **यं**=जिसका (वर्णन), **श्रुतिः**= वेद, **अपि**=भी, चकितम्=डरकर **अतद्व्यावृत्त्या**=निषेध मुख से **अभिधत्ते**=करता है, **सः**=वह **कस्य**=किसकी **स्तोतव्यः**=स्तुति का विषय हो सकता है (क्योंकि) **कतिविधगुणः**= उसके सगुण रूप में कौन से गुण नहीं हैं ? (अर्थात् अनन्त गुण हैं) **कस्य**= (उसका निर्गुण रूप) किसी का (किसकी वाणी या मन का) **विषयः**=विषय हो सकता है ? (फिर भी) **अर्वाचीने**=भक्तों पर कृपा करके धारण किए हुए **पदे**=पंचमुखादि रूपों में **तु**=तो **कस्य**=किस भक्त का **मनः**=मन न **पतति**=नहीं लगता है ? **वचः** = (और) वाणी **न**=नहीं (पतति)-(प्रवेश करती है ?)।

(वेद भी गलती न हो जाए इस भय से सगुण रूप का वर्णन तो ''**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**''-सभी कुछ ब्रह्म है - इस प्रकार और निर्गुण रूप का वर्णन ''नेति नेति''-वह यह सब नहीं हैं-इस प्रकार करता है ।)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् ! किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

(सान्वयार्थः)

ब्रह्मन ! = हे व्यापक स्वरूप **मधुस्फीता**=अत्यन्त मीठे शब्दों में सनी हुई **परमम्**= सर्वोत्तम (और) अमृतम्-मोक्ष द्वारा अरमता देनेवाली **वाचः** = वेदवाणी की **निर्मितवतः** रचना करने वाले **तव**=आप को **किं**=क्या **सुरगुरोः**=ब्रह्मा जी की **वाक्**=वाणी (स्तुति) **अपि**=भी **विस्मयपदम्**=ब्रह्मा जी की **वाक्**=वाणी (स्तुति) **अपि**=भी **विस्मयपदम्**=आश्चर्य करा सकती है ? (अर्थात् नहीं करा सकती) **तु**=तथापि **पुरमथन**=हे त्रिपुरासुर को मारने वाले ! **भवतः**= आपके **गुणकथनपुण्येन**=गुणों का वर्णन करने के पुण्य से **एतां**=इस (अपनी) **वाणीं**=वाणी को **पुनामि**=पवित्र करता हूँ **इति**=इसलिए **अस्मिन्**=इस स्तुतिरूप **अर्थे**=कार्य में **मम**=मेरी **बुद्धिः**बुद्धि **व्यवसिता**=लगी है ।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद ! रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥

(सान्वायार्थः)

वरद ! = हे समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले ! **जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्** = आकाशादि सभी जगत् की सृष्टि, स्थिति और संहार करने वाला, **त्रयीवस्तु**-वेदों द्वारा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिपादित, **गुणभिन्नासु**=सत्त्व, रज और तमोगुण के भेद से **तिसृषु**=तीन (ब्रह्मा, विष्णु, और रुद्र) **तनुषु**=मूर्तियों में **व्यस्तम्**=बँटा हुआ (प्रकट किया हुआ) **यत्**=जो **तव**=आपका **ऐश्वर्यम्**=ऐश्वर्य (है) **तत्**=उसका **विहन्तुम्**=खण्डन करने के लिए **इह**=इस संसार में **जडधियः**=मूढ बुद्धिवाले (जड़ पदार्थों पर ही सोचने वाले) **एके**-कुछ लोग **अरमणीम्**=नुकसान पहुँचाने वाले **अस्मिन्**= (परन्तु) इस ब्रह्माण्ड भर में **अभव्यानाम्**=जिनका कल्याण नहीं है, **रमणीयाम्**=उनको प्रिय लगने वाले **व्याक्रोशीं**=आक्षेपपूर्ण मिथ्या दोष, **विदधते**=लगाते हैं ।

(१-भगवान पर दोष लगाने वालें का कहीं भी उद्धार नहीं हो सकता ।)

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

(सान्वयार्थः)

त्वयि=आपके **अतर्क्यैश्वर्ये**=किसी भी तर्क से जाना नहीं जा सके ऐसे ऐश्वर्य के बारे में **सः**=वह (ईश्वर) **धाता**=जगत् का निर्माण करने वाला **किमाधारः**=किस पर बैठकर **किंकायः** किस शरीर से, **किमीहः**=किस प्रयत्न द्वारा, **किमुपायः**=कौन से औजारों से, **किमुंपादानः**= किस चीज से **त्रिभुवनम्**=तीन लोकों को **सृजति**=बनाता है **च**=और **इति**=इसी प्रकार के दूसरे **कुतर्कः**(जो ठीक दीखें लेकिन विचार करने पर गलत निकलें ऐसे) कुतर्क जगत-संसार को **मोहाय**=भ्रम में डालने के लिए **हतधियः**- जिनकी बुद्धि मारी गई है **कांश्चित्**=ऐसे कुछ लोगों को **मुखरयति**-बकवादी बनाते हैं, **खलु**=लेकिन **अयम्**=यह (कुतर्क) **अनवसरदुःस्थः**=अवकाशरहित और असिद्ध हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१-साधारण कर्ताओं के आधार प र ईश्वरविषयक अनुमान करते हैं परन्तु वह ईश्वर अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है, अतः वे सब अनुमान सिद्ध नहीं होते।)

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर ! संशेरत इमे ॥ ६ ॥

(सान्वयार्थः)

अमरवर! = हे श्रेष्ठ देव महादेव **अवयववन्तः**=जो सावयव होने पर अपि=भी **लोकाः** पृथ्वी-स्वर्गादि लोक **किं=क्या अजन्मानः**-उत्पत्तिरहित हो सकते हैं? (अर्थात् नहीं) **जगताम्** = (जब वे लोक उत्पत्ति वाले हैं तो) पृथिव्यादि लोकों की **भवविधिः** = उत्पत्ति **अधिष्ठातारम्** = कर्ता के **अनादृत्य**=**बिना किं**=क्या **भवति**=हो सकती है ? वा-यदि (इस प्रकार संसार का कर्ता अवश्य होने पर **अनीशः**=सर्वसमर्थ ईश्वर से भिन्न (कोई) **भुवनजनने**= संसार को उत्पन्न **कुर्यात्**=करे **कः**=(तो वह संसार को बनाने के लिंए) कौन सी, **परिकरः**[२]=सामग्री (काम में लाएगा)? **यतः** =इस प्रकार प्रमाणों से ईश्वर के सिद्ध होने के कारण **इमे**=वे **मन्दाः**= मूर्ख लोग ही हैं जो **त्वां**=आपके **प्रति**=बारे में **संशेरते**=सन्देह करते हैं ।

(१-संसार में जो जो सावयव हो सकते हैं, वे सब उत्पत्ति होने वाले पाए जाते है । घड़े या कपड़े की ही भाँति स्वर्गादि सभी लोक इसी प्रकार सावयव हैं अतः उत्पत्ति वाले ही हैं ।

२-ईश्वर को छोड़कर सभी लोग किसी सामग्री से ही वस्तु को बनाते हैं, जैसे कुम्हार मिट्टी रूप सामग्री से घड़ा बनाता है । अतः इस संसार का बनाने वाला भी यदि ईश्वर से भिन्न मानो तो किस सामग्री से उसे बनाया ? वह सामग्री कहाँ थी ? इत्यादि पूर्वश्लोक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में कही हुई शंकाएँ उठ खड़ी होंगी । इसलिए ईश्वर को ही संसार का बनाने वाला मानना होगा ।)

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

(सान्वयार्थः)

त्रयी=वेदिक सनातक धर्म, **सांख्यम्**=कपिलमुनि प्रणीत सांख्यमार्ग, **योगः**=पातञ्जल योगमार्ग, **पशुपतिमतम्**=शैवमार्ग, **वैष्णवम्** = वैष्णवमार्ग **इति**=इतने **प्रभिन्ने**=अलग-अलग **प्रस्थाने**=रास्तों में से **इदम्**=यह मार्ग **परम्**=सर्वोत्तम है **च**=या **अदः** वह मार्ग **पथ्यम्**=हितकारी है **इति**=ऐसा **रुचीनाम्**=रुचियों के **वैचित्र्यात्**= भिन्न होने से (है) । **ऋजु-कुटिल-नाना-पथ-जुषाम्**=इन सीधे या घुमावदार रास्ते से चलने वाले **नृणाम्**=मनुष्यों को **पयसाम्**=नदियों के लिए **अर्णवः**=समुद्र की **इव**=तरह **त्वम्**=आप ही **एकः**=एकमात्र **गम्यः**=प्राप्त करने के योग्य **असि** = हैं ।

(इनमें सनातन वैदिक धर्म व दूसरे मार्गों को क्रमशः सीधा और कुटिल मार्ग कहा गया है ।)

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद ! तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सान्वयार्थः)

वरद ! = हे श्रेष्ठ मोक्ष को देने वाले ! **तव** = आप के **तन्त्रोपकरणम्**=घर की सम्पत्ति **महोक्षः**=एक बूढ़ा बैल, **खट्वाङ्गम्**=खाट का एक पाया, **परशु**=एक फरसा, **अजिनम्**=एक गजचर्म, भस्म-राख, **फणिनः**-कुछ काले जहरीले साँप **च**-और **कपालम्**=एक नरमुण्ड **इति**=बस **इयत्**=ये (सात ही हैं ।) **तु**-फिर भी **सुराः**=अन्य सारे देवता **भवद्भ्रू-प्रणि=हिताम्**=आप के कृपाकटाक्ष से दी हुई **ताम्**=उन **ताम्**=प्रसिद्ध **ऋद्धिम्**=सम्पत्तियों ('सुदर्शनचक्र', 'ऐरावत', 'कल्पवृक्षादि') को **विदधति**=धारण करते हैं (अर्थात् भोगते हैं), **हि**-क्यों कि **विषयमृगतृष्णा**=विषयसुखों की मृगतृष्णा का जल **स्वात्मारामम्**= चिदानन्दघन स्वरूप में रहने वाले आप को **न भ्रमयति**=भ्रम में नहीं डाल सकता ।

(भगवान शंकर की यही विशेषता है कि बाहर से सम्पत्तिहीन होते हुए भी सर्व सम्पत्तियों के दाता है, अतः भोगमोक्षार्थी दोनों ही को उनकी उपासना कर्तव्य है ।)

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥

(सान्वयार्थः)

पुरमथन ! = हे स्थूल-सूक्ष्म-कारण देह को नष्ट करके आत्मस्वरूप में स्थित करने वाले ! **कश्चित्**=कोई (सांख्य, सत्कार्यवादी) **सर्वम्**=स्थूल-सूक्ष्म सारे संसार को **ध्रुवम्**=उत्पत्ति-नाश से रहित (गदति-कहता है ।) **तु**=तो **अपरः**-दूसरा (बौद्ध नास्तिकादि असत्कार्यवादी) **इदम्**=इन **सकलम्**=जड चेतन समेत सारे पदार्थों को, **अध्रुवम्**=नाश वाला (क्षणिक), (गदति-कहता है ।) **अपि**-और **परः**=इन दोनों से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अलग मतवाला (नैयायिक आरम्भवादी) **एतस्मिन्**=इस **समस्ते**=सारे **जगति**=विश्व में **ध्रौव्याध्रौव्ये**=विनाशी और अविनाशी **व्यस्तविषये**=पदार्थ बँटे हुए हैं **गदति**=ऐसा कहता है **ननु**=तो **मुखरता**=उन वादियों की वाचालता **धृष्टा**=निर्लज्ज है । **तैः**=उन वादियों की उक्तियों से **विस्मितः**= अचंभित **इव**=सा (होकर भी) **त्वाम्**=आप की **स्तुवन्**=स्तुति करने में **खलु**=अवश्य ही (विवर्तवादी वैदिक मत का अनुसरण करने के कारण) **न जिह्रेमि**=मैं लज्जित नहीं होता ।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश ! यत् ।
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

(सान्वयार्थः)

गिरिश ! = हे हिमालय पर्वत पर समाधिमग्न ! **तव**=आपकी **अनुवृत्तिः**=(कायिक, वाचिक, मानसिक) सेवा **किम्**=कौन सा **न फलति**=फल नहीं देती ? (मोक्ष पर्यन्त सारे फल देती ही है ।) **यत्**=क्योंकि **यत्**=जब **अनलस्कन्धवपुषः**= तेजोमय लिङ्गाकार शरीर वाले **तव**= आपके **ऐश्वर्यम्** = मूर्तरूप की **परिच्छेत्तुम्**=सीमा का पता लगाने के लिए **यत्नात्**=बड़े ही प्रयत्न के साथ **उपरि**=ऊपर की तरफ **विरिञ्चिः**= भगवान् ब्रह्मा **अधः**=(और) नीचे की तरफ **हरिः**=भगवान् विष्णु **यातौ**=गये, **अनलम्**= (लेकिन दिव्य हजारों वर्षो तक प्रयास करने पर भी) पार नहीं पाया, **तव**=तब (अन्त में थक कर) **भक्ति-श्रद्धा-भर-गुरु-गृणद्भ्याम्**=शरीर से सेवा रूप भक्ति और मन से सेवा रूप श्रद्धा से पूर्णतया युक्त होकर वाणी से स्तुति करने पर **ताभ्याम्**=उन दोनों के सामने **स्वयम्**=आप स्वतः **तस्थे**=प्रकट हो गए ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१-एक बार भगवान् ब्रह्मा और भगवान् विष्णु में अपनी-अपनी महत्ता के बारे में विवाद हुआ। निर्णय करने के लिए भगवान् शंकर उनके सामने स्थूल तेजोमय लिङ्गाकार में प्रकट हो गए।)

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोयोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर! विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११॥

(सान्वयार्थः)

त्रिपुरहर ! = हे जीव, जगत् और ईश्वर का भेद मिटाने वाले ! **शिरः=पद्म-श्रेणी-रचित-चरणम्भोरुहबलेः**= अपने ही मस्तकरूपी कमलों की पंक्ति को आपके चरणकमलों में भेंट रूप से चढ़ा दिया **स्थिरायाः**-ऐसी अविचल **त्वद्भक्तेः**=आपकी भक्ति का (ही) **इदम्**=यह **विस्फूर्जितम्**=प्रताप (है) **यत्**=कि **दशास्यः**=दशमुख रावण ने **त्रिभुवनम्**=त्रिलोकों को **अयत्नात्**=बिना प्रयत्न के ही **अवैरव्यतिकरम्**=वैररहित (निष्कण्टक) **आपाद्य**=बनाकर (भी) **रणकण्डू परवशान्**=युद्ध के लिए खुजलाते हुए **बाहून्**=(अपने बीस) हाथों को **अभृत**-धारण किया ।

(१-रावण ने अपने नौ सिर महादेवजी को कमल की जगह पर चढ़ाए थे। २-रावण की ललकार से ही सब लोगों ने हार मान ली अतः उसकी युद्ध की इच्छा पूर्ण नहीं हुई। अतः उसके हाथ युद्ध के लिए खुजलाते ही रहते थे।)

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठ शिरसि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२॥

(सान्वयार्थः)

कैलासे= कैलास में **त्वदधिवसतौ**=आपके रहने के स्थान पर **अपि**=भी **त्वत्सेवा-समधिगतसारम्**=आपकी सेवा से ही पाए हुए बल से बलवान् **भुजवनम्**=अपने (बीस) हाथों रूपी वन को **बलात्**=अत्यन्त बहादुरी के साथ **विक्रमयतः**=आजमाने वाले **अमुष्य**=उस (रावण) को **त्वयि**=आपके **अलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि**=अंगूठे के ऊपरी भाग अनायास ही धीरे से हिल जाने के कारण **पाताले**=पाताल में **अपि**=भी **प्रतिष्ठा**=टिकाव (स्थान) **अलभ्या**=नहीं मिला **आसीत्**=था । **खलः**-कृतघ्न पुरुष **उपचितः**=समृद्ध होने पर **ध्रुवम्**=अवश्य ही **मुह्यति**=उपकारी को भूल जाता है ।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

(सान्वयार्थः)

वरद ! = हे समस्त भोगों को बिना माँगे ही अपने भक्तों को देने वाले ! **परिजनविधेय त्रिभुवनः**=त्रिलोकी को दास की तरह अधीन रखने वाले **बाणः**-बाणासुर ने **परमोच्चैः**= सबसे बढ़े चढ़े **सतीम्**=हूए **सुत्राम्णः**=इन्द्र के **ऋद्धिम्**=ऐश्वर्य को **अपि**=भी **यत्**=जो (अपने वैभवसे) **अधः**=नीचा **चक्रे**=कर दिया **तत्**=वह **त्वच्चरणयोः**=आपके चरणोंकी **वरिवसितरि**=नमस्कारादि सेवा करने वाले **तस्मिन्**=उस बाणासुर में **चित्रम्**=कोई आश्चर्य (की बात) **न**=नहीं है । **त्वयि**=(क्योंकि) आपके चरणों में **शिरसः**=मस्तक का **अवनतिः**=झुकना (नमस्कार करना) **कस्यै**=किसको कौनसी **उन्नत्यै**=उन्नति के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए **न**=नहीं **भवति**=होता है ? (अर्थात् सबकी ही सम्पूर्ण उन्नति कर देता है ।)

(भगवान् के सामने अपने को नीचा करने से (प्रणाम करने से) संसार में सबसे ऊँचा हो जाता है यही आश्चर्य है ।)

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न* श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाध्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४॥

(सान्वयार्थः)

त्रिनयन ! = सूर्य चन्द्र और अग्निरूपी आँख वाले ! **अकाण्डब्रह्माण्ड-क्षयचकितदेवासुर-कृपाविधेयस्य**= असमय में ही कालकूट जहर के प्रभाव से ब्रह्माण्ड के महाप्रलय की सम्भावना से आश्चर्यचकित देवता और राक्षसों पर दया के वशीभूत होकर **विषं**=उस कालकूट जहर को **संहृतवतः**= (आपने) पी लिया **तव**=अपके **कण्ठे**=गले में **यः**=(उससे) जो **कल्माषः**=काला दाग **आसीत्**=हो गया **सः**=वह दाग **श्रियम्**= (आपके गले को) सुन्दर न **कुरुते**=नहीं बनाता है **न**=ऐसा नहीं (अर्थात् बनाता ही है) । **अहो**=आश्चर्य है कि **भुवनभयभङ्गव्यसनिनः** =समस्त संसार के भय को नाश करने के स्वभाव वाले का **विकारः**=असौन्दर्य (कालिमा) **अपि**=भी **श्लाध्यः**=प्रशंसनीय हो जाता है ।

(१-अमृतमन्थन के समय जब कालकूट नाम का प्रलयंकर जहर निकला तो सभी डर गए । अन्त में भगवान् विष्णु के नेतृत्व में सभी ने महादेव जी की शरण ली । उन्होंने उसे

---

* किम् पाठभेद है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहज ही पीकर गले में धारण कर लिया । इसी से आप 'नीलकण्ठ' हो गए ।)

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ।। १५।।

(सान्वयार्थः)

ईश ! : हे ब्रह्माण्ड का शासन करने वाले ! **यस्य**=जिस **नित्यं**=हमेश **जविनः**= जतिने वाले (कामदेव के) **विशिखाः**=बाण सदेवासुरनरे=देवता, राक्षस, मनुष्य युक्त **जगति**=संसार में **क्वचिद्**=कभी किसी पर अपि=भी **असिद्धार्थाः**=अपने कार्य किए बिना निवर्तन्ते=वापस लौटते **एव**=ही **न**=नहीं , **सः**= (ऐसा प्रतापी) वह स्मरः कामदेव **त्वां**=आप को **इतरसुरसाधारणम्**=अन्य देवताओं के समान **पश्यन्**=समझने के कारण **स्मर्तव्यात्मा**-(उसका शरीर) केवल स्मरण का विषय **अभूत**=हो गया (अर्थात् वह मर गया) **हि**- (और यह उचित भी है) क्योंकि **वशिषु**=शरीर इन्द्रिय, मन को वश में करने वालों का **परिभवः** =अपमान **पथ्यः**=लाभदायक **न**=नहीं होता ।

(१-कामदेव सभी को पीड़ित करने में समर्थ है, अतः उसको बड़ा घमण्ड था । जब तारकासुर किसी से भी नहीं मरा तो देवताओं ने सोचा कि महादेव जी के पुत्र द्वारा ही इसका वध हो सकता है । लेकिन भगवान् शंकर उस समय समाधिस्थ थे, अतः देवताओ ने कामदेव को उन्हें जगाने भेजा । अपनी सारी शक्तियों के साथ उसने महादेव जी पर आक्रमण किया । समाधि में विक्षेप हुआ । भगवान् शंकर के नेत्र खुल गए । चारों तरफ नजर डालने कर पता लगा कि यह कामदेव की उद्दण्डता थी । कामदेव गर्व में भूल गया था कि उन महादेव की कृपा से ही वह जगद्विजयी बना था । तीसरा नेत्र खुला और क्षण भर में उस जगद्विजयी की जगह पर केवल भस्म की ढेरी उस कामदेव की यादगार रह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गयी ।)

महीं पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहूर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

(सान्वयार्थः)

(नटराज!) = (हे नटराज शंकर!) **त्वं** = (जब) आप **जगद्रक्षायै**=संसार की रक्षा के लिए (कालबल नामक राक्षस को मोहित करने लिए) **नटसि**=ताण्डव नृत्य करते हैं (तब) **मही**=पृथिवी **पादाघाताद्** = ताल देने के लिए की हुई पैर की चोट से **सहसा**=अकस्मात् **संशयपदं**=अपने बचने के बारे में शंका को (अर्थात् मैं बचूँगी या नष्ट हो जाऊँगी) **व्रजति** = प्राप्त हो जाती हैं । **विष्णोः** =(तथा) भगवान् विष्णु का **पदम्**-लोक (बैकुण्ठ) और सौर ग्रह भी **भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्**=अत्यन्त मजबूत और लम्बी शूलसदृश भुजाओं के घुमाने से घबरा जाते हैं । **द्यौः**=आकाश **अनिभृतजटा-ताडिततटा**=खुली हुई जटा का भाग एक देश में लग जाने के कारण **मुहुः**=बार बार **दौस्थ्यम्**=अस्थिर **याति**=हो रहा है । **ननु**=अहो **विभुता**=ऐश्वर्य **वामा**=विपरीत **एव**=ही फल देता है । (अर्थात् रक्षा के कार्य में भी लोगों को कुछ कष्ट हो ही जाता है । जैसे किसी राजा के द्वारा प्रजा को बचाने के लिए युद्ध करने पर भी प्रजा को कुछ कष्ट हो ही जाता है ।)

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

(सान्वयार्थः)

वियदव्यापि=आकाश भर में व्याप्त **तारागणगुणित-फेनोद्‌गमरुचिः**=ताराओं के प्रतिबिम्ब से फेन (बुदबुदों की शोभा बढ़ गयी है जिस **वारां**=जल के **प्रवाहः**=प्रवाह की, **यः**=(वह गंगा) आपके **शिरसि**=शिर में **पृषतलघुदृष्टः**-बिन्दु से भी छोटी प्रतीत होती थी। **तेन**-उसी गंगाजल ने **जगत्**-संसार को **जलधिवलयम्**-जलसमुद्र से घेरकर **द्वीपाकारम्**=द्वीप के आकार का **कृतम्**=बना दिया **अनेन**=इससे **एव**-ही **तव**=आपके **दिव्यम**=सर्व देवताओं के शासक **वपुः**= शरीर ने **धृतमहिम**=(कैसी) विशाल महिमा को धारण किया है **इति**=इसका **उन्नेयम्**=पता लगाया जा सकता है ।

(१-गंगावतरण के समय भगवान् शंकर ने गंगा को अपनी जटा में रख लिया था और वहाँ वह बिन्दु के समान दीखती थी । अगस्त्य ऋषि के पी लेने के कारण खाली हुए समुद्र को उसी गंगा ने फिर से भर दिया ।

२- यह एक ही प्रमाण आपकी महानता के लिए पर्याप्त है ।)

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥

(सान्वयार्थः)

क्षोणी=पृथ्वी को **रथः**=रथ, **शतधृतिः**-ब्रह्मा को **यन्ता**=सारथी, **अगेन्द्र**=सुमेरु पर्वत को **धनुः**=धनुष, **चन्द्रार्कौ**=सूर्य और चन्द्रमा को **रथाङ्गे**=रथ के पहिये, **अथो**=और **रथचरणपाणिः**=चक्रपाणि भगवान विष्णु को **शरः**=बाण **इति**=इस प्रकार

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्रिपुरतृणं=त्रिपुरासुर रूपी तिनके को **दिधक्षोः**-जलाने की इच्छा वाले **ते**=आपकी **अयम्**=यह **कः**=क्या **आडम्बरविधिः**=अद्‌भुत आडम्बरपूर्ण तैयारी थी। **खलु**=ठीक है, **विधेयैः**=स्वतन्त्रता से **क्रीडन्त्यः**=खेलते हुए **प्रभुधियः**= सर्वेश्वर की संकल्परूपी बुद्धि **परतन्त्राः**=किसी अन्य के उचितानुचित विचार की अपेक्षा **न**=नहीं रखती।

(लौकिक पुरुष अनायास होने वाले कार्य के लिए बड़ी तैयारी नहीं करते। महादेव जी कटाक्ष से भी त्रिपुरासुर को नष्ट करने में समर्थ होने कर भी इतनी बड़ी तैयारी केवल खेल के लिए करते हैं। यही उनका ऐश्वर्य है।)

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन् नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर! जागर्ति जगताम्॥ १९॥

(सान्वयार्थः)

त्रिपुरहर=हे त्रिपुरासुरनाशक! **हरिः**=भगवान् विष्णु ने **ते**=आपके **पदयोः**=चरणों में **साहस्रम्**=एक हजार **कमलबलिम्**= कमलों की भेट **आधाय**=चढ़ाने का संकल्प करके **तस्मिन्**=उन (कमलों) में से **एकोने**=एक कम हो जाने पर **यत्**=जो **निजम्**=अपने **नेत्रकमलम्**=आँख रूपी कमल को **उदहरन्**=उखाड़ा, **असौ**=वही **भक्त्युद्रेकः**=भक्ति का आधिक्य **चक्रवपुषा**=सुदर्शनचक्र रूप में **परिणतिं**=बदल **गत**=गया, **त्रयाणाम्**=(और भगवान् विष्णु अब उसी सुदर्शन से) तीनों **जगताम्**=लोकों की **रक्षायै**=रक्षा करने में **जागर्ति**=सावधान रहते हैं।

(१-भगवान् विष्णु प्रतिदिन १००० कमलों से शिवजी की पूजा करते हैं। एक बार उनकी भक्ति की परीक्षा करने के लिए शिवजी ने कमल को गुप्त कर दिया। पूजा करने बैठने के बाद बिना पूर्ण किए उठने से नियम भङ्ग हो जाएगा अतः भगवान् विष्णु ने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोचा कि अपना नेत्रकमल ही क्यों न चढ़ा दें । उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर शंकर ने उन्हें सुदर्शन चक्र दे दिया ।

२-भक्ति तो अकेले भगवान् विष्णु ने की और सारे जगत् की रक्षा हो गई, यही महादेव की भक्ति का अचिन्त्य माहात्म्य है ।)

क्रतौ सुप्ते: जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकर: कर्मसु जन: ॥ २० ॥

(सान्वयार्थ:)

प्रध्वस्तम्=समाप्त होते ही नष्ट हुआ **कर्म**=कर्म **पुरुषाराधनम्**- चेतन तत्त्व की उपासना के **ऋते**=बिना **क्व**=कहाँ और कब **फलति**=फल देता है ? **क्रतौ**=(फिर भी) यज्ञ, जप, पूजादि के **सुप्ते**=नष्ट हो जाने पर **क्रतुमताम्**=यज्ञादि कर्म करने वालों को **फलयोगे**-फल देने में **त्वम्**=आप **जाग्रत्**=सावधान **असि**=हैं, **अत:**=इसलिए **त्वाम्**=आपको **क्रतुषु**=वैदिक और स्मार्त कर्मों के **फलदानप्रतिभुवम्**=फल देने में संलग्न **सम्प्रेक्ष्य**=जानकर **जन:**=अधिकारी लोग **श्रुतौ**= वेद में **श्रद्धां**=अत्यन्त विश्वास **बद्ध्वा**=रखकर **कर्मसु**=वैदिक कर्म में **दृढपरिकर:**=उद्यम करते हैं ।

(१-प्रत्येक कार्य समाप्त होते ही नष्ट हो जाता है । परन्तु राजा आदि के सेवा रूप कार्य के समाप्त होने के बाद भी राजा उसका भविष्य में फल देता है । इसी प्रकार पूजा, जप आदि कार्य तो नष्ट हो जाते हैं, परन्तु भविष्य में उनके फल देने वाले चेतन तत्त्व भगवान् सदाशिव मौजूद हैं । इससे जो सांख्यादिक ईश्वर को नहीं मानते उनका पराभव हो गया क्योंकि जड़ वस्तु देशकाल के व्यवधान से फल देने में असमर्थ है ।)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः * क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय मखाः ॥ २१ ॥

(सान्वयार्थः)

शरणद ! = हे भूतप्रेतादि को भी शरण देने वाले ! **क्रतु-फल- विधानव्यसनिनः**=यज्ञ का स्वर्गादि फल देने वाले **त्वत्तः**-आप से, **क्रियादक्षः**=(जिस यज्ञ में) यज्ञादि क्रिया में प्रवीण **तनुभृताम्**=सभी प्राणियों के **अधीशः**=स्वामी **दक्षः**=दक्ष प्रजापति स्वयं **क्रतुपतिः**=यजमान (थे), **ऋषीणाम्**=त्रिकालदर्शी भृगु आदि महर्षियों का **आर्त्विज्यम्**=पुरोहितत्व (था) **सुरगणाः**=(और) ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता **सदस्याः**=दर्शक (थे), **क्रतुभ्रन्शः**= ऐसे यज्ञ का नाश हुआ, **हि**=क्योंकि **श्रद्धाविधुरम्**=श्रद्धाभक्ति के बिना किए हुए **मखाः**=यज्ञ, पूजा जप आदि **कर्तुः**=करने वाले का **अभिचाराय**=नाश **ध्रुवम्**=अवश्य ही करते हैं ।

(दक्ष प्रजापति का यज्ञ सब विधियों से पूर्ण होने पर भी एक शिवभक्ति से रहित होने के कारण नष्ट हुआ तो साधारण मनुष्यों के कार्य यदि भगवद्भक्ति से रहित होने पर फल न दें तो क्या आश्चर्य है । शिवभक्ति से ही सारे कार्य पूर्णता को प्राप्त होते हैं ।)

प्रजानाथं नाथ ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सान्वयार्थः)

नाथ ! = हे दुष्टों का दमन करने वाले ! **रोहिद्भूताम्**-लज्जा से हरिणी बनी हुई **स्वाम्**=अपनी ही **दुहितरम्**=पुत्री से (सन्ध्या से) **प्रसभम्**=जबर्दस्ती **ऋष्यस्य**=मृग के **वपुषा**=शरीर द्वारा **रिरमयिषुम्**=रमण करने की इच्छा से **गतम्**=गये हुए, **अभिकम्**=काम से मर्यादा का उल्लंघन करने वाले **प्रजानाथम्**=धर्मप्रवर्तक ब्रह्मा को **दिवम्**=आकाश में **यातम्**=चले जाने पर **अपि**=भी **ते**=आपके **धनुष्पाणेः**=हाथ के धनुष से छूटा हुआ **मृगव्याधरभसः**=हरिणों को मारने वाले व्याध के समान उत्साही बाण **सपत्राकृतम्**=पर समेत तीर घुसे की पीड़ा से **त्रसन्तम्**=पीड़ित **अमुम्**=उसको (ब्रह्मा को) **अद्य**=आज **अपि**=भी **न**=नहीं **त्यजति**=छोड़ता है ।

(१-ब्रह्मा आकाश में जाकर मृगशिरा नक्षत्र बन गया । तो भगवान् शंकर का अमोघ बाण भी आर्द्रा नक्षत्र बन गया । मृगशिरा के पीछे आर्द्रा नक्षत्र चलता है । इसी पर यह रूपक है ।)

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन ! पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत ! देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद ! मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

(सान्वयार्थः)

पुरमथन=हे प्रलय काल में समस्त संसार का नाश करने वाले ! **स्वलावण्याशंसाधतृधनुषम्**=अपने सौन्दर्य पर विश्वास रखकर भगवान् शंकर पर धनुष तानने वाले **पुष्पायुधम्**=कामदेव को **पुरः**=अपने सामने ही **तृणवत्**=तिनके की तरह **अन्हाय**=शीघ्र **प्लुष्टं**=जला हुआ **दृष्ट्वा**=देखकर **अपि**=भी **यदि**=अगर **देवी**=पार्वती **त्वाम्**=आपको **देहार्धघटनात्**=अर्धनारीश्वर रूप धारण करने के कारण **स्त्रैणम्**=नारी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के अधीन **अवैति**=समझे (तो) **यमनिरत** ! = हे यमादि योगपरायण ! **वरद** ! = पार्वती को अति दुर्लभ वामाङ्ग देने वाले ! **अद्धा**=ठीक ही है **बत**=(क्योंकि) अहो **युवतयः**=नवजवान रमणियाँ **मुग्धाः**=(स्वभाव से ही) समझहीन अज्ञानी हुआ करती हैं ।

(१-भगवान् शंकर ने "पार्वती ने मेरे लिए बड़ा तप किया है और दुःख उठाया है इसलिए उसे विरह दुःख से उबार लूँ" इस इच्छा से उनको अपने दुर्लभ वामाङ्ग में धारण कर लिया । यही अर्धनारीश्वर रूप हैं । २-इस सम्बोधन से भगवान् का सर्वदा जितेन्द्रियत्व बताया । इसलिए वे नारी के अधीन कभी नहीं हो सकते ।)

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर ! पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद ! परमं मंगलमसि ॥ २४ ॥

(सान्वयार्थः)

स्मरहर=हे कामनाओं के नाशक ! **श्मशानेषु**=श्मशान में **आक्रीडा**=आनन्द से खेलना, **पिशाचाः**=भूत-प्रेतों की **सहचराः**=दोस्ती, **चिताभस्मालेपः**=शरीर में मुरदे की राख का अङ्गराग, **नृकरोटी**=मनुष्यों के खोपड़ियों की **स्रक्**=माला, **अपि**=और भी (गजचर्मादि) **परिकरः**= आपकी सम्पत्ति **एवम्**=तथा इस प्रकार का **तव**=आपका **अखिलम्** =सम्पूर्ण **शीलम्**=रहने का ढंग (चरित) **अमङ्गल्यम्**=अमाङ्गलिक **भवतु** **नाम**=भले ही प्रतीत हो, **तथा**=फिर **अपि**=भी **वरद**! = हे सारी कामनाओं को पूर्ण करने वाले ! **स्मर्तॄणाम्** = (आपका) स्मरण करने वालों को तो आप **परमम्**=निरतिशय **मङ्गलम्**=मंगलरूप (मोक्षप्रद) **असि**-हैं ।

(इससे "मंगल कामना वालों को शिवस्मरण नहीं करना चाहिए" ऐसा कहने वालों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का पराभव हो गया ।)

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याल्हादं हृद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २५॥

(सान्वयार्थः)

यमिनः=शमादिसाधनसम्पत्र परमहंस संन्यासी **चित्ते**=हृदय के दहराकाश में **प्रत्यक्**=(बहिर्विषयों से हटे हुए) अन्तर्मुख **मनः**=मन को **अवधाय**=वृत्तिरहित करके **सविधम्**=श्रुति-स्मृति में बताई हुई रीति से **आत्तमरुतः**=प्राणों का अवरोध करके **प्रहृष्यद्**=प्रसन्नता से **रोमाणः**-रोमाञ्चित(और) **प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः**=आनन्द से जलपूर्ण नेत्रों से युक्त होकर **यत्**=जिस **किम्**=किसी एक अनिर्वचनीय **अपि**=ही **तत्त्वम्**=तत्त्व सच्चिदानन्द का **आलोक्य**=वेदान्त वाक्यों द्वारा अखण्डाकार वृत्ति से साक्षात्कार करके **अमृतमये**=अमृत से भरे **ह्रदे**=तालाब में **निमज्य**=मग्न हुए के **इव**=समान **अन्तः**=अन्दर ही अन्दर (बाह्य सुख से विलक्षण) **आल्हादम्**=निरतिशय सुख को **दधति**-धारण करते हैं **तत्**=वह (निरतिशय सुख) **किल**=श्रुतियों में प्रसिद्ध है कि **भवान्**=आप ही हैं ।

(इस श्लोक में जीव के रूप का निरूपण और स्वरूप-साक्षात्कार की साधना को बताया)

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमितिच ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सान्वयार्थः)

त्वम=आप (ही) **अर्कः**=सूर्य (हैं) **त्वम्**=आप (ही) **सोमः**=चन्द्रमा (हैं) **त्वम्**=आप (ही) **पवनः**=हवा (हैं) **त्वम्**=आप (ही) **हुतवहः**=अग्नि हैं **त्वम्**=आप (ही) **आपः**=जल (हैं) **त्वम्**=आप (ही) **व्योम**= आकाश (हैं) **त्वम्**=आप (ही) **धरणिः**=धरती (हैं) **च**=और **त्वम्**=आप **उ**=ही **आत्मा**=आत्मा **असि**=हैं, **इति**=बस (इतना ही) **एवम्**=(आप का रूप इस प्रकार है) इस प्रकार **परिणताः**=पण्डित लोग **त्वयि**=आपके बारे में **परिच्छिन्नाम्**=संकुचित **गिरम्**=वाणी विभ्रतु-प्रकाशित करते हैं। **वयम्**=हम **तु**=तो **इह**=इस संसार में, **यत्**=जो **त्वम्**=आप **न**=नहीं **भवसि**=हों, **तत्**=उस **तत्त्वम्**=वस्तु को (ही) **न**=नहीं **विद्मः**=जानते हैं।

(१-यहाँ भगवान् को सीमित करने वालों का उपहास करने के लिए उन्हे पण्डित कहा है।
इस श्लोक में ईश्वर के रूप का निरूपण किया गया है।)

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यै र्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥

(सान्वयार्थः)

शरणद = है भयभीतों को भयरहित करने वाले ! **अकाराद्यैः**= अकार, उकार और मकार भेद से **त्रिभिः**=तीन **वर्णैः**=अक्षरों में **व्यस्तम्**=बँटा हुआ ॐ=ओम् **इति**=यह **पद्म**=शब्द, **त्रयीम्**=(ऋक्, यजुः और साम यह तीन) वेद **तिस्रः**=तीन **वृत्तिः**=अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति एवं इसके अभिमानी विश्व, तैजस और प्राज्ञ) त्रिभुवनम्-तीन लोक (भूः भूवः और स्वः एवं इनके अभिमानी विराट्, हिरण्यगर्भ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और अव्याकृत), **त्रीन्**=तीन **सुरान्**=देवता (ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र एवं इनके कार्य सृष्टि, स्थिति और प्रलय), **अथो**=अध्यात्म, अधिदैव, अधिभूत आदि सभी भेदों में (व्यस्तं) **त्वाम्**=(बँटे हुए) आप के रूप को **अभिदधत्**=(शक्तिवृत्ति से वाच्यार्थ का) वर्णन करता हुआ **अपि**=भी **समस्तम्**= (अकार, उकार और मकार के भेद्व से रहित) अखण्ड (ॐ) रूप से अणुभिः**सूक्ष्म**-सूक्ष्मतर-सूक्ष्मतम आदि **ध्वनिभिः**=अर्ध मात्रा की ध्वनियों से **अवरुन्धानम्**= (जहत्-अजहत्-लक्षणावृति से लक्ष्यार्थ का) वर्णन करते हुए **ते**=आपके **तीर्णविकृतिम्** = सारे विकारों से रहित शुद्ध **तुरीयम्**=सारी त्रिपुटियों से परे (**समस्तम्**=अखण्डार्थ) **धाम**=स्वरूप को **गृणाति**-बतलाता है ।

(१-इस श्लोक द्वारा महावाक्यों के वाक्यार्थ को बताया है । वाक्यार्थ ज्ञान से सारे द्वैत को बाधित करके अद्वैत में स्थिति कराके भगवान् शंकर प्राणियों को अभय बना देते हैं क्योंकि श्रुति कहती हैं कि 'द्वितीयाद्वै भयं भवति'' (दूसरे से ही भय होता है) और ''अभयं वै जनक प्राप्तोसि'' (अद्वैत ज्ञान के द्वारा, हे जनक ! तू भयरहित हो गया ।)

२-अकार का अर्थ ऋग्वेद, जाग्रदवस्था, भूर्लोक और ब्रह्मा है । उकार का अर्थ यजुर्वेद, स्वप्नावस्था, भुवर्लोक और विष्णु है । मकार का अर्थ सामवेद, सुषुप्ति, स्वर्लोक और महेश्वर है ।

३-यद्यपि अर्धमात्रा में कोई भेद नहीं है तथापि दीर्घकाल तक प्लुतोच्चारण से भेद प्रतीत होता है । इस श्लोक का विषय अतिगूढ़ है और गुरुकृपा से ही जाना जा सकता है । जिज्ञासु पुरुषों को माण्डूक्योपनिषद, गौडपादाचार्यकृत कारिका, पञ्चीकरणवार्तिक आदि ग्रन्दों को गुरुमुख से पढ़ना चाहिए ।)

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहाँ -
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव ! श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सान्वयार्थः)

देव ! = हे स्वयंप्रकाशरूप ! **भवः**=भव (संसार का स्राष्टा) **शर्वः** शर्व (भक्तसुखदायक), **रुद्र** : = रुद्र (दुष्टों को रुलाने वाला), **पशुपतिः** = पशुपति (संसार का मालिक **अथ**=और **उग्रः**= उग्र (प्रचण्ड ज्ञानाग्नि), **सहमहान्**=महादेव **तथा**=तथा **भीमेशानौ**=भीम (पापियों के लिए भयंकर), **ईशान**=(संसार का शासक) **इति**=इतने **इदम्**=ये **यत्**=जो **अभिधानाष्टकम्** = आठ नाम, **अमुष्मिन्**=इनमें से **प्रत्येकम्**=एक एक नाम का **श्रुतिः**=वेद, **अपि**=स्मृति, पुराण, इतिहासादि **प्रविचरति**=सर्वोत्कृष्टतया बोध कराते हैं । **अस्मै**=ऐसे (स्वप्रकाश रूप से सर्वदा प्रत्यक्ष) **धाम्ने**=सब के शरण, **प्रियाय**=परमप्रिय **भवते**=आप को **प्रणिहितनमस्यः**=वाणी, मन और शरीर से नमस्कार करता **अस्मि**=हूँ ।

(पूर्व मन्त्र में प्रणवरूप से भगवान् की उपासना बताई । इसमें अनधिकारी मन्दाधिकारी के लिए इन मन्त्रों द्वारा उपासना बताई ।)

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव ! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर ! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन ! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिशर्वाय च नमः ॥ २९ ॥

(सान्वयार्थः)

प्रियदव ! = हे निर्जन प्रदेश में विहार के रसिक ! **ते**= आपके **नेदिष्ठाय**=अत्यन्त निकट रहने वाले स्वरूप को **नमः**=नमस्कार है, **च**=और **दविष्ठाय**=अत्यन्त दूर रहने वाले स्वरूप को **नमः**= नमस्कार है । **स्मरहर** ! = हे कामदेव का नाश करने वाले ! **क्षोदिष्ठाय**=(आपके) परम लघुरूप को **नमः**=नमस्कार है, **च**=और **महिष्ठाय**=परम महान रूप को **नमः**=नमस्कार है । **त्रिनयन** ! = हे तीन आँखों वाले !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्षिष्ठाय=(आपके) सबसे अधिक बूढ़े रूप को **नमः**=नमस्कार है **च**=और **यविष्ठाय**=सबसे अधिक बूढ़े रूप को **नमः**=नमस्कार है। **सर्वस्मै**=सर्वरूप (आप) को **नमः**नमस्कार है **च**=और **तदिदमितिशर्वाय** = परोक्ष=अपरोक्ष सब तरह से अनिर्वचनीय आपके रूप को **नमः**=नमस्कार है ।

(इस में भगवान् की अनिर्वचनीयता का वर्णन किया गया है । भगवान् ही संसार में सब रूपों से प्रकाशित हो रहे हैं और भगवान् ही इन सब से परे इन सब के अधिष्ठान रूप से भी प्रकाशित हो रहे है ।)

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमोनमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमोनमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमोनम : ॥ ३० ॥

(सान्वयार्थः)

विश्वोत्पत्तौ - संसार की उत्पत्ति के लिए **बहुलरजसे**=तमोगुण और सत्त्वगुण से अधिक हो गया है रजोगुण जिनका **भवाय**=उन भवमूर्ति ब्रह्मा जी को **नमोनमः**=बार बार नमस्कार है । **तत्संहारे**=संसार के संहार करने के लिए **प्रबलतमसे**=सत्त्व और रजोगुणो से नहीं दब सके ऐसे तमोगुण वाले **हराय**=हरमूर्ति रुद्रजी को **नमोनमः**=बार बार नमस्कार है । **जनसुखकृते**=लोगों के सुख के लिए **सत्त्वोद्रिक्तौ**=रजोगुण और तमोगुण से सत्त्वगुण के बढ़ जाने पर **मृडाय**=मृडरूप विष्णु जी को **नमोनमः**=बार बार नमस्कार है । **निस्त्रैगुण्ये**=तीनों गुणों से अछूत पदे=पद की प्राप्ति के लिए **प्रमहसि**=माया से शून्य शुद्ध चैतन्य रूप **शिवाय**=सदाशिव आपको **नमोनमः**=बार बार नमस्कार है ।

(चतुर्थ श्लोक के ''तिसृषु गुणाभिन्नासु तनुषु'' की व्याख्या यहाँ की गयी । भगवान् शंकर ही गुण और गुणरहित के भेद से ब्रह्मादिक बने हैं।)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।। ३१ ।।

(सान्वयार्थः)

वरद ! = मोक्ष देनेवाले ! **क्व**=कहाँ **च**=तो **इदम्**=यह (मेरा) **कृशपरिणति**=थोड़े से विषयों को जानने वाला **क्लेशवश्यम्**= हमेशा ही रागद्वेषादि हज़ारों दोषों से भरा हुआ **चेतः**=मन **च**=और **क्व**=कहाँ **तव**=आपकी **गुणसीमोल्लघिनी**=अनन्त गुणों वाली असीम **शश्वत्**=(और) हमेशा रहने वाली **ऋद्धिः**=महिमा और ऐश्वर्य **इति**=इससे **चकितम्**=डरे हुए **माम्**=मुझको **अमन्दीकृत्य**=बल से स्तुति कराने में लगाकर **भक्तिः**=आपकी भक्ति ने **ते**=आपके **चरणयोः**=चरणों में **वाक्यपुष्पोपहारम्**=वाक्य रूपी फूल की भेंट **आधात्**=चढ़ायी ।

(१-जैसे फूल अपने प्रेमी भौरों को तो सुगन्ध और मधु दोनों ही देता है, परन्तु रास्ते जाने वालों को सुगन्ध तो दे ही देता है । वैसे ही यह स्तोत्र शिवभक्तों को श्रवणसुख और भोग एवं मोक्ष सभी देता है, परन्तु अभक्तों को भी श्रवणसुख तो देता ही है । इसीलिए फूल से तुलना की गई ।

कुछ प्राचीन साम्प्रदायिक टीकाकारों के अनुसार महिम्नस्तोत्र यहीं सम्पूर्ण हो जाता है । इसके आगे फलबोधक वचन है ।)

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।। ३२ ।।

(सान्वयार्थः)

ईश ! = हे सबको अपने शासन में रखने वाले ! **यदि**=अगर **असितगिरिसमम्**=काले पहाड़ के जितनी **कज्जलम्**=स्याही **सिन्धुपात्रे**=समुद्र रूपी दवात में (घोलकर) **उर्वी**=समस्त पृथिवी रूप **पत्रम्**=कागज **स्यात्**= हो और उसपर, **शारदा**=स्वयं सरस्वती **सुरतरु-वरशाखा**=कल्पवृक्ष रूप **लेखनी**=कलम को **गृहीत्वा**=लेकर **सर्वकालम्**=निरन्तर और काल की समाप्ति तक **लिखति**=लिखती रहे **तत्**=तो अपि भी **तव**=आपके **गुणानाम्**=गुणों का **पारम्**=अन्त **न**=नहीं **याति**=आयेगा ।

(भावार्थ यह है कि इतनी असम्भावित सामग्री इकट्ठी हो भी जावें तो भी महादेव के अनन्त गुणों का पार नहीं पावेंगे ।)

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।। ३३ ।।

(सान्वयार्थः)

सकलगणवरिष्ठः शंकर के सेवकों में सर्वश्रेष्ठ **पुष्पदन्ताभिधानः**= पुष्पदन्त नाम के गन्धर्व ने **असुरसुरमुनीन्द्रैः**= प्रमुख राक्षस, देवता और मुनियों द्वारा **अर्चितस्य**=पूजा किए हुए, **निर्गुणस्य**=सर्वगुणों से रहित, **ईश्वरस्य**=सर्व संसार के परम अधिनायक **इन्दुमौलेः**=भगवान् चन्द्रशेखर की ग्रथित **गुणमहिम्नः**=गुणों से गुम्फित महिमा वाले **एतत्**=इस **रुचिरम्**=मनोरम **स्तोत्रम्**=स्तोत्र को **अलघुवृतैः**=बड़े (शिखरिणी) छन्दों से युक्त **चकार**=बनाया ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमाँश्च ॥ ३४ ॥

(सान्वयार्थः)

यः=जो **पुमान्**=मनुष्य **परमभक्त्या**=परा भक्ति से **शुद्धचितः**=मन को शुद्ध करके **धूर्जटेः**त्रिलोकीनाथ शंकर के **एतत्**=इस **अनवद्यम्**=दोषरहित **स्तोत्रम्**=स्तोत्र को **अहरहः**=दिन प्रति दिन **पठति**=पढ़ता है, **सः**=वह **अत्र**=इस लोक में **प्रचुरतधनायुः**=खूब धन और लम्बी आयु वाला **पुत्रवान्**=पुत्रादि कुटुम्ब वाला **च**=और **कीर्तिमान्**=यशवाला **तथा**=तथा **शिवलोके**=(मरने के बाद) कैलास में **रुद्रतुल्यः**=सायुज्य मुक्ति प्राप्त करने वाला **भवति**=होता है ।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थस्नानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३५ ॥

दीक्षा= व्रत **दानम्** = धन का दान, **तपः** = शारीरिक तप, **तीर्थस्नानम्**=तीर्थ में स्नान, **यागादिकाः**=यज्ञ पूजा वगैरह सभी **क्रियाः**=क्रियाएँ **महिम्नस्तवपाठस्य**=महिम्न स्तोत्र पाठ की **षोडशीम्**=सोलहवीं **कलाम्**=कला के भी (रुपये में एक आना) न **अर्हन्ति**=योग्य नहीं है ।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं शिवमीश्वरवर्णनम् ।
अनौपम्यं मनोहारि पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ॥ ३६ ॥

इदम् = यह (उपस्थित) **अनौपम्यम्**=सभी स्तोत्रों से महान्, **मनोहारि**=मन को हरने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाला, **पुण्यम्**=पवित्र, **ईश्वरवर्णनम्**= ईश्वर की महिमा के वर्णन से युक्त **गन्धर्वभाषितम्**=गन्धर्व द्वारा कहा हुआ, **शिवम्**=कल्याणकारी **स्तोत्रम्**=स्तोत्र **आसमाप्तम्** = पूर्ण रूप से समाप्त हो गया ।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अधोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।। ३७ ।।

महेशात्=भगवान् महेश से **अपरः** =भिन्न **देवः**=कोई देवता **न**=नहीं है । **महिम्नः** महिम्न से बढ़कर **अपरा**=दूसरा **स्तुतिः**स्तोत्र **न**=नही है । **अघोरात्**=अघोर से बड़ा **अपरः**=कोई अन्य **मन्त्रः**=मन्त्र **न**=नहीं है । **गुरोः**=गुरु से **परम्** =श्रेष्ठ **तत्त्वम्**=कोई तत्त्व **न**=नहीं **अस्ति**=है ।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ।। ३८ ।।

(सान्वयार्थः)

सा=उस प्रसिद्ध **कुसुमदशननामा**=पुष्पदन्त नाम वाले **सर्वगन्धर्वराजः**=सब गन्धर्वो के राजा ने, **शशिधरवरमौलेः**=द्वितीया के चन्द्रमा को शिर पर धारण किए हुए **देवदेवस्य**=देवाधिदेव महादेव के **दासः**=दास ने **अस्य**=उन महादेव के **रोषात्**=गुस्से से **एव**=ही **निजमहिम्नः**=अपनी महिमा से **भ्रष्टः**=गिरकर **खलु**=ऐसा सुना जाता है कि **इदम्**=इस **दिव्य-दिव्यम्**=सुन्दर और पवित्र **महिम्नः**=महिमा के **स्तवनम्**=स्तोत्र को **अकार्षीत्**=बनाया ।

(पुष्पदन्त एक राजा के यहाँ प्रतिदिन फूल चुराने आया करते थे । लेकिन उनमें अदृश्य

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होने की शक्ति होने के कारण उन्हें कोई पकड़ नहीं सकता था । अन्त में तंग आकर राजा ने बगीचे के फाटक पर शिवनिर्माल्य फैला दिया । पुष्पदन्त के पैर उस पर पड़े और उस अपराध के कारण उनकी अन्तर्हित होने की शक्ति नष्ट हो गई । ध्यान के द्वारा पता लगने पर उन्होंने महेश की स्तुति इसी "शिवमहिम्नः स्तोत्र" से की जिससे आशुतोष ने इनको क्षमा करके इनकी शक्ति इनको वापस दे दी । ऐसी कथा प्रसिद्ध है । जिसका वर्णन यहाँ है ।)

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यःप्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३९ ॥

(सान्वयार्थः)

यदि=अगर न **अनन्यचेताः**=एकाग्रचित होकर **प्राञ्जलिः**=(और) हाथ जोड़कर **मनुष्यः**=(कोई) मानव **सुरवरमुनिपूज्यम्**=और मननशील संन्यासियों द्वारा प्रशंसित, **स्वर्गमोक्षैकहेतुम्**=स्वर्ग और मोक्ष दोनों का एक ही कारण **पुषादन्तप्रणीतम्**=पुष्पदन्त के बनाये हुये **इदम्**=इस **अमोघम्**=कभी व्यर्थ न जाने वाले **स्तवनम्**=स्तोत्र को **पठति**=पढ़ता है, **किन्नरैः**=(तो वह आदमी) किन्नरों से **स्तूयमानः**=प्रशंसा प्राप्त करता हुआ **शिवसमीपम्**= शिवजी के समीप **व्रजति**=चला जाता है ।

(जब केवल पढ़ने का यह फल है तो अर्थ सहित मनन तो साक्षात् मोक्ष देगा इसमें शंका ही क्या है ।)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेश : ॥ ४० ॥

(सान्वयार्थः)

कण्ठस्थितेन = कण्ठस्थ करके (याद करके) **समाहितेन**=मन को भगवान में एकाग्र भाव से लगाकर **पठितेन**=पढ़ने से **श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन**=श्रद्धेय पुष्पदन्त के मुखरूपी कमल से निकले हुए, **किल्बिषहरेण**=देह, वाणी और मन से किए हुए सारे पापों को नष्ट करने वाले **हरप्रियेण**=संसार के दुःखों को हरने वाले भगवान् शंकर को प्रिय, **स्तोत्रेण**=(इस) स्तोत्र से **भूतपतिः**=जो कुछ है, हुआ है ओर होगा उस सबके मालिक **महेशः**=भगवान् महेश **सुप्रीणितः**=भली भाँति प्रसन्न **भवति**=होते हैं ।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयो : ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४१ ॥

(सान्वयार्थः)

इति=इस प्रकार **एषा**-यह **वाङ्मयी**=(शब्दों द्वारा की हुई) शब्दमयी **पूजा**=पूजा (भेंट) **श्री मच्छङ्करपादयोः**=महान महिमा वाले भगवान् शंकर के चरणों में **अर्पिता**=चढ़ायी। **तेन**=इससे **देवेशः**=समस्त देवताओं के शासक **सदाशिवः**= नित्यमंगलमय भगवान् शंकर **में**=मुझ पर **प्रीयताम्**=प्रसन्न हों ।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर ! ॥ ४२ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सान्वयार्थः)

देव ! = हे सर्वप्रकाशक परमात्मा ! **यत्** = (प्रमाद से) जो **अक्षरम्**=अक्षर **पदम्**=(या) शब्द **भ्रष्टम्**=छूट गया (हो) **च**=और **यत्**=जो **मात्रा-हीनम्**=मात्रा न बोली **भवेत्**=हो **तत्**= वह **सर्वम्**=सब **क्षम्यताम्**=क्षमा करिए । **परमेश्वर** ! = हे शङ्कर ! **प्रसीद**= (मेरे ऊपर) प्रसन्न हों ।

हरिः ॐ

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्चते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्री साम्बसदाशिवार्पणमस्तु

अथ शिवनामावलिः

ओम् महादेव शिवशङ्कर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन् गङ्गाधर मृड मदनारे ॥
हर शिव शङ्कर गौरीशं वन्दे गङ्गाधरमीशम् ॥
रुद्रं पशुपतिमीशानं कलये काशीपुरिनाथम् ॥
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशंकर जय शम्भो ।
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशंकर जय शम्भो ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिव नाम संकीर्तनम्

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा,
हर हरेति हरेति हरेति वा ।
भव भवेति भवेति भवेति वा,
मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा ॥
भज मनः शिवमेव निरन्तरम्,
जप मनः शिवमेव निरन्तरम् ।
रट मनः शिवमेव निरन्तरम्,
स्मर मनः शिवमेव निरन्तरम् ॥

ओम् हर हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे ।
काशी विश्वनाथ गंगे काशी विश्वनाथ गंगे ॥
हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे ।
शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ओम्,
हर हर हर हर हराय नमः ओम् ॥
शिवाय नमः ओम् हराय नमः ओम्,
भज मन निशि दिन शिवाय नमः ओम् ।
रट मन क्षण क्षण हराय नमः ओम् ॥

श्रीशिव - मानस पूजन

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं,
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा,
दीपं देव दयानिधे ! पशुपते ! हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सौवर्णे मणिखण्डरत्नरचिते पात्रे घृत पायसं,
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्वलम्,
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो ! स्वीकुरु ।। २ ।।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं,
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गंप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया,
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो ! पूजां गृहाण प्रभो ।। ३ ।।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।। ४ ।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे ! श्रीमहादेव शम्भो ।। ५ ।।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाम संकीर्तनम्

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम् ।
जानकीवर मधुरमूर्ति राम राघव रक्ष माम् ॥

कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम् ।
राधिकावर मधुरमूर्ति कृष्ण केशव रक्ष माम् ॥

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ।
शैलजावर मधुरमूर्ति चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

शंकरं त्र्यम्बकं मुण्डमालं शिवं, आशुतोषं भवं नीलकण्ठं हरम् ।
शशिधरं शूलिनं शैलजावल्लभम्, पार्वतीनायकं भालचन्द्रं भजे ॥

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ ! नारारण वासुदेव ।
गोविन्द जय २ गोपल जय २, राधा रमण हरि गोविन्द जय २ ॥

राम-कृष्ण-शिव-वन्दनम्

भज गोपालं जय श्रीरामं शिवमीशानं वन्देऽहम् ।
यदुकुलनाथं रघुकुलनाथं अनाथनाथं वन्देऽम् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धृतकरमुरलिं धृतशरचापं त्रिशूलहस्तं वन्देऽहम् ।
राधारमणं सीतारमणं गिरिजारमणं वन्देऽहम् ॥

कंसनिकन्दन रावणमर्दन त्रिपुरविभञ्जन वन्देऽहम् ।
गोपीध्येयं मुनिजनज्ञेयं सकलसुपूज्यं वन्देऽहम् ॥

कुब्जोद्धारं अहल्योद्धारं आर्तोद्धारं वन्देऽहम् ।
हृतजनदोषं कृतजनपोषं शिवाशुतोषं वन्देऽहम् ॥

अर्जुनशरणं हनुमत्शरणं अशरणशरणं वन्देऽहम् ।
दीनदयालुं परमकृपालुं अतिश्रद्धालुं वन्देऽहम् ॥

कृतसुरहास्यं स्मितकमलास्यं अतिप्रियहास्यं वन्देऽहम् ।
जनदुःखनाशं पूरकआशं कलुषीनाशं वन्देऽहम् ॥

पीतसुवस्त्रं कटितूणीरं मृगत्वचचीरं वन्देऽहम् ।
कुंजविहारिन् अवधविहारिन् शिखरविहारिन् वन्देऽहम् ॥

सरसिजनयनं करुणाअयनं जगहृदिभवनं वन्देऽहम् ।
श्री गोपीशं सुहृत्कपीशं जगदखिलेशं वन्देऽहम् ॥

कृष्णमुरारिं रामखरारिं शिवकामारिं वन्देऽहम् ।
कुंचितकेशं केशरितिलकं घृतवनमालं वन्देऽहम् ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अतिशिशुमङ्गं धृतवनमालं कुन्ददलाङ्गं वन्देऽहम् ।
मन्मथपितरं मन्मथदेहं मन्मथशत्रुं वन्देऽहम् ॥

मयूरमुकुटं किरीटमुकुटं जटाहिमुकुटं वन्देऽहम् ।
शिव अघहरणं शिव दुःखहरणं शिव जनभरणं वन्देऽहम् ॥

श्री जगदम्बा कीर्तन व अन्नपूर्णा स्तुति

जय अम्बे जय अम्बे जय अम्बे मा जय अम्बे ।
जय अम्बे जय अम्बे जय अम्बे मा जगदम्बे ॥

अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥

हे सदा पूर्ण रहने वाली अन्नपूर्णे ! श्री शङ्कर की प्राण प्रिये ! मातेश्वरी ! पार्वती ! ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति की सिद्धि के लिए मुझे भिक्षा दें ।

मेरी माता पार्वती तथा पिता महेश्वर हैं । शिव भक्त ही मेरे बन्धु बान्धव तथा तीनों लोक ही मेरा स्वदेश है ।

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्यपाद
श्रीमन्महत्पदाभिधेय श्री नन्हूपुरीति स्वनाम धन्य-
श्रीगुरुचरणप्रसादासादितपारिव्राज्येन श्रीस्वामि
दयानन्द पुरीवेदाचार्येण लिखितं 'स्नानं संध्या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जपो होमः देवतानां च पूजनम् । आतिथ्यं वैश्व-
देवं च षट् कर्माणि दिने दिने, इति दैनन्दिन
कर्मानुष्ठानात्मकोऽयं 'कर्तव्य बोधः'

समाप्तः ।

शिवः सर्वं सर्वत्र ।
शिवोऽहं - महादेव हर !
नर्मदे हर !

स्वामी भक्ति पुरी जी के विचार

यौवन, धन एवं आयुष्य को कमलिनी पर रहे हुए जल बिन्दुओं के समान अत्यन्त चपल, क्षणभंगुर जान कर एक मात्र अच्युत-अविनाशी भगवान् का ही आश्रय लेना चाहिये । वही सच्ची जिह्वा है, जो कल्याण रूप परमात्मा की स्तुति करती है वही अच्छा मन है, जो सदाशिव परमेश्वर का ध्यान करता है, वे ही प्रशस्त कान हैं जो उस आनन्द-निधि-भगवान् की पावन कथा सुनने में लगे रहते हैं, वे ही हाथ धन्य हैं, जो विश्वरूप नारायण की पूजा करने में लगे रहते हैं ।

एक सुन्दर प्रेरक भजन

गुरुदेव तुम्हारे दर पर हम, अब अलख जगाने आये हैं ।
धर ध्यान तुम्हारे चरणों का, निज शीश झुकाने आये हैं ॥
है अलख गति जो भाल लिखि, यह लक्ष्य कराने आये हैं ।
यह जन्म मरण भय शोक भरा, भव बन्ध कटाने आये हैं ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जग के सब जीव दुःखी नित जो, उन्हें शान्ति दिलाने आये हैं ।
भव सिन्धु अगाध पड़े जन जो, उन्हें पार लगाने आये हैं ॥
धन यौवन जन परिवार बड़ा, मद मान छुड़ाने आये हैं ।
ये काम क्रोध मद मत्सर षड् रिपु, लोभ भगाने आये हैं ॥
मन मलिन वचन जन पाप करें, हम उन्हें धुलाने आये हैं ।
गुरु निन्दक वेद विरोधी जो, हरि भक्ति छोड़ भटकाये हैं ॥
उन भूले भटके जीवों को, सन्मार्ग दिखाने आये हैं ।
सत् चित् आनन्द पूर्ण नित जो निज रूप सजाने आये हैं ॥
गुरु ज्ञान एक रस 'भक्ति पुरी' जग सुधा पिलाने आये हैं ।
गुरुदेव तुम्हारे दर पर हम अब अलख जगाने आये हैं ॥

गीता सुधारस पान

श्री मद्भगवद्गीता एक धारावाही शुभ कर्म, सात्विक उपासना एवं निर्मल तत्त्व ज्ञान का अपनी कोटि का अनोखा ग्रन्थ है । इसका एकाग्रता-पूर्वक किया गया अध्ययन मानव के अन्तःस्तल के दोषों का परिहार एवं भक्ति निष्ठा पूर्वक आध्यात्मिक तत्त्व ज्ञान प्राप्त करा कर उसके जीवन को सफल बना सकता है । यहाँ श्रीमद्भगवद्गीता के अठारहों अध्यायों के योगों का एवं तात्विक विशेष अर्थो का सार-सञ्चय प्रासादिक कविता के रूप में किया गया है, जिसका अर्थ चिन्तनपूर्वक गान करके आत्मानन्द प्राप्त कीजिए ।

(राग-गंगा पार उतारो)

भक्तो ! गीता सुधारस पान करो
श्रद्धा भाव समाहित ध्यान धरो... (टेक)
साखी - सेना सजी दोनों खड़ी, देखी जो अर्जुन वीर ने ।
१ व्यामोह से अभिभूत हो, पाया विषाद सुधीर ने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्म मोहित मम प्रतिबोध करो,
हरो हरि ! मूढ मन मोद भरो ॥ १ ॥ भक्तो.

साखी - कृष्ण कहते वीर अर्जुन, शोक को अब छोड़ दे
२ देह नश्वर हैं सभी, आत्मा अमर मन जोड़ दे

सांख्ययोग समाहित बुद्धि करो,
सम - निष्काम युद्ध से पाप हरो ॥ २ ॥ भक्तो.

साखी-कर्मयोग में ज्ञानि ज्ञेय भी, कर्म करते दीखते ।
३ निष्काम कर्म सदा करे, विधि लोकसंग्रह सीखते ।

राग-द्वेष रहित मख कर्म करो,
चित्त शुद्धि सहित स्मर नाश करो ॥ ३ ॥ भक्तो.

साखी - ज्ञान-कर्म-सु-न्यास-योगी, यज्ञ-यति चर्या कहे !
४ सगुण रूप प्रभावयुत शुचि ज्ञान की महिमा लहे
५ कर्म संन्यास में तो अभिन्न करो,
ज्ञान भक्ति सहित शिव ध्यान धरो ॥ ४ ॥ भक्तो.

साखी - आत्स संयम योग, योगारूढ़ के लक्षण कहे ।
६ . अपने हि आत्मोद्धार की शुभ प्रेरणा भी दे रहे
ध्यान संयम चित्त समाधि करो,
योग भ्रष्ट गति का मत खेद करो ॥ ५ ॥ भक्तो.

साखी - ज्ञान अरु विज्ञान में, भगवान् व्यापक नित्य हैं ।
७ श्रद्धा समन्वित भक्ति से, माया तरे यह सत्य है ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८ अक्षर ब्रह्म में शुद्ध संवाद करो,
शुक्ल-कृष्ण गती पहिचान करो ॥ ६ ॥ भक्तो.

साखी-राज विद्या राज गुह्य, प्रभाव ज्ञान स्वरूप का
९ उपासना फल देख लो, सर्वात्मरूप अरूप का
१० योग शक्ति अनन्त विभूति धरो,

विश्वरूप का दर्शन नित्य करो ॥ ७ ॥ भक्तो .

साखी - तू कर्म कर मेरे लिये, मेरे परायण रह सदा ।
११ आसक्ति तज निर्वैर हो, हो भक्त मुझको पा मुदा ।
१२ भक्ति योग समाहित त्याग करो,

फल-साधन-लक्षण चित्त धरो ॥ ८ ॥ भक्तो.

साखी - क्षेत्रज्ञ क्षेत्र विभाग को, प्रिय ज्ञान युत अब जानले
१३ ज्ञान युत प्रकृति-पूरुष को, भी अनादि मानले
१४ तीनों गुण विभाग में विश्व करो,
गुणातीत स्वरूप विहार करो ॥ ९ ॥ भक्तो.

साखी - कर योग पुरुषोत्तम सदा, संसार मूल उखाड़ दे !
१५ अविनाशि ब्रह्मस्वरुप तू, माया का पड़दा फाड़ दे
१६ दैवासुर सम्पति योग मनन करो,
शास्त्र विधि को, तन, मन, वचन धरो ॥ १० ॥ भक्तो.

साखी - श्रद्धात्रये श्रद्धा वसी, विधिहीन तप मत आदरो,

१७ आहार, मख तप, दान, सात्विक "ॐ तत्सत्" उच्चरो ।
१८ मोक्ष संन्यास में फल त्याग करो,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर्म होने में सांख्य विचार करो ॥ ११ ॥ भक्तो

साखी - भेद गुणयुत ज्ञान जानो, कर्म, कर्ता, बुद्धि के !
धृति-गुण-सहित फल-वर्ण धर्म, स्वधर्म पालन सिद्धि के
युद्ध वृत्ति अहंता का त्याग करो,
ज्ञान भक्ति समन्वित कर्म करो ॥ १२ ॥ भक्तो.

साखी - सब धर्म तज मम शरण आ, मैं पाप से कर मुक्त दू ।
मत शोक कर संदेह तज, निर्लेप रह यह युक्ति दू ।

जीवन्मुक्ति विवेक अखण्ड धरो,
''दयानन्द'' आनन्द विहार करो,
धनंजय विषाद को दूर करे,
धर्म मति नारायण ब्रह्म परे ॥ १३ ॥ भक्तो.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित्य प्रार्थना

ॐ विश्वानि देव ! सवितर्दुरितानि परासुव
सद्भद्रन्तन्न आसुव ॥
(यजुर्वेद ३०/३)

हे सबकी रक्षा करने वाले परापर परब्रह्म परमात्मन् ! हे स्वयं प्रकाश स्वरूप ! सब प्रकार के सुखों को देने वाले देव ! हे विश्व की उत्पत्ति, स्थिति एवं लय के करने वाले सर्वज्ञ सर्व शक्ति-सम्पन्न परमानन्द स्वरूप, शिव ! महाविष्णो ! आप कृपा करके मेरे सभी दुःख, दुर्गुण, पाप, ताप, संताप, शोक, मोह आदि दोषों को मुझ से दूर कर दीजिये । हे अन्तर्यामिन् ! मेरे कायिक, वाचिक, मानसिक सांसर्गिक एवं कर्मज पाप-तापों को शान्त करके मुझे पावन कीजिये । हे प्रभो ! कल्याणकारी जो शुभ कर्म-धर्म, सत्संग, स्वाध्याय, ध्यान, भक्ति, भजन एवं ज्ञान-विज्ञान आदि हैं वे मुझे प्रदान कीजिये । हे प्रभो ! मुझे पवित्र करके अपना लीजिये, कृतार्थ कीजिये ।

ॐ शान्तिः । शान्तिः ॥ शान्तिः ॥

-स्वामी दयानन्द वेदपाठी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"ॐ नमः शिवाय"

लिंगाष्टकम्

ब्रह्म-मुरारि- सुरार्चित-लिंगं, निर्मलभासित-शोभित-लिंगम् ।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं,तत्प्रणमामि सदाशिव - लिंगम् ॥ १॥

देव-मुनि - प्रवरार्चित लिंगं, कामदहं करुणाकर - लिंगम् ।
रावणदर्प - विनाशन - लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥२॥

सर्व - सुगन्धि - विलेपित - लिंगं, बुद्धि - विवर्धन - कारण-लिंगम् ।
सिद्ध-सुरासर-बंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ३ ॥

कनक-महामणि-भूषित-लिंग, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम् ।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ४ ॥

कुकंम-चन्दन लेपित-लिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम् ।
सञ्चितपाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ५ ॥

देवगणार्चित-सेवित-लिंगं, भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ।
दिनकरकोटि-प्रभाकर-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ६ ॥

अष्टदलोपरि वेष्टित - लिंगं, सर्वसमुद्भव - कारण-लिंगम् ।
अष्टदरिद्र-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ ७ ॥

सुरगुरू-सुरवर-पूजित-लिंगं, सुरवन-पुष्प-सदार्चित-लिंगम् ।
परात्परं परमात्मक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ ८ ॥

लिंगाष्टंकमिदं पुण्यं, यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

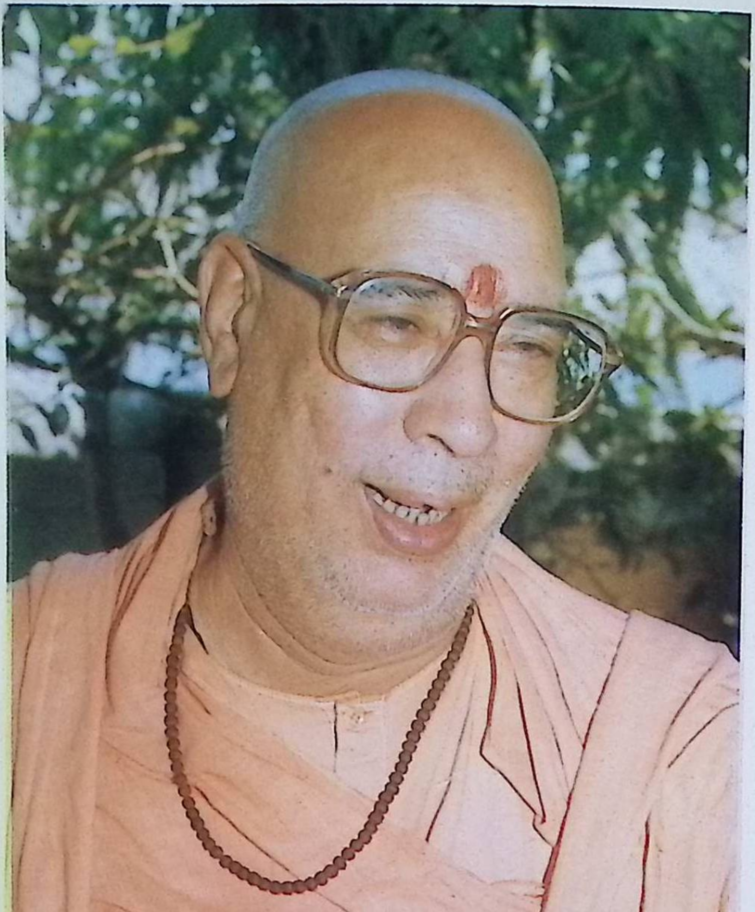

महा मंडलेश्वर स्वामी श्री दयानन्द वेदपाठी

वेदाश्रम
चांदोद, ता. डभोई
जि. वडोदरा (गुजरात)

विश्व भारती वेदाश्रम,
मानस मन्दिर,
नई दिल्ली.

Funding by IKS-MoE